मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 10 | अप्रैल, 2014 | मूल्य : ₹10

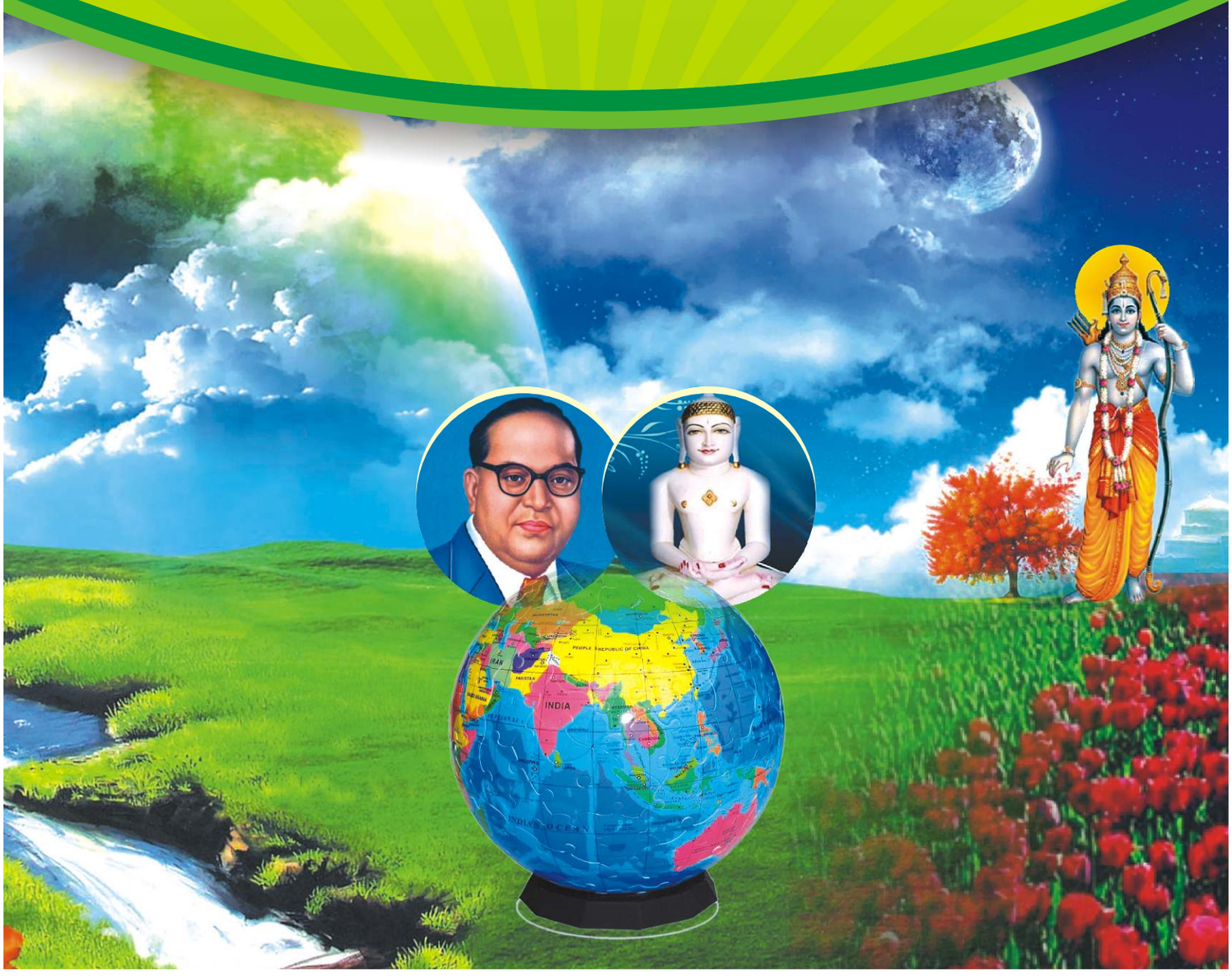

शिविरा, अप्रैल–2014

चित्र समाचार

बूंदी

माननीय शिक्षामंत्री श्री कालीचरण सराफ एवं माननीय विधायक श्री सुरेन्द्र पारीक से पं. श्रीराम शर्मा आचार्य राज्यस्तरीय उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान प्राप्त करते हुए रा.उ.मा.वि., डाबी के प्रधानाचार्य श्री ओमप्रकाश मुद्गल।

बाँसवाड़ा

राज्यस्तरीय विशेष योग्यजन सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. अरुण चतुर्वेदी माननीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री रा.उ.मा.वि., तलवाड़ा के वरिष्ठ लिपिक श्री जितेन्द्र उपाध्याय का अभिनन्दन करते हुए।

बांसवाड़ा

छात्राओं की प्रस्तुति से अभिभूत अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मुख्यालय जयपुर श्री कपिल गर्ग आत्मबल से लबरेज छात्राओ से संवाद के दौरान उनके अनुभव साझा करते हुए।

बांसवाड़ा

बालिका आत्म रक्षा कौशल प्रशिक्षण में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मुख्यालय जयपुर श्री कपिल गर्ग के समक्ष मार्शल आर्ट का डेमो देती प्रशिक्षित छात्राएं।

भीलवाड़ा

चूरिया–मूरिया शिक्षा, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य सेवा संस्थान द्वारा भीलवाड़ा में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च, 2014) पर सम्मानित महिला समूह।

बूँदी

58वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में रा.उ.मा.वि., खटकड़ (बूँदी) को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। रजत पदक के साथ खिलाड़ी एवं शाला परिवार।

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 10 | चैत्र–वैशाख २०७१ | अप्रैल, 2014

प्रधान सम्पादक
विकास एस. भाले

❄

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

❄

सहायक
सुनीता चावला
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- समझें मत का महत्व 5

आलेख
- संवत्सर के स्वागत में 6
  डॉ. गिरीश दत्त शर्मा
- 'मन–विजय' का मंत्र है–प्रार्थना 8
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- प्रार्थना : एक विनम्र पुरुषार्थ 9
  मधुबाला शर्मा
- अपने भीतर में बैठे राम को जगाएं 11
  पवन कुमार ओझा
- क्षमा आपको आनन्द से भर देगी 13
  अशोक जैन
- शुभ व सुकून भरी हो माँ धरती 15
  सुनीता चावला
- महानायक डॉ. भीमराव अम्बेडकर 16
  नारायण लाल टाक
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने की प्रेरणा 17
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- संस्था प्रधानों हेतु लीडरशिप प्रशिक्षण 19
  शमीम परिहार
- साहित्य की खेल विधा है–अन्त्याक्षरी 21
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- लोकतंत्र की करने हिफाजत, दिखाए तर्जनी अपनी ताकत 31
  प्रकाश पंड्या
- नकल की बढ़ती प्रवृत्ति, आखिर क्यों? 32
  रूपनारायण काबरा
- विद्यालयों में प्रभावी मूल्य शिक्षा 33
  डॉ. कल्पना शर्मा
- बचपन बचाएं 35
  विश्वजीत गौड़
- बालकों का छिनता बचपन 36
  जगदीश सेन 'धूँधला'
- सच्चा मित्र होती हैं पुस्तकें 44
  प्रहलाद शर्मा

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- साहित्य, कला, उद्योग और अध्यात्म का संगम है राजसमंद 40
  दिनेश श्रीमाली

स्तम्भ
- आदेश–परिपत्र 23
- शिविरा पंचांग 29
- शाला प्रांगण से 29
- रपट : डॉ. रूपा पारीक 30
- चतुर्दिक समाचार 48
- हमारे भामाशाह 49

इस माह का गीत
- नये जगत की नयी कल्पना 20

श्रद्धांजलि
- शिक्षा, साहित्य और सेवा के प्रतिरूप भगवती प्रसाद देवपुरा 37
  डॉ. दाऊदयाल गुप्ता

संस्मरण
- अध्यापक ने डण्डे खाए 43
  अक्षय सिंह

पुस्तक समीक्षा 46–47
- रामचरित मानस अनुशीलन : बाल कृष्ण राव
  समीक्षक : ओमप्रकाश सारस्वत
- शहीद की माँ से पूछना : बद्री लाल 'दिव्य'
  समीक्षक : पृथ्वीराज रतनू
- अपने दीपक स्वयं बनो : करुणा श्री
  समीक्षक : मदनलाल पुरोहित

विविध
- जीवन में ईमानदारी का महत्त्व 7
- प्रेरणा गीत 10
- कर्म ही पूजा 12
- 'शिविरा' शिक्षा दर्पण 22
- शुभ और सभ्यता 29
- कार्टून 31
- समस्या बड़ी या सोच 39
- डॉ. अम्बेडकर का संकल्प बल : **उषा टेलर** 42

प्रतिध्वनि
- ज्ञान का माहात्म्य 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

▼ ***परिचय***

श्री रवि जैन

भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2004 बैच के अधिकारी श्री रवि जैन ने दिनांक 5 मार्च 2014 को निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म 2 जुलाई 1974 को बीकानेर में हुआ। आपने सिविल इंजीनियरिंग में डिग्री तथा मार्केटिंग में एम.बी.ए. जोधपुर विश्वविद्यालय से किया। आप उपखण्ड अधिकारी, निम्बाहेड़ा, उपशासन सचिव (कार्मिक) आयुक्त, जोधपुर विकास प्राधिकरण तथा बाड़मेर व चित्तौड़गढ़ में जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट रहे हैं। शिक्षा को प्रगति का द्वार मानने वाले श्री जैन शिक्षा में गुणवत्ता के पक्षधर हैं। आप बालक-बालिकाओं में सहशैक्षिक गतिविधियों तथा खेलकूद प्रवृत्ति को सर्वांगीण विकास का आधार मानते हैं।

- शिविरा का मार्च 2014 अंक प्राप्त हुआ। यह अंक अपनी परम्परा के अनुसार मनमोहक एवं संदेश लिए है। केन्द्रीय पृष्ठ 'दिशाकल्प' में 'व्यक्तित्व का आभूषण होती है शिक्षा' में व्यक्त विचार विभागाध्यक्ष के अध्ययन की गहराई एवं शिक्षकों के प्रति आदर भाव को व्यक्त करते हैं। शिक्षकों को शिक्षा के स्तम्भ बताकर उन्होंने अपनी गरिमा को ही बढ़ाया है। राजस्थान के शिक्षक उनकी इस अपेक्षा में सदैव खरे उतरेंगे। पत्रिका में महिला दिवस, राजस्थान दिवस, परीक्षा, शिक्षा दर्शन, नैतिक शिक्षा, बाल मनोविज्ञान आधारित सभी आलेख उपयोगी हैं। शिविरा की नियमितता, गुणवत्ता, सामग्री संयोजन सब सराहनीय है। शिविरा राष्ट्रीय पत्रिका के रूप में अपनी छाप छोड़े, ऐसी प्रार्थना है।

–पवन कुमार ओझा, व.अ., रा.उ.मा.वि., करमीसर

- मार्च 2014 अंक पढ़ने से सुखानुभूति हुई। 'दिशाकल्प' में निदेशक श्री विकास एस. भाले ने 'व्यक्तित्व का आभूषण होती है शिक्षा' में शिक्षक एवं विद्यार्थियों के साथ अभिभावकों की भूमिका को सार्थक व उपयोगी बताया, सत्य है। आलेख 'मुझे खुश रखोगे तो खुश रहोगे', 'जीवन को समरस बनाए शिक्षा', 'व्यक्तित्व व क्षमताओं की धनी भारतीय महिलाएं', 'बच्चों में प्यार एवं सुधार का दृष्टिकोण', 'धरती धोरा री' के रचयिता की जीवनाधारित सृजन यात्रा आदि आलेख मन को छूने वाले थे। सबसे आकर्षण तो शिविरा का मुखावरण था जो आँखों को शीतलता व जीवन को रंगीन बनाने की शिक्षा देता लगता था।

–मोहम्मद फारुक चौहान, बीकानेर

- शिविरा हर महीने नए रूप में नई व उपयोगी सामग्री लेकर समय पर पहुंच रही है। हमारे नये निदेशक माननीय श्री विकास एस. भाले का परिचय एवं दिशाकल्प पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। उन्होंने स्वयं की उपलब्धि का आधार गुरुजन की कृपा मानकर शिक्षक वर्ग का मान बढ़ाया है। शिविरा के इस अंक में विज्ञान व वैज्ञानिक चमत्कारों के बारे में दी गई जानकारी बहुत सराहनीय है। प्रतिध्वनि में विज्ञान का गौरव गान कर वरिष्ठ संपादक जी ने विज्ञान अध्ययन व शिक्षण को प्रोत्साहन दिया है।

–मनीष गहलोत, प्र.अ., बीठनोक, कोलायत

- शिविरा पत्रिका मार्च 2014 के दिशाकल्प-मेरा पृष्ठ में श्रीमान् निदेशक द्वारा शिक्षकों के पदगत उत्तरदायित्व व शिक्षक धर्म को प्रदर्शित करता व शुभकामनाओं से भरा सन्देश आत्मीय लगा। डॉ. रामनिवास का ''भाषा शिक्षण की दूसरी परम्परा'' एक स्तरीय विचारों से ओतप्रोत शैक्षिक लेख था। छात्रों में सृजन के बीज को अंकुरित करने की विधा पर डॉ. बायती का सृजन लेख शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक व छात्रों के लिए प्रेरणादायी व सृजन क्षमता के विकास में सहायक है। जितेन्द्र सनाढ्य का नैतिक शिक्षा पर व कैप्टन सत्यनारायण पंवार का राष्ट्रीय शिक्षा के बारे में अनुसंधानीय व चिन्तनीय लेख था। शिविरा के इस अंक का कोहिनूर आलेख रामचन्द्र स्वामी का ''महिला शिक्षा की आवश्यकता'' पर लिखा उच्च स्तरीय भाषा शैली से ओतप्रोत विचारोत्तेजक आलेख था। मदनलाल पुरोहित का ''कैसे करें समय प्रबन्ध'' भी प्रेरणादायी व जीवन में उतारने लायक विचारों से भरा लेख था। दिन प्रतिदिन शिविरा पत्रिका के कलेवर में बढ़ते स्तरीय आलेख पत्रिका को साहित्यिक उँचाइयों को छूती, प्रबुद्ध पाठकों की प्रिय बनती शिविरा पत्रिका, कुशल व पैनी दृष्टि के प्रबुद्ध सम्पादक मण्डल की कार्यकुशलता व उनकी साहित्यिक क्षमताओं का आइना प्रतीत हो रही है।

सुझाव :– 1. शिविरा में शिक्षकों की शैक्षिक समस्याओं के लिए एक प्रश्न मंच कॉलम आरम्भ करें। 2. शिविरा के प्रत्येक पृष्ठ के नीचे एक पंक्ति में चयनित सदवाक्य का अंकन किया जाय। 3. प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बधित समस्त अधिकारियों की सम्भागवार ई-मेल आई.डी. का प्रकाशन किया जाय। 4. शिविरा के पुराने अंक इन्टरनेट पर सुरक्षित रखे जाने चाहिये। 5. सम्भव हो सके तो प्रत्येक 1 तारीख को पत्रिका प्रेषित एवं ऑनलाइन की जानी चाहिये।

–सरदार सिंह सॉन्दू व्याख्याता, डाइट, जालोर,

- दिशाकल्प में निदेशक महोदय ने 'गुणवत्ता की ओर कदम बढ़ाने' का आह्वान कर प्रत्येक विद्यार्थी को देश का सुयोग्य नागरिक बनाने की अमूल्य प्रेरणा प्रदान की है। वास्तव में शिक्षा ही वह माध्यम है जो विद्यार्थियों को सुखी एवं सम्पन्न जीवन जीने के लिए तैयार करती है, साथ ही उसमें सीखने की तत्परता जाग्रत कर उन्हें खुद सीखने को प्रेरित करती है। शिक्षक द्वारा बच्चों में सीखने की लगन पैदा करना न सिर्फ स्वयं के बल्कि राष्ट्र के विकास की ओर बढ़ते कदम का प्रतीक है।

–परमिनास मैथ्यू
अध्यापक, रा.मा.वि., दादिया (उदयपुर)

सत्यमेव जयते

विकास एस. भाले
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

समझें मत का महत्व

वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2013-14 समाप्ति पर है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। स्थानीय गृह परीक्षाएँ भी शीघ्र होनी है। बच्चे जिस उत्साह, आशा एवं अपेक्षा को लिए सत्रारम्भ में विद्यालयों में प्रविष्ट हुए थे, उन्हें किस सीमा तक वे प्राप्त कर पाए, यह उनके परीक्षा परिणाम में परिलक्षित होगा। मुझे यकीन है कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के संयुक्त प्रयासों से परीक्षा परिणाम में उन्हें यथोचित स्थान प्राप्त होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। राजस्थान के शिक्षक सदैव प्रतिबद्धतापूर्व कार्य करके अपने शिक्षकीय उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं। मैं उन्हें बधाई देते हुए अपने कर्तव्य पथ पर पूर्ण निष्ठा एवं समर्पणपूर्वक आगे बढ़ने की मंगलकामना प्रदान करता हूँ।

हमारे प्रदेश में इस माह 17 व 24 अप्रैल 2014 के दिन सोलहवीं लोकसभा के लिए चुनाव हो रहे हैं। लोकतंत्र में चुनाव के महत्त्व से हम भलीभांति परिचित हैं। वोट का अधिकार व्यक्ति की अनमोल निधि है इसमें धनी-निर्धन, स्त्री-पुरुष अथवा बड़े-छोटे का कोई भेद नहीं है। सब समान है। इसलिए वोट को अमूल्य कहा जाता है। मेरी शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों से अपील है कि वे मत का महत्त्व आमजन तक पहुंचा कर अधिक से अधिक मतदान का मार्ग प्रशस्त करें।

इस माह में रामनवमी, महावीर जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती सहित कई उत्सव-पर्व हैं। दरअसल अप्रैल माह उत्सव-पर्व व मेले मगरियों का महीना है। इनमें हमारे लोकजीवन के विविध रंग बिखरे पड़े हैं जो सामूहिक जीवन व मानवीय अस्मिता का बोध हमें कराते हैं। हमें इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेते हुए आदर्श जीवन प्रणाली का अनुगामी बनना चाहिए।

नए सत्रारम्भ के समय शिक्षा प्रशासन को पूर्ण चौकस रहकर छात्र-छात्राओं के लिए प्रचलित योजनाओं से उन्हें लाभान्वित कराना चाहिए। छात्र-छात्राओं के हित में कई प्रकार की छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाएं स्वीकृत हैं। विद्यार्थियों की पात्रता के मुताबिक छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजना के आवेदन पत्र यथासमय भरवा दिए जाने चाहिए। नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकों के पात्र विद्यार्थियों को सत्रारम्भ में ही पुस्तकें मिल जाने से उनका शिक्षण-अधिगम प्रभावी बन जाता है। अत: विद्यालयों में नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण कार्य समय पर पूर्ण हो जाना चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा विभाग मातृ विभाग के रूप में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते हुए देश-प्रदेश में सहज सामाजिक जीवन का तानाबाना रचने में सफल होगा। शिक्षकों तथा शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं एवं महानुभावों को इस हेतु विशेष प्रयास करने पड़ेंगे जिसकी एक शानदार परम्परा उनके नाम सदा से रही है।

सम्पूर्ण शुभकामनाओं के साथ-

(विकास एस. भाले)

"लोकतंत्र में चुनाव के महत्त्व से हम भलीभांति परिचित हैं। वोट का अधिकार व्यक्ति की अनमोल निधि है इसमें धनी-निर्धन, स्त्री-पुरुष अथवा बड़े-छोटे का कोई भेद नहीं है। सब समान है। इसलिए वोट को अमूल्य कहा जाता है। मेरी शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों से अपील है कि वे मत का महत्त्व आमजन तक पहुंचा कर अधिक से अधिक मतदान का मार्ग प्रशस्त करें।"

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग् भवेत्।।

नव विक्रम संवत् 2071

संवत्सर के स्वागत में

❒ डॉ. गिरीश दत्त शर्मा

नव विक्रम संवत् 2071 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार 31 मार्च, 2014 सोमवार राष्ट्रीय शाके 1936 हिजरी सन् 1435 तथा बंगला संवत् 1420 के शुभारम्भ पर विश्व के सभी लोग सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ एवं नीरोग हों, सभी का कल्याण एवं मंगल हो, किसी को कष्ट एवं सन्ताप की अनुभूति न हो। पृथ्वी, आकाश समस्त नक्षत्र मण्डल, जलवायु, वनस्पति, दैवीय शक्तियाँ इस भूमण्डल के लोगों के लिए अनुकूल, प्रेरक, शांति, समृद्धि एवं बुद्धि प्रदाता हो। ऐसी कामना लिए हम नव संवत्सर का स्वागत करते हैं, अभिनन्दन करते हैं। हमारी कामना है कि संवत्सर की पावन बेला में भारत पुन: उस गौरव को प्राप्त करे जिसके बारे में बिलड्यूरो ने लिखा था- 'यह भारत हम सबकी माता है, संस्कृत भाषा के द्वारा उसने न केवल समस्त योरोपीय भाषाओं को जन्म दिया है वरन् यह उसके सम्पूर्ण दर्शन और गणित की जन्मदात्री है। बुद्ध के द्वारा ईसाई धर्म के आदर्शों और ग्राम सभाओं द्वारा स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के आधुनिक सिद्धान्तों की जन्मदात्री भी यही है। इस प्रकार समस्त भारत अपने विविध रूपों में सम्पूर्ण मानवता की माता है।

ब्रह्म पुराण के श्लोक...''चैत्र मासे जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्ल पक्ष समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति।।'' के अनुसार ब्रह्मा जी ने चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सृष्टि की रचना की। अत: इसी शुभ दिन से हमारा नया संवत् आरम्भ होता है। इस दिन मुख्य रूप से ब्रह्मा जी और उनकी सृष्टि में मुख्य देवी देवताओं, यज्ञ, राक्षस, ऋषि मुनियों, मनीषियों, पर्वत, नदियों आदि का विधिवत पूजन किया जाता है। उसी दिन से हमारा यह कलैण्डर आरम्भ होता है। भारत में कहीं कहीं उसके प्रारम्भ होने की तिथि में अन्तर मिलता है। गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिणी पश्चिमी प्रान्तों में इसका प्रारम्भ कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से माना जाता है। संवत् संवत्सर का संक्षिप्त रूप है। सम+वस्ति +ऋतव: अर्थात् जिस समय अच्छी ऋतु का आभास होता है उस काल गणना के प्रमाण को संवत्सर कहते हैं। चैत्र मास जिसे मधु मास भी कहते हैं। सब महीनों की अपेक्षा अधिक उत्साहवर्द्धक, उल्लासपूर्ण एवं सुखद होता है इसीलिए कालगणना इसी से मानने का विधान प्रचलित है।

भारतीय संवत् सब प्रकार के कलैण्डरों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह हमारे स्मृति ग्रन्थों के रचयिता ऋषि, मनीषियों के सूक्ष्म चिन्तन, मनन एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर माना गया है। 'इदमित्यं सिद्धान्त के आधार पर की गयी काल गणना के आधार पर हमारा संवत्सर विश्व में सर्वश्रेष्ठ और निर्दोष माना जाता है। इसमें महीनों के नाम भी नक्षत्रों के आधार पर रखे गये हैं जैसे चैत्र वैशाख आदि। चन्द्रमा इन नक्षत्रों से गुजरते हुए पूर्णिमा को जिस नक्षत्र में होता है उसी के नाम पर माह का नाम रखा जाता है।

भारत में संवत्सर की काल अवधि पृथ्वी को चारों ओर चन्द्रमा के चक्कर के लगाने की अवधि 28½ दिन (चन्द्रमास) तथा सूर्य के चारों ओर पृथ्वी द्वारा चक्कर लगाने की अवधि 365¼ दिन (सौर वर्ष)के समन्वय से निर्धारित की गयी है। अत: हमारे सभी पर्व, उत्सव, संस्कार आदि अपने निश्चित समय पर आते हैं जबकि मुस्लिम सम्प्रदाय में प्रचलित 'हिजरी' सन् चन्द्र वर्ष पर आधारित है जो कि हमारे सौर वर्ष से 11 दिन एक घण्टा 20 मिनट 12 सैकण्ड छोटा होता है। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर एक किलोमीटर प्रति सैकण्ड की दर से परिक्रमा करते समय 28½ दिन में अपनी परिक्रमा पूरी कर लेता है। इस प्रकार चान्द्रमास और मास की अपेक्षा छोटा होने के कारण उसका वर्ष भी सौर वर्ष से छोटा होता है। भारतीय वर्ष और मुस्लिम वर्ष में इसी अन्तर के कारण रमजान, ईदुल फितर आदि पर्व एक निश्चित ऋतु में नहीं आ पाते। अंग्रेजी कलैण्डर में भी सूर्य की गति के अनुसार प्रतिवर्ष एक पल का अन्तर बढ़ता जाता है जो कि 36000 वर्षों में 10 दिन और काल युग के पूर्ण होते हुए 120 दिन का हो जायेगा और ऋतु व्यवस्था बदल जायेगी। भारत में विक्रम संवत् के अतिरिक्त शक संवत् का भी प्रयोग होता है परन्तु यह न तो वैज्ञानिक आधार पर निर्मित है और न अधिक प्रचलित ही है। यह शक संवत् ईसा से 78 वर्ष बाद शुरू हुआ। इसे शक वंश के शासकों ने चलाया। शक द्वीप के ब्राह्मण ज्योतिषी ईसा की पहली शताब्दी से इसका प्रयोग करते थे।

भारतीय संवत् यों तो कई प्रकार के होते हैं परन्तु उनमें सावन, चान्द्र तथा सौर तीन प्रकार के संवत् प्रमुख माने जाते हैं। इनमें सावन संवत् 360 दिन का, चान्द्र संवत् 354 दिन का और सौर संवत 365 दिन का माना जाता है। हमारे वर्ष का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के सूर्योदय से माना जाता है जबकि अंग्रेजी वर्ष (कलैण्डर) 31 दिसम्बर की मध्य रात्रि 12 बजे के बाद प्रारम्भ होता है। हमारी संस्कृति में रात्रि हताशा, शोक, अंधकार, कुण्ठा आदि की प्रतीक मानी जाती है। इसलिए **हमारा संवत् सूर्योदय की ऊषा की लाली से प्रारम्भ माना जाता है जिसमें नई ऊर्जा, नई ऊष्मा, उल्लास, उत्साह, स्फूर्ति आदि की अनुभूति होती है।**

ब्राह्मण ज्योतिषी दार्शनिक एवं हिन्दू धर्मावलम्बी हमारे कलैण्डर को पंचांग कहते हैं क्योंकि इसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण-ये पांच अंग वर्णित रहते हैं। पंचांग के पांचों अंग वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर बनाये गये हैं। सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्रों के मध्य से गुजरने पर जो स्थिति बनती है उसी के आधार पर इनका नामकरण, स्वरूप और अवधि निश्चित की जाती है। उदाहरण के लिए चन्द्र की स्थिति के आधार पर मास को दो पक्षों-कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में विभाजित करके प्रत्येक पक्ष को 15 तिथियों में विभक्त किया गया है। ज्योतिष के अनुसार तिथि का निर्णय सूर्य तथा चन्द्रमा की

पारस्परिक दूरी के नाम से होता है। इसी प्रकार सप्ताह के सात दिनों के नाम भी राहु और केतु को छोड़कर रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि इन सात ग्रहों के नाम पर रखे गये हैं। सृष्टि का आरम्भ सूर्य से हुआ है इसलिए दिन के पहले घण्टे का स्वामी सूर्य होने के कारण सप्ताह का प्रथम दिन रविवार माना गया है। दूसरा दिन इसी क्रम में चन्द्रमा का आता है।

संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानने के कारण में ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना के अतिरिक्त अथर्ववेद एवं शतपथ ब्राह्मण में भी इसका उल्लेख मिलता है। चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र के विषकुम्भ योग में भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लिया था ऐसा 'स्मृत कौस्तुम' में भी उल्लेख मिलता है। सतयुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से हुआ था। इसी दिन न्याय प्रिय शौर्य और पराक्रम युक्त महाराज विक्रमादित्य ने अपनी विजय के उपलक्ष्य में विक्रम संवत् आरम्भ किया। स्वामी दयानन्द ने इसी दिन 'आर्य समाज' की स्थापना की। एकता और ज्ञान के प्रतीक झूलेलाल की आराधना में सिंधी लोग इसी दिन 'चेटीचण्ड' का पर्व मनाते हैं। शक्ति सम्प्रदाय के अनुसार इसी दिन से नवरात्रि प्रारम्भ होती है। समाज और राष्ट्र के समुन्नयन के चिन्तक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी इसी दिन हुआ। पारसी लोग अपना पर्व नवरोज भी इसी दिन से आरम्भ करते हैं।

इस पवित्र और मंगलकारी शुभ दिन को हमें विशेष पूजा अर्चना और उत्साह के साथ मनाना चाहिए। इस दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर गंध, पुष्प, रोली, अक्षत, जल, नैवेद्य आदि लेकर संकल्प करें और 'ओम ब्रह्मणे नम:' से ब्रह्मा जी की आराधना और पूजन करें। घरों, भवनों, संस्थाओं आदि को ध्वज, पताका, तोरण आदि से सजाएं। परस्पर शुभ कामनाएं और मंगल कामनाएं प्रेषित करें। रात्रि को घरों में दीपक जलाकर ज्योति पर्व का आयोजन करें।

-4/82, चौटाला रोड, संगरिया-335063
मो. 8561069369

आपका मतदान, लोकतंत्र की शान।

❑

लोकतंत्र हमसे-वोट करें गर्व से।

चिंतन

जीवन में ईमानदारी का महत्त्व

❒ **नीना राठौड़**

ईमानदारी मनुष्य के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण है। सतत ईमानदारी व्यक्ति या किसी संस्थान की साख या विशिष्ट पहचान बन जाती है। ईमानदारी घर-परिवार में और बाहर व्यवसाय एवं व्यवहार में, संबंधों एवं मित्रता में सभी में इसका महत्व अति विशिष्ट होता है। यह मैत्री भाव प्रगाढ़ करती है और रिश्तों में रिसाव नहीं होता। जीवन के हर पड़ाव पर ईमानदारी आवश्यक होती है। गांधी जी ने सत्य को अपना अधिष्ठाता और अहिंसा को अपना व्यवहार माना था।

विद्यार्थी जीवन एवं युवावस्था में तो यह अत्यन्त ही आवश्यक है क्योंकि युवावस्था की ईमानदारी प्राय: जीवन को सही दिशाबोध देती है और एक मिसाल कायम करती है जिससे मान-सम्मान, अर्थोपार्जन व प्रतिष्ठा सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। ईमानदारी के साथ इसे और भी विश्वसनीय एवं आदरणीय बना देती है जबकि अहंकार ईमानदारी को अकड़ और अक्खड़पन बना देता है और ऐसे ईमानदार लोग लोकप्रिय नहीं होते। **ईमानदारी के साथ व्यवहार की शालीनता और मृदुलता यानी कोमलता अत्यन्त आवश्यक है।**

व्यक्ति की ईमानदारी ही उसमें कई गुणों की नींव रखती है, स्वभावगत विकास होता है और ईमानदार की विशिष्ट पहचान स्थिर हो जाती है।

प्रभावी व्यक्तित्व : ईमानदारी व्यक्ति को प्रभावशाली बनाती है। उसकी बात में, व्यवहार में एक शालीनता और दृढ़ता होती है, चालाकी, बेईमानी और झूठ से ईमानदारी का रिश्ता ही नहीं होता है, उससे सभी प्रभावित होते हैं। उसे सम्मान मिलता है और लोग प्रेरणा भी लेते हैं।

ईमानदारी की परिभाषा : इसके मूल में नैतिकता, सत्य और सिद्धान्त होते हैं। नैतिकता का पालन ही इसकी वास्तविक परिभाषा है। ईमानदारी में व्यक्तिगत लाभ की जगह चरित्र और वस्तुओं के बजाय लोग, शक्ति के बजाय सेवा, सुविधा के बजाय सिद्धान्त तथा तात्कालिक दृष्टिकोण की बजाय दूरगामी दृष्टिकोण अधिक चलता है। ईमानदार गजक, रेवड़ी, समोसा, कचौरी व दही की लस्सी इत्यादि की छोटी-छोटी फुटपाथी दुकान वाले भी मशहूर हो जाते हैं, उनका नाम चलता है, दूर-दूर से लोग उन्हीं से सामान खरीदने आते हैं। ऐसे लोग अच्छी चीज सही कीमत पर देकर अच्छी कमाई कर लेते हैं। ''सरकार'' पिक्चर में अभिताभ बच्चन ने अपने बिगड़ैल बेटे को कहा था, ''नजदीक के फायदे की बजाय दूर के नुकसान के बारे में सोचना चाहिये, यही तो ईमानदारी है।

जीवन को मिलती है नई दिशा : ईमानदारी से व्यक्तित्व में विश्वास जाग उठता है और व्यवहार में शालीनता। ईमानदार व्यक्ति की नैया कभी डूबती नहीं है, हाँ कभी डांवाडोल हो सकती है। धारा के प्रतिकूल होने के बावजूद उसकी नाव धीमी हो सकती है पर थमती नहीं, लगातार चलती रहती है।

खुल जाते हैं सफलता के रास्ते : किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे ईमानदारी का बहुत बड़ा हाथ होता है। सफलता तभी मिलती है जब आप सही दिशा में ईमानदारी से बढ़ते हैं। लगन और सच्चे मन के साथ ईमानदारी से किसी काम में भले ही तुरन्त फल न मिले लेकिन जब भी फल मिलता है वह मीठा होता है।

ईमानदारी व्यक्ति की पैठ होती है, उसकी साख होती है। वह स्वयं सम्माननीय एवं विश्वसनीय होता है और उसे आवश्यक सहयोग आसानी से मिल जाता है। ईमानदार लोग किसी प्रकार की मिलावट नहीं करते। ईमानदारी व्यवसाय में, पारिवारिक जीवन में परीक्षा में ही नहीं समग्र जीवन में अपेक्षित है, वह व्यक्ति तनावरहित और निर्भय होता है, सुख देता है और स्वयं सुखी, सार्थक जीवन बिताता है।

-प्राचार्या
टैगोर विद्या भवन, शास्त्री नगर, जयपुर
मो. 9549299991

प्रार्थना दर्शन-1

'मन-विजय' का मंत्र है-प्रार्थना

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में जब हम दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च (महाविद्यालय तक) शिक्षा देने हेतु सैकड़ों शिक्षण संस्थान हैं और प्रतिवर्ष नये संस्थान भी स्थापित हो रहे हैं। नि:सन्देह यह बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है कि प्रत्येक को शिक्षा प्राप्त हो, क्योंकि शिक्षा से ही जन्म के समय प्रकृति प्रदत्त अल्प बुद्धि का विकास सम्भव होता है। विकसित बुद्धि ही पशुता से मानवता की ओर, अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाने में सहायक होती है। लेकिन जब हम यदा-कदा समाज में घटित अमानवीय या उच्छृंखल कृत्य की घटनाओं को देखते हैं, सुनते हैं और जब यह ज्ञान होता है कि ये कृत्य उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले या उच्च शिक्षा प्राप्त किये युवकों द्वारा, उच्च पदों पर आसीन पदाधिकारियों द्वारा, राजनैतिक, धार्मिक या शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने वालों के द्वारा किये गये हैं, तो एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि शिक्षित व्यक्तियों में मानसिक दुर्बलता क्यों ? क्या हमारी शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों में अहंकार मिटाने, परस्पर सहयोग, विनम्रता व करुणाशीलता आदि सद्गुणों को बढ़ावा देने हेतु जो कार्यक्रम है, उनमें कहीं उदासीनता अथवा पूर्णरूपेण उन्हें आत्मसात नहीं करवाने के कारण तो ऐसा नहीं हो रहा है।

इस हेतु हमें उन कार्यक्रमों पर विवेचना करनी चाहिये जो विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के साथ-साथ उनमें विनम्रता और सहिष्णुता जैसे गुणों के संवर्धन हेतु करवाये जाते हैं। इनमें प्रमुख रूप से 'नैतिक शिक्षा' व 'राष्ट्रीय सेवा योजना' जैसे शिक्षा सहभागी कार्यक्रम हैं। नि:सन्देह ये कार्यक्रम अच्छे हैं, परन्तु ये पाठ्यक्रम का हिस्सा होने के कारण अधिक प्रभावी होते दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं। ऐसे में हमारा ध्यान शिक्षण संस्थाओं में वैदिक काल से क्रियमाण कार्यक्रम 'प्रार्थना' की ओर आकृष्ट होता है। ऐसा क्या कारण रहा कि वैदिककाल से प्रारम्भ हुई यह पद्धति आज भी हमारी शिक्षण संस्थाओं में अपनायी जा रही है। इसके मूल में वह क्या तथ्य है, परिचित होना आवश्यक है। तभी हम इसके महत्व को समझ पायेंगे तथा विद्याध्ययन से पूर्व इसे करवाये जाने का कारण भी स्पष्ट होगा।

हम सभी भली प्रकार से जानते हैं कि विद्याध्यन से पूर्व पाठशालाओं में अनिवार्य रूप से एक कालांश का निर्धारण करके उसमें प्रार्थना करवायी जाती है। यह प्रार्थना शाला के प्रांगण में मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने हाथ जोड़ पंक्तिबद्ध खड़े विद्यार्थियों को, शिक्षकों की उपस्थिति में नियमित रूप से करवायी जाती है। विभिन्न विद्यालयों में प्रार्थनाओं की रचना भिन्न-भिन्न हो सकती है, परन्च उसके मूल में एक ही भाव विद्यमान होता है और वह है-हे, ज्ञान में गति प्रदान करने वाली शक्ति, जिससे सब आलोक प्रकाशित होता है, अज्ञान दूर होता है, ज्ञान का विकास होता है, जो सत-चित और आनन्द के प्रसारण की शक्ति है, जिससे समस्त गतियां प्रवर्तित होती हैं, उसके शरणागत होकर विनय भाव से विद्यार्थी 'मन को विजय' करने की शक्ति प्रदान करने का वरदान मांगता है। यही प्रार्थना का मूल तत्व है। क्योंकि ज्ञान प्राप्ति को एक यज्ञ माना गया है। इसमें मन की एकाग्रता ही ज्ञान प्राप्ति का आधार है। चूंकि जब 'मन' और 'वाक' की क्रियाएं परस्पर अनुकूल हों, एक क्रिया के साथ दूसरे की क्रिया का यदि सामंजस्य हों तभी यथार्थ ज्ञान यज्ञ होता है, जीवन श्रेष्ठ बनता है।

विद्याध्ययन के लिए जब विद्यार्थी घर से पाठशाला तक पहुंचता है तब वह परिवार के सदस्यों के व्यवहार से, मार्ग में दृष्टिगोचर हो रहे घटनाक्रम से प्रभावित होकर शाला तक पहुंचता है। ऐसी स्थिति में उसकी बुद्धि अस्थिर अवस्था को प्राप्त होती है। यह अवस्था 'मन' की चंचल प्रवृत्ति के कारण बनती है। अत: प्रत्येक विद्यार्थी की शाला में पहुंचते ही ज्ञानार्जन हेतु बुद्धि स्थिर हो जाती है, संभव नहीं है। चूंकि इसके लिए 'मन' का स्थिर होना आवश्यक है।

'मन' स्थिर कैसे हो, इस प्रसंग में सर्वप्रथम तो हमें 'मन' के सन्दर्भ में यह जानने की जिज्ञासा भी उत्पन्न होती है कि उसकी प्रकृति क्या है वह किससे प्रभावित होकर बुद्धि को अस्थिर करता है। वह क्या प्रक्रिया है जिसके करने से 'मन' स्थिर किया जा सकता है, जिससे बुद्धि विकारों से रहित होकर ज्ञानार्जन की ओर अग्रसर हो।

श्रीमदभगवद् गीता में वर्णित है कि मन चंचल है तथा इन्द्रिय के विषय में राग-द्वेष छिपे हैं। इस कारण ही बुद्धि अस्थिर रहती है, क्योंकि राग-द्वेष से रजोगुण का प्रभाव बढ़ता है, जिससे कामना और आसक्ति उत्पन्न होती है। इस स्थिति में व्यक्ति कर्तव्य कर्मो को नहीं कर पाता, उसका विवेक-ज्ञान नष्ट हो जाता है। उक्त दोषों का प्रभाव इन्द्रिय, मन और बुद्धि पर रहता है। अत: सर्वप्रथम मन को एकाग्र करने का उल्लेख किया गया है। चूंकि 'मन' स्थिर होने पर ही इन्द्रियां मन के वशीभूत होंगी जिससे बुद्धि भी विकारों से रहित होकर स्थिर रहेगी। यही स्थिति ज्ञानार्जन हेतु श्रेष्ठ मानी गई है। 'मन' को स्थिर करना बहुत कठिन माना गया है, चूंकि यह अति चंचल है परन्च अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इसे वश में करने का उल्लेख श्रीमदभगवद् में इस प्रकार से किया गया है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेत तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।
(6-35)

उक्त श्लोक में जो अभ्यास करने का उल्लेख मन को निग्रह करने हेतु किया गया है, वह अभ्यास करने का माध्यम नित्य प्रार्थना और स्वाध्याय करना ही है।

'मन' को स्थिर करने के प्रसंग में और अधिक स्पष्ट स्थिति हमें श्री भगवद्गीता के

बारहवें अध्याय के नवें श्लोक में परिलक्षित होती है, जिसमें कहा गया है–

अथ चित्तं समाधातुं न शकोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय।।

अर्थात् यदि तू मन को 'मुझ' में अचल स्थापना करने के लिए समर्थ नहीं है, तो हे अर्जुन अभ्यासरूप योग के द्वारा 'मुझ' को प्राप्त होने के लिए इच्छा कर।

यदि विद्याध्ययन के प्रसंग में उक्त श्लोक को देखें तो इसमें 'मुझ' शब्द जिसका प्रयोग दो बार हुआ है उसे समझना होगा। प्रथम 'मुझ' शब्द के बारे में कहा गया है कि यदि तेरा मन, मुझ में अचल स्थापन करने में समर्थ नहीं है अर्थात् प्रथम 'मुझ' का उल्लेख 'वाक्' के लिए है (अर्थात यदि 'मन' वाक् में अचल न होने पर) तथा दूसरा 'मुझ' उस परम शक्ति के शरणागत होने के सन्दर्भ है जो सर्वशक्तिमान है, जो सभी को गति प्रदान करती है। जिसकी हम नित्य प्रार्थना करते हैं। इसके बार-बार करने को ही अभ्यास कहा गया है। ऐसा करने से ही मन स्थिर होगा। यही प्रक्रिया मन को स्थिर करने व विजय करने का आधार है।

प्रार्थना के सन्दर्भ में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इसे भावयुक्त होकर ही करना चाहिये। चूंकि ''भावस्तु मनसो धर्म:'' अत: जब तक उस परम शक्ति की प्रार्थना भावपूर्ण नहीं होगी तब तक प्रार्थी में सत्वगुणों का प्रवर्धन नहीं होगा। सत्वगुणों से दिव्य भाव प्रादुर्भूत होते हैं, जिससे मन को स्थिरता प्राप्त होती है। ज्ञानार्जन हेतु किये जाने वाले ज्ञान-यज्ञ के लिए यही स्थिति सर्वोपरि होती है। विद्यार्थी बाल्यावस्था से ही जब विकारों से मुक्त होगा तो जीवनपर्यन्त उसका आचरण सदैव कर्त्तव्य कर्मो को प्रेरित करने वाला होगा। वह सुयोग्य नागरिक बनेगा, यह स्थिति उसके स्वयं के लिए समाज और राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

प्रार्थना के महत्व पर प्रसंगवश जब हम तन्त्र ग्रन्थों का पारायण करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि प्रार्थना को मन्त्र रूप ही माना गया है, क्योंकि इसमें भी मन्त्रों की तरह 'वाच्य' और 'वाचक' नामक दो शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं। अत: वह प्रार्थना अधिक प्रभावी मानी जाती है जिसमें वर्णों और पदों की आनुपूर्वी नियत रहती है। वैसे तो समस्त वर्ण मन्त्रस्वरूप ही माने गये हैं। इनके उच्चारण से ही ये प्रभावी होते हैं। अत: प्रार्थना करना सभी के लिए हितकर माना गया है परन्तु वह भावयुक्त हो।

विद्यालयों में 'प्रार्थना' को मात्र एक औपचारिकता न समझते हुए, इसे मन विजय का मन्त्र एवं संस्कार देने के रूप में इसे अपनाया जाना चाहिये। इस कार्य में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ही छात्र-छात्राओं को इसके महत्व को समझाते हुए इसे करने की प्रेरणा देंगे। आज यह इसलिए भी आवश्यक हो गया है कि अधिकांश परिवारों में पुरातन संस्कार देने की प्रक्रिया लुप्त हो रही है। अत: 'प्रार्थना' के माध्यम से हमारे सभी विद्यार्थी संस्कारमय हो। प्रार्थना में 'भाव' की या वातावरण की महत् भूमिका है, इसलिए यह भी आवश्यक है कि ज्ञान के केन्द्र विद्यालय सम्पूर्ण रूप से भय मुक्त होने चाहिये। भय स्वयं एक विकार है जो अज्ञानरूपी अंधकार से उत्पन्न होता है।

-जस्सुसर गेट रोड, धर्म कांटे के पास, बीकानेर
मो. 9414144456

प्रार्थना दर्शन-2

प्रार्थना : एक विनम्र पुरुषार्थ

❒ मधुबाला शर्मा

प्रार्थना, वह भाव अथवा हृदय से निकले वे उद्गार हैं, जिसमें उस सर्वशक्तिमान् ईश्वर अथवा ईश्वर तुल्य आदर्शों से सन्मार्गगामी होने का निवेदन किया जाता है।

वास्तव में प्रार्थना के माध्यम से हम विश्वव्यापी महानता के साथ अपना घनिष्ट सम्पर्क स्थापित करते हैं। आदर्शों को भगवान् की दिव्य अभिव्यक्ति के रूप में अनुभव करते हैं। प्रार्थना का प्रयोजन अपनी आत्मा को ही परमात्मा का प्रतीक मानकर स्वयं को समझना है कि वह इसका पात्र बने कि आवश्यक विभूतियाँ उसे उसकी योग्यता के अनुरूप सहज ही मिल सके।

लघुता को विशालता में, तुच्छता को महानता में समर्पित कर देने की उत्कण्ठा का नाम प्रार्थना है। नर को नारायण, पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने का संकल्प कहलाता है।

परामनोविज्ञानवेत्ता डॉ. एमेली केडी ने लिखा है-'प्रार्थना मात्र ईश्वर को धन्यवाद देने या उससे कुछ याचना करने की प्रक्रिया का नाम नहीं है, वरन् यह वह मन: स्थिति है, जिसमें व्यक्ति शंका और संदेहों के जंजाल से निकलकर श्रद्धा की भूमिका में प्रवेश करता है। अहंकार को खोकर समर्पण की नम्रता स्वीकार करना और मनोविकारों को ठुकरा कर परमेश्वर का नेतृत्व स्वीकार करने का नाम प्रार्थना है, जिसमें यह संकल्प भी जुड़ा रहता है कि भावी जीवन परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार पवित्र और परमार्थी बनकर जिया जायेगा।'

चिकित्साशास्त्र पर नोबेल पुरस्कार विजेता एवं फ्रांस के लियो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. कैरल ने अपनी प्रत्येक सफलता के पीछे ईश्वर की अनुकम्पा से छिपा हुआ देखा है। वे हर रोगी से कहते थे-'सच्चे मन से प्रार्थना करो और अपनी भूलों के लिए पश्चाताप और भविष्य में निर्मल जीवन जीने की प्रतिज्ञा के साथ यदि प्रार्थना करोगे तो वह जरूर सुनी जायेगी। सच्चा इलाज तो पश्चाताप है और ईश्वर चरणों में अपना समर्पण, जो ऐसा कर सकेगा वह शारीरिक ही नहीं, आन्तरिक रोगों से भी छुटकारा पा लेगा।'

इसी सम्बन्ध में महात्मा गाँधी ने अपने एक मित्र को लिखा था-'राम नाम मेरे लिए जीवन अवलम्ब है, जो हर विपत्ति से पार कराता है। जब तुम्हारी वासनाएं तुम पर सवार हो रही हों, तो नम्रतापूर्वक भगवान को सहायता के लिए

पुकारो, तुम्हें सहायता अवश्य मिलेगी।'

जब मन दुर्बल होता है, मनोविज्ञान बढ़ने लगते हैं तो सच्चे मन से की गई प्रार्थना तुरन्त प्रभावकारी सिद्ध होती है। इसी सन्दर्भ में गज को ग्राह से छुड़ाना, द्रौपदी का चीर बढ़ाना, सुदामा को थोड़े से चावलों के बदले अपार सम्पत्ति देना, विदुर का शाक-भोजन खाना आदि ऐसे उदाहरण है, जिनमें समर्पण भाव से की गई प्रार्थना है, जो परम पिता परमेश्वर द्वारा स्वीकार की गई। आर्त भाव द्वारा की गई प्रार्थना अपने इष्ट तक अवश्य पहुंचती है और उसके चमत्कारिक परिणाम भी निकलते हैं।

प्रार्थना के माध्यम से आत्म-समर्पण करने की स्थिति में जीव कहता है-तस्यैवाहम् (मैं उसी का हूं), तवैवाहम् (मैं तो तेरा ही हूं)। यह कहते-कहते उसी में इतना तन्मय हो जाता है, इतना घुल मिल जाता है कि अपने आपे का विसर्जन, विस्मरण ही कर बैठता है और अपने को परमात्मा का स्वरूप समझने लगता है। तब वह कहता है-त्वमेवाहम् (मैं तो तू ही हूँ), शिवोहम् (मैं ही शिव हूँ) अहम ब्रह्मास्मि (मैं ही ब्रह्म हूं)।

जब भगवान् को अपने में और अपने को भगवान् में समाया होने की अनुभूति इतनी प्रबलता के साथ अनुभूत होने लगे कि उसे कार्यक्रम में परिणत किये बिना रहा ही ना जा सके तो यही समर्पण भाव की परिपक्वता है। ऐसी शरणागति व्यक्ति को द्रुतगति से देवत्व की ओर अग्रसर करती है। यह गतिशीलता इतनी प्रभावकारी होती है कि व्यक्तित्व दिव्यता सहित चमकने लगता है।

नि:संदेह सफलताएं अपने ही परिश्रम-पुरुषार्थ का प्रतिफल होती है, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि उस परिश्रम-पुरुषार्थ की प्रेरणा देने वाला परमात्मा अपने अन्त:करण में ही विद्यमान है। अस्तु, जो कुछ व्याप्त है, उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद के बोध से भरकर परमात्मा से आत्मबल, मनोबल और आत्मबोध की माँग की जाए तो उज्ज्वल भविष्य प्राप्त किया जा सकता है।

प्रार्थना के विषय में इतना सब कुछ जान लेने के बाद सभी शिक्षकों को बालकों में प्रारम्भिक स्तर से प्रार्थना का मूल भाव अवश्य समझाना चाहिए। प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए विद्यालय में जब बालक आता है तो यह कच्चे घड़े के समान होता है। उसका मन पुष्प की कोमल पंखुड़ियों के समान सुकोमल होता है। ऐसी स्थिति में उसमें जो संस्कार डाले जायेंगे, वे उम्र भर उसका साथ देंगे। कहने का तात्पर्य यह कि विद्यालयों में प्रार्थना सभा प्रभावी हो, इसके लिए प्रत्येक शिक्षक अपना दायित्व समझे।

विद्यालयों में प्रार्थना-सभा एक ऐसा अंकुरण है, जो देश को प्रभावकारी व्यक्तित्व प्रदान कर सकता है। ये, वे 20 मिनिट हैं, जो बालक के कोरे मन पर लिखे जाने वाले बहुमूल्य अक्षरों को उसके हृदय पर स्थापित करते हैं।

विद्यालयों में होने वाला प्रार्थना सभा कार्यक्रम बालक के ज्ञान के प्रवेश की पहली सीढ़ी है, जिससे बालकों का सर्वांगीण विकास होता है। प्रार्थना से बालक में आनंद की अनुभूति होती है, वह एकाग्रता से ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। इसके साथ ही वह अनुशासन में रहना सीखता है। प्रार्थना सभा में होने वाला ध्यान, प्रतिज्ञा, व्यायाम आदि से उसका स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना-सभा में सुनाये जाने वाले प्रेरक-प्रसंग बालकों के मन पर बहुत प्रभाव डालते हैं। कहानी आदि के माध्यम से बालकों में जीवन-मूल्यों का समावेश करने का उत्तम मंच प्रार्थना-सभा ही है। किन्तु आजकल शिक्षक प्रार्थना सभा की उपयोगिता तथा प्रार्थना के महत्व को समझकर भी वह इस तरफ ध्यान नहीं देते। प्रार्थना-सभा केवल शारीरिक शिक्षकों के सुपुर्द कर दी जाती है। यह हमारा दुर्भाग्य है। प्रार्थना बालक में श्रद्धा का आरोपण करती है जिससे उसमें सकारात्मकता का प्रवेश होता है।

अत: प्रार्थना मात्र विद्यालयों तक ही नहीं अपितु प्रत्येक घर में दोनों समय अवश्य होनी चाहिए। शिक्षकों और अभिभावकों को इसके महत्व को समझते हुए अनिवार्य रूप से इस दिशा में श्रेष्ठ कदम उठाने चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा है-'प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है।' अत: प्रार्थना हमें आत्मबल प्रदान करती है और आत्म गौरव से रहना सिखाती है।

-अध्यापिका, रा.मा. विद्यालय
किलचू देवड़ान (बीकानेर)
मो. 9414452701

प्रेरणा गीत

किसी के काम जो आये,
उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

कभी धनवान है कितना,
कभी इंसान निर्धन है।
कभी दु:ख है, कभी सुख है,
इसी का नाम जीवन है।।
जो मुश्किल से ना घबराये,
उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

ये दुनिया एक उलझन है,
कहीं धोखा, कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है,
कोई जीता है रो-रोकर।।
जो गिरकर फिर सम्भल जाए,
उसे इंसान कहते हैं।।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

अगर गलती रुलाती है,
तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है,
जो अक्सर हो ही जाती है।।
जो कर ले ठीक गलती को,
उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

यूँ भरने को तो दुनिया में,
पशु भी पेट भरते हैं।
लिये इंसान का जो दिल,
वो नर परमार्थ करते हैं।।
पथिक जो बाँट कर खाये,
उसे इंसान कहते हैं।।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

किसी के काम जो आये,
उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं।।

रामनवमी विशेष

अपने भीतर में बैठे राम को जगाएं

❒ पवन कुमार ओझा

हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमें सर्वोत्तम जीवनशैली का दर्शन सहज उपलब्ध है। भारतीय संस्कृति का दर्शन नर से नारायण बनाने का सबको खुला आमंत्रण देता है। कमी बस इतनी ही है कि हमने आम के गुणों का खूब बखान किया है पर उसे सही ढंग से खाया नहीं। हमारी संस्कृति प्रत्येक दिन को एक पर्व के रूप से मनाने का संकेत करती है। क्यों न मनाये हम प्रतिदिन दिपावली, होली, रामनवमी, ईद...। पाषाण युग से वर्तमान के कम्प्यूटर युग का ऐतिहासिक सिंहावलोकन से स्पष्ट होता है कि हम कहीं चूक रहे हैं। कालनेमि हमें भ्रमित कर रहा है। प्रगति के पैमाने बदल गये हैं। तर्क, कुतर्क से हम स्वयं को श्रेष्ठ बता रहे हैं। वर्तमान समाज की समस्याएं हमसे प्रश्न करती हैं कि कैसी रामनवमी मना रहे हैं आप? कूड़े के ढेर से उपयोगी वस्तुएं बीनते हुए बाल राम क्या हमें दिखाई नहीं देते? बाल श्रमिकों को इस त्रासदी से कब मुक्ति मिलेगी? ऐसे बहुतेरे उदाहरण हमारे इर्द गिर्द देखने को मिल सकते हैं।

सिया राम मय सब जग जानी,
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी।

कितनी शानदार है यह चौपाई। हमने इसे विविध रागों से खूब गाया है और गा रहे हैं परन्तु न जाने कब हमारा अन्त: का राम जागेगा और वर्तमान की विपन्नता से उबारेगा। कब हमारा रामराज्य का सपना साकार होगा। भगवान श्रीराम के जीवन दर्शन से, राम-लीला से शायद ही कोई अनभिज्ञ होगा। उनके पिता पुत्र का, गुरु शिष्य का, स्वामी सेवक का, भाई-भाई का, राजा-प्रजा का, आदि आदर्श संबंधों का हम खूब बखान करते हैं। व्यवहार में यदि ये संबंध आ जाएं तो कमाल हो जाएं।

रामनवमी और राम के बहाने हम शिक्षा एवं शिक्षक की बात कर लेते हैं। हम माने या ना माने समाज की प्रगति का मूल आधार शिक्षक ही है। इसीलिए अध्यापक को युग निर्माता कहा गया है। भगवान श्रीराम गुरु के आश्रम में ही सारी विद्या ग्रहण करते हैं। इस चौपाई से स्पष्ट है-

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई,
अल्पकाल विद्या सब आई।

विद्यालयों में पढ़ रहे बालक आखिर राम ही तो हैं। हजारों राम गुरु कृपा के बिना लंका विजय नहीं कर पाते। शिक्षार्थी को पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिलने से वह अपनी अन्त: में छिपी प्रतिभा को निखार नहीं पाता। एक अन्य चौपाई में कहा है-

प्रात: काल उठि कै रघुनाथा,
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।

शिक्षार्थी के पूर्ण समर्पण के अभाव में गुरु और माता पिता का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता। गुरु और माता पिता के संयुक्त प्रयास से बालक का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
प्रेम तें प्रगट हो ही मैं जाना।
परहित लागी तजइ जो दे हि,
संतत संत प्रसंसहि ते हि।

उपर्युक्त चौपाइयां जीवन का राज स्पष्ट करती है। हम अपने कर्तव्य को तभी भली प्रकार संपन्न कर पाएंगे जब हमारे दिल में प्रेम होगा, परोपकार की भावना होगी। जिस प्रेम से हम अपने बच्चे को पढ़ाते हैं क्या वहीं प्रेम हमें हमारी कक्षा में दिखाई देता है।

शबरी के बेर आज भी राम की बाट देख रहे हैं। वर्ग-विहीन समाज कब अस्तित्व में आएगा। कब हमें आरक्षण से मुक्ति मिलेगी। एक तरफ अट्टालिकाएं आसमान चूम रही है दूसरी ओर तिनका-तिनका जोड़ कर झोपड़ी बनाने में ही पसीना आ रहा है। कहीं गोदामों में अनाज सड़ रहा है कहीं दाने दाने के लिए शिशु बिलख रहे हैं। रामराज्य में ऐसा नहीं था। सामाजिक समानता के लिए किए गए प्रयत्न क्यों नहीं सफल हुए? आइए चिन्तन मनन कर संगठित प्रयासों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

भगवान श्रीराम अपनी तपश्चर्या के बल पर लंका विजय कर लेते तो कोई विशेष बात नहीं बनती। उन्होंने एक सामान्य व्यक्ति बनकर रीछ वानरों की सेना से लंका विजय का उदाहरण प्रस्तुत किया। यहां हमें प्रेरणा मिलती है कि कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालों यारो।

''अंगद का लंका में पाँव जमाना और हिला देने पर सीता को हार जाने का दाँव'' भक्ति की पराकाष्ठा है। अपने स्वामी की भक्ति पर इतनी निष्ठा, इतना समर्पण क्या इंगित करता है? सिद्धान्त कहने में अच्छे लगते है व्यवहार में अपनाने पर लाभ होगा कि नहीं इसमें संदेह रहता है। किसी कवि ने कहा है-

आदर्शों के पाँव न थकते संघर्षों की राहों में।
मानव का विश्वास न मरता मानवता की बाहों में।।

हमें अपने आप पर पूरा विश्वास होना चाहिए कि मैं राम का भक्त हूँ तो मुझे किसका भय, कौनसा कार्य मेरे लिए दुष्कर है। सही अर्थों में राममय जिया गया जीवन ही वास्तविक जीवन है।

भगवान राम के जीवन चरित्र पर अनेक विद्वानों ने टीकाएं लिखी हैं। विविध भाषाओं में रामायण लिखी गयी है, पढ़ी जा रही है और भविष्य में ऐसा ताना बाना बुना जाता रहेगा। ज्ञान की सरिता यूँ ही बहती रहेगी परन्तु लाभ तो वीर पुरुष ही उठा पाएंगे। जो राममय जीवन जीएंगे उनके आदर्शों को जीवन व्यवहार में अपनायेंगे और अपने अन्त:करण को परिष्कृत कर लेंगे वो ही जीवन का वास्तविक आनंद ले पाएंगें।

एक भजन में कहा गया है ''राम से बड़ा राम का नाम, नाम से बड़ा राम का काम।'' आज राम के काम हमारी बाट देख रहे हैं। रामभक्त हनुमान ने केवल राम नाम का जाप ही नहीं किया अपितु राम के कार्यो को संपन्न करने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। हनुमान जी अपनी गृहस्थी बसा सकते थे किन्तु उन्होंने युग की मांग को पहचाना उसी अनुरूप अपने भावी जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया इसी कारण आज राम से अधिक हनुमान के मंदिर है। भगवान श्रीराम कहते हैं-

चार पदारथ कर तल ताके।
प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके।।

अर्थ स्पष्ट है कि जिन्हें अपने माता पिता की सेवा प्राणों से भी प्यारी हो उनके लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष स्वत: ही उपलब्ध है।

हमारी भारतीय संस्कृति में प्रत्येक पर्व हमें जाग्रत करता है कि क्या हम अपने कर्तव्य के साथ न्याय कर रहें हैं। क्या हमारा अन्त: का राम जाग्रत है। क्या हम युग धर्म की पुकार सुन रहे है। भगवान श्रीराम ने अनेक प्रसंगों से हमारे अन्त: में छिपी कुटिलता को बाहर निकालने का आह्वान किया है । कबीरदास जी ने कहा है–

राम दड़ी चौड़े पड़ी सब कोई खेलो आय।
ऊँच नीच का भेद नहीं जीते सो ले जाय।।

शास्त्रों में कहा हैं यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में पूर्ण है यदि वह अन्त: की आवाज को अनसुनी न करे।

रामनवमी का पावन अवसर यही आह्वान करता है कि हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उत्तम जीवन को देखकर वैसे ही आदर्श अपनाने का प्रयास करें। राम ने स्वयं को एक साधारण व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। एक पुत्र के रूप में हो या भाई, पति अथवा मित्र रूप में भी जिसमें इतनी सरलता व विनम्रता होती है, वह हम भी रामनवमी पर राम को स्मरण करें, राम जिन गुणों के भण्डार थे, उन गुणों को स्मरण करते हुए अपने भीतर के राम को जगाएं। देखें, हम राममय होते हैं या नहीं। होंगे, जरूर होंगे, आखिर सिया राम मय सब जग जानी, करउ प्रणाम जोरि जुग पानी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन चरित्र विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने पर हमें शिक्षाएं देता नजर आता हैं। भगवान राम की पितृ भक्ति, माता के प्रति सम्मान, भाईयों के प्रति स्नेह एवं सखा व सेवक के प्रति वरदहस्त के भाव किसी भी युग व किसी भी व्यक्ति के लिए अतिशय अनुकरणीय हैं।

हमें रामनवमी के पावन अवसर पर भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र से शिक्षाएं ग्रहण करके अपने जीवन को आदर्श व संस्कारों से युक्त करने का प्रयास करना चाहिए, इसी में व्यक्ति, समाज, देश व प्रदेश सबका भला निहित है।

–व.अ., रा.उ.मा.वि. करमीसर (बीकानेर)
मो. 9414046628

प्रेरक प्रसंग

कर्म ही पूजा

❒ करुणा श्री

रामप्रसाद तांगा चलाकर अपने परिवार का पालन पोषण करता था। उसके एक ही बेटा था। नाम था ईश्वर। वह भी अपने पिता की तरह श्रमशील, ईमानदार और वफादार था। रात्रि के समय तांगा चलाने का काम बेटा ईश्वर ही करता था। एक दिन रामप्रसाद के गांव में एक पहुंचे हुए महात्मा जी पधारे। सभी उनकी कथा वाचन कला से वाकिफ थे। गाँव के मुखिया ने उनको आमंत्रित किया। नित्य रात्रि के समय महात्माजी कथा सुनाते। सभी गांववासी उन्हें सुनने आते । रामप्रसाद भी अपने परिवार के साथ जाता था। रामप्रसाद की पत्नी जानकी एक धार्मिक महिला थीं। उसने एक दिन अपने पति से कहा स्वामी कल पूर्णिमा है। मेरी इच्छा है कि अपने घर सत्संग कथा हो जाए। महात्मा जी भी आए हैं। सबको आनन्द आएगा।

रामप्रसाद ने कहा, ''ठीक है, महात्माजी से निवेदन करूंगा। मगर जानकी, तुम्हें मालूम है कि अपने दोनों घोड़े बीमार चल रहे हैं। मैं और ईश्वर उनकी देखभाल कर रहे हैं। समय पर दवा नहीं दी गई तो घर का गुजारा कैसे चलेगा। जानकी ने कहा ''महात्मा जी भी रोज–रोज नहीं आते हैं। बस मेरी इच्छा पूरी कर दो।'' रामप्रसाद ने पत्नी की इच्छा को नहीं टाला और महात्मा जी के पास गया। महात्मा जी ने स्वीकृति दे दी। रामप्रसाद प्रसन्न मन से घर आया और पत्नी से कहा जानकी, पूर्णिमा के दिन सत्संग कथा हो जाएगी। मैं अभी तैयारी कर देता हूँ। ईश्वर तो रात्रि में तांगा चलाएगा। बीमार घोड़ों की सेवा में लगा रहेगा। रामप्रसाद ने कथा की पूर्ण तैयारी कर ली।

पूर्णिमा का दिन आ गया। ईश्वर ने मां का हाथ बटा दिया। गांव के जानकार सत्संग कथा में आ गये। महात्मा जी ने भी अपनी विधि विधान पूजन व्यवस्था अपने हाथों से कर ली। जो कमी लगी उसे पूरी करवा ली। समय के अनुसार कथा आरंभ कर दी। महात्मा जी ने थोड़ी देर बाद कहा, 'बेटी जानकी, रामप्रसाद और ईश्वर को बुलाओ। दोनों के हाथों से होम करवाना है।' जानकी ने हाथ जोड़कर कहा, 'महात्मा जी, मैं क्षमा चाहती हूँ। स्वामी और पुत्र ईश्वर अपने बीमार घोड़ों की सेवा करते हैं। ईश्वर रात्रि को तांगा चलकर कमाई करता है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो बीमार घोड़े मर जाएंगे। फिर गांव के लोगों को कौन लेकर जाएगा। घर कैसे चलेगा। इसलिए अपना नित्य कर्म नहीं छोड़ा। रहा सवाल सत्संग कथा का। उसके लिए मैं और गांव के निवासी आपकी सेवा में खड़े हैं। होम तो गांव के मुखियाजी भी कर देंगे। लेकिन उन बेजुबान घोड़ों की सेवा कौन करेगा। महात्मा जी ने बड़ी शालीनता से कहा–बेटा सबसे बड़ा सत्संग कथा तो यही है जो अपनी कर्मनिष्ठा के साथ बंधा–जुड़ा है।

जानवरों के प्रति इतनी दया और सेवा करना ही सबसे बड़ा सत्संग कथा है। आज मैं धन्य हो गया। मेरा गांव में सत्संग करना मेरी सच्ची उपलब्धि है। इंसान अपने जीवन में जब तक कर्म की महत्ता नहीं समझेगा, तब तक उसकी पूजा, पाठ, सत्संग, व्रत व्यर्थ है। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे पूरे परिवार के साथ है।

ईश्वर भी उसी की मदद करता है। जो सभी जीवों के लिए सच्च मन से एवं निर्मल आत्मा से सोचता है। इतना कहकर महात्माजी ने होम लगाने के लिए गांव के मुखिया को बुला लिया।

यह कहानी हमें इस बात की शिक्षा देती है कि अपना कर्तव्य सर्वोपरि है। कर्तव्य का पालन करते हुए यथासंभव–यथासुविधा जितना कुछ बन सके, हम धर्म व अन्य समाज हित के कार्यों में हाथ बँटा सके। मगर कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ना सबसे पहले जरूरी है।

इस कहानी में रामप्रसाद अपने सामाजिक धर्म का पालन करने के लिए पत्नी का कहना मानकर महात्माजी की सत्संग करवाने के लिए सहमति देता है, मगर अपनी आजीविका कमाने तथा बीमार घोड़े की सेवा करने के लिए भी अपने कर्तव्य का पालन करने में कोई कसर नहीं रखता।

–एल–76, हिम्मत नगर, टोंक रोड, जयपुर
मो. 9460244392

महावीर जयन्ती

क्षमा आपको आनन्द से भर देगी

❒ अशोक जैन

करुणा एवं क्षमा के अवतार महावीर स्वामी का जन्मदिन इस माह 13 अप्रैल को है। महावीर के उपदेश विश्व में प्रेम, सहयोग, समन्वय, सहिष्णुता, करुणा एवं क्षमा जैसे उच्च मानवीय गुणों की स्थापना कर तु वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को सिद्ध कर सकते हैं। महावीर जयंती के पावन अवसर पर शिविरा के नामचीन लेखक श्री अशोक जैन की कलम से क्षमा दर्शन पर लिखा यह आलेख 'क्षमा आपको आनन्द से भर देगी' प्रस्तुत है। **-वरिष्ठ सम्पादक**

उनके पति के देहावसान को तीन वर्ष हो चुके हैं। बड़ा विशाल भवन है। भवन का किराया है। दो आज्ञाकारी पुत्र हैं। अच्छी पेंशन है। मैं उनसे मिलने गया था। बड़े अच्छे संबंध थे उनसे इसलिए पुरानी स्मृतियां जाग गईं। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने अपनी सास के डांटने और बुरे व्यवहार की घटनाएं गुस्से से भर कर सुनाईं। उनकी सास की मृत्यु को बीस वर्ष से अधिक हो चुके हैं। फिर भी उन घटनाओं के घाव अभी हरे हैं। फिर बात-बात में उन्होंने अपने पति पर गुस्सा बरसाया क्योंकि उन्होंने उस समय अपनी माता का पक्ष लिया था। यह चर्चा चल रही है एक वृद्ध महिला से जिसके सम्बन्ध में समझ आता है कि उसके सम्बन्ध अपने पति और सास से बहुत मधुर थे। मैंने उन्हें उन मधुर सम्बन्धों की याद दिलाई। वे बोलीं, 'आप सच कहते हैं हमारे सम्बन्ध बहुत मधुर थे लेकिन यह घटनाएँ सही हैं और इन्हें मैं भुला नहीं पाती हूं।'

हमारे जीवन में ऐसे बहुत से क्षण आते हैं जब कोई हमारा दिल दुखाता है। कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं जो हमारे दिल को चोट पहुंचाती है। बहुत से ऐसे क्षण आते हैं जब हम हमारी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाते। हमारे सम्बन्धों के जाल में ये घटनाएं हमारे अपनों के हाथों ही घटती हैं। हमारे अपने ही हमें बहुत चोट पहुंचाते हैं। हम अपने को बहुत बेबस पाते हैं। चोट तो खाते हैं, पर बोल नहीं पाते। बदला लेने की इच्छा होती है। लेकिन ले नहीं पाते और इन क्षणों में एक गाँठ बन्ध जाती है। यह गाँठ जब जब अनुभव में आती है तब-तब बदला लेने की इच्छा होती है। लेकिन बदला चुका नहीं पाते और यह कसक उस व्यक्ति के दिल में कसक बन कर रह जाती है।

मरने के बाद का बदला : कुछ लोगों का गुस्सा तो इतना अधिक होता है कि उनकी मृत्यु के बाद भी वे बदला चुकाना चाहते हैं। एक सज्जन ने जब बदला लेने की बात कही तो मैंने उन्हें याद दिलाया, कि 'जिन सज्जन से वे बदला चुकाना चाहते हैं, वे बहुत शक्तिशाली हैं और उनसे बदला चुकता नहीं हो सकता।' वे सज्जन क्रोध से बोले, 'मैं मृत्यु के पूर्व लिख जाउंगा कि मेरी सन्तानें उस परिवार से बदला चुकाएँ। मेरी आत्मा को तभी शान्ति मिलेगी जब बदला चुकता हो जावेगा।'

खून का बदला खून और आँख का बदला आँख का न्याय हम बहुत देख-सुन चुके हैं। इसके परिणाम भी हम देख चुके हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि इस समस्या का समाधान क्या है ?

समाधान का विचार : हर समस्या एक समाधान माँगती है? बिना समाधान खोजे समस्या पर विचार करना ही व्यर्थ है। अब पहली घटना पर विचार करें। किसी अपने ने अपने के साथ बीस वर्ष पूर्व कोई दुर्व्यवहार किया, उसने उसकी मृत्यु के बाद याद कर हम दुःखी हो तो हमें क्या मिलेगा ? क्या हम उस घटना को विस्मृत नहीं कर सकते ? यदि हम घटना को नहीं भूलते और घाव को हरा बनाए रखते हैं तो हमें क्या मिलेगा। हम उस दर्द की घुटन में घुटते रह सकते हैं। कसक अपने अन्दर पैदा कर घाव पर मक्खी मच्छरों को बुलावा भेज सकते हैं। मवाद पैदा कर सकते और इन दुःख दर्दों को सुना सुना कर सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकते हैं। सहानुभूति हमें कहीं नहीं मिलती। होता उलटा है। लोग हम पर हँसते हैं। हमारे दर्द को वे हवा देकर बढ़ा अवश्य सकते हैं।

एक दूसरा पक्ष : इसका एक दूसरा पक्ष है। आपके अपने जिन्होंने आपको कभी जाने अनजाने दुःख दिया है, उन्होंने कभी आपको सुख भी दिया होगा। आपके साथ आनन्द के क्षण भी गुजारे होंगे ही, आपको अत्यन्त कठिन समय में सहयोग भी दिया होगा। उन क्षणों को आप याद कर अपने प्रति आप आभा से भर सकते हैं। भूल सकते हैं कुछ मुठ्ठी भर दुःख भरे क्षणों को जिन्हें याद करने का अब कोई औचित्य हीं नहीं है।

विचार कीजिए, यदि हम बीस वर्ष पुरानी किसी घटना को याद कर दुःखी हैं तो इसमें दोष किसका है। इस घटना को तत्काल भूला जा सकता था क्षमा के द्वारा क्योंकि और कोई मार्ग नहीं है। हमारे अपने सदा हमारी ठुकरसुहाती करें, यह तो सम्भव ही नहीं है। हमसे पद में, उम्र में, सम्बन्धों में जो वरिष्ठ हैं उनको हमारे हित में निर्णय लेते हुए ऐसा कुछ करना पड़ सकता है जो हमें पसन्द न हो। ऐसे मामले में यदि सुखी रहना है तो उसे भूल जाना ही उचित है। उनको जानकारी हो या न हो, एक तरफा क्षमादान द्वारा हम अपने रिसते घाव को ठीक कर सकते हैं।

याद रखिए, जो मृत हो चुका या काल के अनन्त प्रवाह में बह कर कहीं अन्यत्र चला गया, ऐसे व्यक्ति से पहुँची चोट को याद रखना और उससे बदला लेने की सोचना तो कहीं से कहीं

तक विवेक सम्मत नहीं है। उसे तो क्षमा करो और भूल जाओ का सिद्धान्त चला आ रहा है। किन्तु इस सिद्धान्त से सुख शान्ति किसी को मिली हो, इसकी जानकारी किसी को नहीं है। राबर्ट ब्राउनिंग ने सच कहा है, 'क्षमा करना अच्छा है। भूल जाना सर्वोत्तम है।'

हमें जिसने भी चोट पहुंचाई है। नुकसान पहुंचाया है, हमारे लिए दु:ख का कारण बना है, उसके प्रति क्रोध स्वाभाविक हो सकता है किन्तु इस क्रोध को दबाए रखकर हम क्रमश: इसे द्वेष में परिणित करते हैं और यही द्वेष कालान्तर में घृणा का रूप ले हिंसा की ओर प्रेरित करता है। हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे अपराध एक दिन में नहीं होते, नफरत की आग में जलते-जलते अपराध की भावना जब पक जाती है तब ये घटनाएँ घटित होती हैं। इसे घृणा का उग्रतम रूप माना जा सकता है।

हम खुद ही जलते हैं इस आग में : इस क्रोध और घृणा की आग में वह व्यक्ति कहीं नहीं होता जिससे हमने दु:ख पाया है। वह तो बोल गया कुछ तो भी किन्तु हम क्रोध को पाले हुए हैं। वह दु:ख पहुंचा कर भूल गया, हम घाव को हवा देकर सहला रहे हैं। वह तो मर भी गया पर हम उसके दर्द को पाले मरे जा रहे हैं। इसलिए विद्वान लेखक एच.ई.फोस्डिक ने सच लिखा है, 'दूसरों से घृणा वैसा है जैसा चूहों से छुटकारा पाने के लिए अपने घर में आग लगा देना।'

तब प्रश्न उठता है क्या करें? उत्तर स्पष्ट है कि हम गलतियां करने वालों, दु:ख पहुचाने वालों को क्षमा करें। नफरत की आग को क्षमा द्वारा बुझा दें। कभी-कभी प्रश्न उठता है कि जब तक गलती करने वाला क्षमा न मांगे, अपनी भूल स्वीकार न करे तब तक हम उसे क्षमा कर कैसे सकते हैं ? क्या उसे अहसास कराए बिना क्षमा हो सकती है ? इसका सीधा सा उत्तर है हाँ। क्षमा करना हमारी गरज है। यदि हम क्षमा नहीं करेंगे तो नफरत की आग में हमें ही झुलसना है। आग लगाने वाला तो आग लगा कर चला गया। भूल गया, मर गया, हम उस आग को बचाकर कब तक अपने जीवन को तबाह करेंगे। हम एक तरफा क्षमा द्वारा इस आग को बुझा सकते हैं। आग के विस्तार को रोक सकते हैं। **क्षमा कर देना अपने आप में घृणा से छुटकारा पाना है। यह कमजोरी नहीं है, यह शक्ति है।** महाभारत में कहा गया है-**''जो व्यक्ति अपने उत्पन्न क्रोध का क्षमा द्वारा उसी प्रकार निराकरण कर देता है जिस प्रकार सर्प पुरानी केचुली का, वही सच्चा पुरुष कहा जाता है।''**

क्षमा करने की इस शक्ति को बेबसी मन मानिए और कोई रास्ता ही नहीं है। इस दुनिया में ऐसा कोई दुष्कृत नहीं है जिसे प्रेमपूर्वक क्षमा न किया जा सके। बदला लेने के सिद्धान्त के जो दुष्परिणाम प्राप्त हुए हैं उनसे तुलना करने पर लगता है कि क्षमा एक महासागर है। भारत में ही साम्प्रदायिक बदले की आग से चार हजार से ज्यादा दंगे फसाद आजादी के बाद से हो चुके हैं जिनमें वे सब दुष्कृत्य हुए जो मानवता के नाम पर कलंक हैं। क्रोध और घृणा की आग में बिल्कुल निर्दोष व्यक्तियों ने एक दूसरे का खून बहाया है, मकान जलाए हैं। अस्मत लूटी है। क्या नहीं किया है? यह क्रोध और घृणा क्षमादान से समाप्त किए जा सकते थे। विचार कीजिए इन अपराधों की रोकथाम के लिए किसे क्षमा नहीं किया जा सकता। साहित्यकार शरतचन्द्र ने गृहदाह में लिखा है, 'संसार में ऐसे अपराध कम नहीं हैं जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें।'

इस प्रकार यदि हम विचार करेंगे तो पाएंगे कि क्षमा के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग ही नहीं है। क्षमा रूपी शस्त्र केवल मनुष्यों के पास है। मनुष्य ही क्षमा कर सकता है। पशुओं में क्षमा का भाव नहीं पाया जाता। इसलिए दुनिया के सब धर्मो ने क्षमा को उच्च स्थान दिया है। पवित्र ग्रन्थ कुरान (42/43) में कहा गया है, **'जो धैर्य रखे और क्षमा कर दे तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से है।'** नव विधान (लूका 23/34) में कहा गया है, 'हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।' वेद व्यास जी ने महाभारत के वन और उद्योग पर्व में क्षमा की बड़ी विस्तृत विवेचना ही की है। वे कहते हैं, **'क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है।'**

इस प्रकार क्षमा के अतिरिक्त आनन्दपूर्वक जीने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। यदि हम घृणा करते रहेंगे तो क्रोध आता रहेगा और यह क्रोध का दावानल हमारे अन्दर धधकता रहेगा, इसका धधकना हमारे स्नायु मण्डल को नुकसान पहुंचाता रहेगा और यदि किसी दिन यह दावानल फूट पड़ा तो हिंसा का वह ताण्डव नृत्य होगा कि हमारे पास पछताने के सिवाय कुछ भी न रहेगा। यदि हम बदले के सिद्धान्त के अनुसार आँख के बदले आँख लेने के सिद्धान्त पर डटे रहे और ईंट का जवाब पत्थर से देते रहे तो दुनिया अन्धे, लूले, लंगड़े और अपाहिजों की बनेगी और फिर भी नफरत की यह आग बुझेगी नहीं, भभकती रहेगी। इस दुनिया को सुन्दर, हरी भरी बनाने का एक ही मार्ग है क्षमा।

यदि क्षमा रूपी अस्त्र का उपयोग हम करते रहें तो हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अग्नि तब तक ही जल सकती है जब तक आहुति डाली जाए। नफरत की अग्नि क्षमादान से अपने आप शान्त हो जाएगी। क्या हृदय से कीजिए। क्षमादान भूलने का नाम नहीं है।

क्षमा करने का बहाना मत बनाइए। हृदय से क्षमा कीजिए। ऐसी क्षमा आपको आनन्द से भर देगी। आप अपने आपको पक्षी की तरह हल्के पाएंगे।

आइए, क्षमा को अपना आभूषण बनाएं। देखिए आपके व्यक्तित्व में चार चांद लगाते हैं कि नहीं। क्षमा करने वाला बड़ा होता है, क्षमा बड़न को चाहिए।

-147, तोपखाना, रतलाम (म.प्र.)
मो. 09329828690

प्रार्थना

हे प्रभु आनन्द दाता
ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर
हमसे कीजिए।।
लीजिए हमको शरण में
हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक
वीरव्रतधारी बनें।।
हिन्द में पैदा हुए हैं
हिन्द की सन्तान हैं
हिन्द की खातिर मरें
वरदान ऐसा दीजिए।।
प्रेम का दरिया बहे दिल में
हमारे रात-दिन
फिर तुम्हें भूलें नहीं
शुभ ज्ञान ऐसा दीजिए।।

पृथ्वी दिवस : 22 अप्रैल

शुभ व सुकून भरी हो माँ धरती

❒ सुनीता चावला

प्रतिवर्ष बाइस अप्रैल का दिन दुनिया भर में पृथ्वी दिवस के रुप में मनाया जाता है- विश्व पृथ्वी दिवस है यह दिन। पृथ्वी को हम माता कहकर सम्मान प्रकट करते हैं। पृथ्वी का एक नाम धरती भी है। धरती का अर्थ है धारण करने वाली। इसका एक और गूढ अर्थ है धैर्य रखने वाली अर्थात जो धैर्यपूर्वक हमारी सब गलतियों और स्वार्थों को नज़रअंदाज करती है, वह धरती है। धरती माँ की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखकर प्रतिदिन रात्रि शयन के उपरान्त प्रातः उठते ही पृथ्वी को प्रणाम करने का विधान है।

वेदों में पृथ्वी की महत्ता उजागर करते हुए बहुत कुछ कहा गया है। एक प्रसिद्ध सूक्ति इस प्रकार है-**माता भूमि : पुत्रोऽहं पृथिव्याः**-अथर्ववेद (अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं। पृथ्वी मेरी मातृभूमि है।)

पृथ्वी के हम पर अनन्त उपकार हैं। हम उन्हें उतार नहीं सकते। पृथ्वी ने हमें आश्रय दे रखा है। हम उसका दोहन करने और यहाँ तक कि अपने स्वार्थवश उसका चाहे जैसा उपयोग करते नहीं शरमाते लेकिन वाह री धरती माता! वह न तो गुस्सा करती है और न ही ऐसा करने वालों को कोई सबक ही सिखाती है। माँ जो है ना। हाँ, अति होने पर भूकम्प जैसे सबक हमें आँखें खोलने का सबक देते हैं। पृथ्वी पर रहने वालों के सुखी व स्वस्थ रहने की कामना की जाती है। शास्त्रों में कहा है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।

इस धरती पर निवास करने वाले सभी महानुभाव सुखी हों, सब नीरोग और तेजस्वी हों। हम सबका भला होता देखें और किसी को किंचित भी दुःख-शोक न हो। ऐसी अद्भुत प्रार्थना की जाती है।

पृथ्वी पर खेती होती है। अन्न का उत्पादन पृथ्वी पर होता है। हरे भरे वनों से आच्छादित धरती बादलों को अपनी ओर आकृष्ट कर वर्षा करती है। ताल तलैया भर जाते हैं। पशु-पक्षी हर्ष मनाते हैं। धरतीवासी स्त्री-पुरुषों और बालक-बालिकाओं के चेहरे प्रसन्नता से दीप्तिमान हो जाते हैं। यह अमृत-सा जल न केवल हमारी प्यास बुझाकर जीवन प्रदान करता है अपितु खेतों के माध्यम से खलिहान भरता है तथा हमारे प्राणों की रक्षा करता है।

और क्या नहीं करती पृथ्वी? विभिन्न देशों और देश के विभिन्न भागों में स्थापित तीर्थस्थान देश और विश्व को जोड़े रखते हैं। सांस्कृतिक वैभव और सद्भाव के प्रतीक होते हैं ये स्थान। पर्यटन स्थल भी यही काम करते हैं। पृथ्वी पर देवालय, विद्यालय, औषधालय, विश्रामालय न जाने कौन-कौन से आलय होते हैं। वह स्वयं सबसे बड़ी आलय होती है। व्यापार और कारोबार के सिलसिले में जितने भी उपक्रम हैं, वे सब पृथ्वी पर ही तो है। पृथ्वी माता बस इतना ही चाहती है कि हम उसके पुत्र स्वार्थ की आँधी में अंधे होकर उसकी सन्तानों का अहित न करें। वह माँ की तरह अपने हित-अहित की परवाह नहीं करतीं।

जिस प्रकार एक माँ अपने जायों के अपराधों की परवाह नहीं करते हुए अपना सब बिगाड़ सहन कर भी उनका भला चाहती है; बल्कि कहना चाहिए कि उसे वह अपराध दिखता ही नहीं वैसे ही पृथ्वी माता भी हमारे सब अपराध क्षमा करती है। जरा कल्पना करें-यदि पृथ्वी अपनी चाल छोड़ दें तो क्या होगा? पृथ्वी पर बसी सभ्यताओं को कालातीत होने में किंचित भी देर न लगे।

आइये कुछ तथ्यों पर चर्चा करते हुए वर्तमान स्थिति को देखते हैं। सम्पूर्ण सौर मण्डल में पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन है। अतः पृथ्वी ग्रह की हिफाजत उचित ढंग से की जानी आवश्यक है। बढ़ते प्रदूषण से सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। धरती का रक्षा कवच ओजोन खतरे में है। ओजोन में सन् 1980 में जो छेद 32.7 लाख वर्ग किमी. था, वह 2007 में ही ढाई करोड़ वर्ग किमी. हो गया था। अनुमान कहते हैं कि क्षरण की यही गति रही तो 2050 तक ओजोन खत्म ही हो सकती है। जंगलों को बेतहाशा काटने से जंगली जानवरों की अनेक प्रजातियां लुप्तप्रायः हो गई है। अब ये जानवर चित्रों में ही रह गए हैं। सच तो यह है कि पृथ्वी जैसे जल रही है और मानवीय जीवन खतरे में है। अंध औद्योगीकरण के कारण जल अशुद्धियाँ घर कर रही है। पीने को स्वच्छ पानी ही नहीं मिलेगा तो क्या स्थिति होगी? मानव की स्वार्थपूर्ण विलासिता का जीवन जीने की प्रवृत्ति से लगता है कि जैसे सब कुछ लील लेगी।

बहरहाल, आवश्यकता इस बात की है कि हम जो है उसे सम्भालें। जो खराबी हो चुकी है, उसे ठीक करने का ईमानदार प्रयास करें। इसके लिए सबसे पहले तो हमें पृथ्वी माता के प्रति हमारे दिल में आदर भाव पैदा करना होगा। आइये, हम हमारी पुरातन परम्परा के अनुसार **''धरती माता थे बड़ा थांसू बड़ो न कोय''** मानकर वायु, जल, मृदा प्रदूषण से धरती को बचाएं। जंगलात के पीछे निहित वन देवता को मानकर पेड़ न काटे, प्रत्युत अधिकाधिक पेड़ लगाकर धरती की हरीतिया बढ़ाएं। जंगली जानवरों का शिकार न करें। कार्बनडाइ-आक्साइड उत्सर्जन को कम कर ओजोन सुरक्षा कवच बनाए। जल का बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करें। पानी व ऊर्जा बचाएं। कूड़ा-करकट तथा अन्य अपशिष्ट पदार्थों को जहां चाहे वहां फेंकने की प्रवृत्ति को त्याग कर उनको सही तरीके से खपाया जावे।

विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर हम पृथ्वी वासियों को चाहिए कि हम उस पर रहते हुए पृथ्वीपुत्र के रुप में अपने निहित उत्तरदायित्वों का पूरी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ पालन करें। हम वह कोई भी काम नहीं करें जो हमारी पृथ्वी की गरिमा एवं गौरव को कम करने वाला अथवा उसे हर्ज पहुँचाने वाला हो। धरती माँ यदि सच्चे अर्थों में हमारी माता है तो हम भी सच्चे अर्थों में उसकी संतान बनकर दिखाएँ।

-सहायक निदेशक (शिविरा)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414426063

अम्बेडकर जयंती

महानायक डॉ. भीमराव अम्बेडकर

❒ नारायण लाल टाक

बालक भीमराव के माता-पिता निर्गुण सम्प्रदाय कबीर पंथ के अनुयायी थे। इनकी माँ अपने पीहर में इसी पंथ-धर्म की पावनता में पली और बड़ी हुई थी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश के गांव छानी महू में एक महार परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम रामजी राव सकवाल और माता का नाम भीमाबाई था। अम्बेडकर अपने माता-पिता की सबसे छोटी और 14वीं सन्तान थे। भीमराव स्वयं अपने माता-पिता से कहते थे कि-'मैं आपका चौदहवां रत्न हूं', यह बात सत्य भी थी। उन्होंने इस बात को यथार्थ सार्थक सिद्ध करके भी दिखा दिया।

भीमराव के पिता रामजी राव सकवाल कबीर के भजनों को मधुर आवाज में गाते थे। लोग इनके भजनों को बहुत चाव से सुनते थे। जब वे गाते थे तो पूरा वातारण ही खामोश और पवित्र हो जाता था। सन्त परम्परा में ऐसे वातावरण का बालक भीम के दिल पर बड़ा गहरा असर पड़ता रहा। इनकी माँ भीमाबाई भी कबीर पंथ का अनुसरण करती थीं। उन्हें कबीर दास के बहुत से दोहे और भजन कंठस्थ थे। भीमराव के जीवन को संवारने का सबसे ज्यादा श्रेय उनके पिता को ही जाता है जो कि फौज में सूबेदार के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। इनके पिता सैनिक स्कूल के प्रधानाध्यापक के पद पर भी रह चुके थे। सन् 1907 में भीमराव अम्बेडकर ने दसवीं की परीक्षा पास की तथा सन् 1912 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

बड़ौदा के महाराज सिया जी राव गायकवाड़ ने सन् 1913 में इन्हें उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका के न्यूयार्क शहर में भेज दिया। वहां से इन्होंने अर्थशास्त्र में स्नात्तकोत्तर की उपाधि हासिल की। सन् 1916 में भीमराव अम्बेडकर लन्दन चले गए। लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड पोलिटिकल साइंस संस्थान से डी.एस.सी. तथा बार-एट-लॉ की उपाधियां प्राप्त कर पुनः स्वदेश लौट आए।

स्वदेश लौट आने पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बड़ौदा नरेश ने मिलट्री सचिव के पद पर नियुक्त कर दिया। बड़ौदा नरेश डॉ. भीमराव को अपना वित्त मंत्री बनाना चाहते थे किन्तु यहां उनकी अस्पृश्यता उनके लिए रुकावट बनी। सन् 1918 में मुम्बई के सिन्डेहम कॉलेज में राजनीति अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बने। उच्च वर्गीय हिन्दुओं से अपना हित साधने के लिए ब्रिटिश सरकार ने दलितों का जीवन उजाले के बजाय अंधेरे की ओर धकेल दिया। यह उस समय के इतिहास का अंधकारमय पक्ष था। इन्हीं दिनों में इन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र में अनेकानेक लेख दलित वर्ग के समर्थन में लिखे। डॉ. भीमराव स्वयं ने 'मूक नायक' और 'बहिष्कृत भारत' नाम के समाचार पत्रों का सम्पादन किया। भारतीय दलित अधिवेशन के प्रथम समारोह की अध्यक्षता इन्होंने की।

सन् 1920 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुनः अध्ययन के लिए लन्दन चले गये थे। 1942 से 1946 तक वायसराय की कार्यकारिणी के श्रम मंत्री रहे। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल के वित्त मंत्री भी बने। डॉ. भीमराव ने अपने जीवन काल में अनेकों पुस्तकें लिखीं।

भारत के संविधान निर्माताओं में डॉ. भीमराव की अहम भूमिका थी। इन्होंने जीवनपर्यन्त दलितों की मुक्ति और सामाजिक समता के लिए संघर्ष किया। इनका लेखन कार्य भी इसी संघर्ष और सरोकार से जुड़ा हुआ था। दलित वर्ग में पैदा हुए डॉ. अम्बेडकर बचपन से ही जातिगत आधारित शोषण-उत्पीड़न एवं अपमान के कड़वे घूंट पी चुके थे।

डॉ. अम्बेडकर के प्रेरक के रूप में गौतम बुद्ध, कबीर और महात्मा ज्योतिबा फूले रहे। दलितों के उद्धार का मूल मंत्र इन्हीं से प्राप्त किया। डॉ. अम्बेडकर के जन्म दिवस को दलित एवं अन्य वर्ग आज उत्सव के रूप में मनाते हैं, जबकि सत्यता तो यह है कि समस्त भारतवर्ष इनकी जयन्ती को श्रद्धा के साथ मनाते हैं। सभी शालाओं, कॉलेजों में अनेक कार्यक्रम रखे जाते हैं। संसद भवन में स्थित डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर हमारे सभी राजनेता पुष्प अर्पित करते हैं।

डॉ. अम्बेडकर दलितों के मसीहा थे। सामाजिक क्रांतिकारी, कानूनविद, अर्थशास्त्री और श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ सलाहकार थे। ऐसे महान दार्शनिक व्यक्ति किसी जाति विशेष, वर्ग समाज, सम्प्रदाय अथवा क्षेत्र विशेष में जन्म नहीं लेते बल्कि उनका दृष्टिकोण, उनके सोचने का तरीका-नजरिया उन्हें समृद्धशाली बना देता है। यह हमारा सौभाग्य है कि भारत की पावन धरा पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे सपूत पैदा हुए। संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर के जीवन और दर्शन पर अनेक पुस्तकें व यथेष्ट सामग्री उपलब्ध है। हाल ही में लेखक श्री मोहनदास नैमिसराय द्वारा बाबा साहेब की जीवनी पर 304 पृष्ठों का उपन्यास प्रकाशित किया है।

खुशबू फूलों की सुगंध केवल उधर जाती है, जहां हवाएं ले जाती हैं, परन्तु अच्छे कामों की सुगन्ध उधर भी जाती है जहां हवा नहीं जाती। उत्तरी भारत महाराष्ट्र के 'महार' जाति वर्ग के लोग जुझार और सदा से ही लड़ाकू रहे हैं। इस जाति के ये लोग शिवाजी की फौज से लेकर वर्तमान भारतीय सेना के बहादुर सैनिक के रूप में जाने जाते हैं। कबीलों पर हमला करने वाले आतताइयों को जवाब देने के लिए इस जाति ने अपना खून बहाया है। यही इनकी विशेषता थी, यहां इनके बहादुरी अथवा शौर्य के उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का बाल-विवाह हुआ था। जब वे कक्षा पाँच के विद्यार्थी थे। इनकी बालिका वधू का नाम रामीबाई था। रामीबाई विवाह के समय मात्र नौ वर्ष की थी। डॉ. भीमराव के कहे अनुसार-'माता-पिता अपनी सन्तान को जन्म देता है, वे भाग्य विधाता नहीं।' हाँ अम्बेडकर ने तीन महापुरुषों को अपना प्रेरणा स्रोत बताया। पहले कबीर, दूसरे महात्मा ज्योतिबा फूले और तीसरे महात्मा बुद्ध। समाज सुधारकों की पंक्ति में आपका नाम उच्च शिखर पर आता है, सदा आता रहेगा। वे 6 दिसम्बर 1956 को हमेशा के लिए गहरी नींद में सो गए, उन्हें शत-शत नमन।

-व.लि., छीपों का मौहल्ला,
जी.एस. रोड, बीकानेर-334001
मो. 9252726037

मुंशी प्रेमचन्द का शताब्दी दस्तावेज और आगे ''हमारी प्राथमिक शिक्षा''

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने की प्रेरणा

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा शताब्दी पूर्व 1909 में ततसमय की प्राथमिक शिक्षा के बारे में लिखा लेख हमारी प्राथमिक शिक्षा शिविरा के अंक में प्रकाशित किया गया था। साथ ही सुधि पाठकों से उसे पढ़ने तथा विश्लेषण कर लिखने की प्रार्थना की गई थी। प्रसन्नता है कि हमारे वरिष्ठ सदस्य भाई बजरंगलाल जी मजेजी ने निबन्ध को पढ़कर उस समय की कतिपय स्थितियों को चिह्नित कर उन पर वर्तमान स्थिति का लेखा प्रस्तुत किया है। हम यही तो चाहते थे। इस हेतु हम उनके प्रति आभारी हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

शिविरा में प्रकाशित मुंशी प्रेमचन्द का आलेख शताब्दी दस्तावेज ''हमारी प्राथमिक शिक्षा'' स्वतंत्रता पूर्व की शिक्षा व्यवस्था का सटीक दिग्दर्शन कराता है। इन 66 वर्षों के बाद देश की शिक्षा की स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु समय-समय पर शिक्षा आयोगों का गठन कर, उनके द्वारा की गई अनुशंसाओं के आधार पर तत्कालीन शिक्षा मंत्रियों-सरकार ने उपलब्ध सीमित बजट से शिक्षा व्यवस्था सुधारने का प्रयास किया गया है। उद्घोषित भी किया जा रहा है कि पूर्वापेक्षा शिक्षा का विकास हुआ है। शिक्षा का महल वृहद क्षेत्रों में विकसित हुआ है, जिसकी प्रशंसा अमेरिका के राष्ट्रपति भी अक्सर करते हैं। भारतीय बुद्धिमता का लोहा मानते हैं जो देश के लिये गर्व की बात है। आकर्षक भव्य कंगूरों से निश्चित ही भवन की सुन्दरता परिलक्षित होती है। परन्तु, नींव की मजबूती पर ध्यान न देकर मात्र आत्मप्रशंसा के ख्याली महल धूल धूसरित होते देखे गये हैं। भारत में 250 विश्वविद्यालय, 1500 रिसर्च इंस्टीटयूट, 10428 उच्च शिक्षा संस्थान है। प्रतिवर्ष शिक्षण संस्थानों से 2 लाख इंजिनियर, 3 लाख तकनीकी शिक्षित एवं 20 लाख स्नातक विद्यार्थी निकलते हैं। भारत का साक्षरता प्रतिशत 20 से 68 प्रतिशत के लगभग हुआ है। अकेले उच्च शिक्षा में स्तरोन्नति हेतु 12-13 वीं पंचवर्षीय योजना में 80 करोड़ हमसे स्वीकृत कर 30 नये केन्द्रीय विश्वविद्यालय 7 नये आई.आई.एम, 37 नये तकनीकी संस्थान और जिला स्तर एवं 373 नए कॉलेज स्थापित करने का प्रावधान किया गया है। इसके बावजूद भारत के संसद सदस्य की प्राक्कलन समिति एवं राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने उच्च शिक्षा की हालत पर चिंता जताई है। क्यू.एस.वर्ल्ड रैंकिंग में विश्व के 200 विश्वविद्यालयों में भारत का संस्थान एक भी नहीं है। देश में अभी भी मात्र 13 प्रतिशत विद्यार्थी उच्च शिक्षा ले पा रहे हैं। उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा का हाल अभी भी बेहाल दिखाई दे रहा है। भले ही राजनेता सरकार शिक्षा व्यवस्था से सन्तुष्ट नजर आ रहे हों, तदपि वास्तविकता पर ध्यान दें तो व्यवस्था खोखली नजर आयेगी, जिस पर चिन्तन कर सुधार की आवश्यकता है। मुंशी प्रेमचन्द के 1909 में प्रकाशित आलेख ने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था पर सटीक टिप्पणी करते हुये प्राथमिक शिक्षा की वास्तविक स्थिति को बताया है। विकासशील भारत में पूर्वपेक्षा शिक्षा स्थिति में परिवर्तन तो हुआ है। परन्तु आमूलचूल परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। लेख में वर्णित पेराग्राफ के शब्द अनुसार तुलना करें तो देश की शिक्षा की वर्तमान स्थिति दृष्टिगोचर होगी जिसे स्वीकार कर, समग्र रूप से सरकार, शिक्षक, अभिभावक को परिवर्तन की ओर सम्मिलित प्रयास करना अपेक्षित होगा।

मुंशी प्रेमचन्द के आलेखानुसार 1909 में स्वतंत्रता पूर्व की शिक्षा की स्थिति (आलेख में लिखे वाक्य)

''एक पेड़ के नीचे इधर-उधर कूड़ा करकट पड़ा हुआ है और शायद वर्षों से झाड़ू नहीं दी गयी।''

''जिस आदमी को पेट की फिक्र से आजादी नसीब न होगी वह तालीम की तरफ क्या खाक ध्यान देगा? ऐसे बहुत से जिले हैं जहां अभी तक शिक्षकों (मुदर्रिसों) को चार या पाँच रुपये से ज्यादा तनख्वाह नहीं मिलती। ऐसे आदमियों के हाथों में हमारी सरकार ने रिआया के हाथों तालीम रख दी है और ताज्जुब किया जाता है कि तालीम हालत क्यों ऐसी रद्दी है।''

''अपर प्राइमरी मदरसों में दो-दो, तीन-तीन दर्जे एक आदमी के सुपुर्द रहते हैं। इसका लाजिमी नतीजा यह होता है

स्वतंत्रता से वर्तमान तक शिक्षा की स्थिति अपेक्षित परिवर्तन की आवश्यकता-सुधार अपेक्षित

सरकार द्वारा विद्यालय भवन, कक्षा कक्ष के निर्माण कराये हैं। राजस्थान में 466 विद्यालय भवन विहीनों परन्तु भवन के आस-पास शौचालय, गलियारों और खेल मैदान पर कचरा, गंदगी देखे जा सकते हैं। संस्था प्रधान, शिक्षक, विद्यार्थी इसी गंदगी में ओर गंदगी करते नजर आ जायेंगे।

वर्तमान में छठे वेतनमान के कारण निसंदह शिक्षकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। लेकिन कम वेतन, मानदेय पर अस्थायी विद्यार्थी मित्र, शिक्षा मित्र, शिक्षाकर्मी, संविदा शिक्षक से पूर्ण वेतन पाने वाले शिक्षक की तुलना में अच्छी शिक्षा या कार्य लिया जाना मानवीय दृष्टि से ठीक नहीं है। अस्थायी होने के कारण जिम्मेदारी नहीं होने से व्यवस्था में कमी रह सकती है। शिक्षा विभाग में अनिवार्य रूप से पूर्ण वेतनधारी प्रशिक्षित ही लगने चाहिये। विद्यालय में रिक्त पद नहीं रहना चाहिये।

देश में वर्तमान में विद्यालयों की यही स्थिति है। जन प्रतिनिधियों की मांग पर सरकार ने अनगिनत स्कूल कमोन्नत कर दिये, संकाय खोल दिये, प्राथमिक विद्यालय

कि मुदर्रिस किसी दर्जे को भी ठीक से नहीं पढ़ा सकता है। लड़के साल-साल भर से पढ़ने आते हैं, मगर अभी हरुफ लिखना भी नहीं आता।''

''इसीलिये सरकार सचमुच शिक्षा की उन्नति चाहती है, सच्ची उन्नति, कागजी और नुमाइशी नहीं तो मिस्टर डिलफांस की राय के अनुसार मुदर्रिसों की तादाद और तनस्वाह बढ़ाये।....कम की तालीम एक ऐसा मसला है जिस पर कितना ही खर्च हो, उसे बेकार नहीं कहा जा सकता।''

''रुपये की कमी एक ऐसा बहाना है जो गवर्नमेंट के लिये कभी कच्चा नहीं कहा जा सकता। इनके साधन असीम है, जब लड़ाई के खर्च साल-ब-साल बढ़ते जाते हैं। अफसरों के ऐश सहुलतों पर रुपया कौड़ियों की तरह लुटाया जा सकता है तो गरीबी या तंगदस्ती का हीला कभी यकीन काबिल नहीं ठहर सकता।''

''पिछले दो-तीन वर्षों से हरेक जिले में मास्टरों को पढ़ाने का ढंग सिखाने के लिये दो-तीन मदरसे कायम किये हैं। .... जाहिर है कि जो आदमी खुद मिडिल तक तालीम पाये हुए हो वह मिडिल पास मुदर्रिसों को पढ़ाने का ढंग क्या सिखायेगा?''

''मुदर्रिसों के सिर पर इतना बौझ भी काफी नहीं समझा जाता। कम से कम 25 फीसदी हल्के बन्दी मदरसे ऐसे हैं जिनमें मुदर्रिस तालीम के अलावा डाकखाने का काम भी करते है।''

''दूसरी बड़ी जरूरत पाठ्यक्रम में सुधार करने की है। इस प्रश्न पर न शिक्षा विभाग न गवर्नमेन्ट पक्की राय कायम कर सकी। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ।''

''शिक्षा के लिये तीसरी जरुरत ठीक मकान की है। आमतोर पर मदरसों की इमारती हालत बेहद अफसोस जनक है।.... उन्हें देखकर मवेशीखाने या अनाथालय का ख्याल पैदा होता है।''

''कितने ऐसे पत्रकार या रिजेल्यूएशन पास करने वाले वकील हैं जिन्होंने किसी जिले का दौरा करके यह पता लगाया हो कि कितने मदरसों में इतारत है और कितनों में नहीं।''

खोल दिये। परन्तु, शिक्षकों की पूर्ति एवं भर्ती का मात्र आश्वासन देते आ रहे हैं। अध्यापकों की कमी के चलते विद्यार्थियों को क्रमोन्नत किया जा रहा है। ये अधपढ़े विद्यार्थी देश को कैसा माहोल देंगे यह विचारणीय है। एन.जी.ओ. **प्रथम** की रिपोर्ट यह दर्शाती हैं। देश में प्रधानमंत्री के अनुसार 70 लाख तथा राजस्थान के राज्यपाल के अनुसार 70 हजार शिक्षकों के पद रिक्त है।

विद्यालय खोलने, क्रमोन्नत करने, संकाय खोलने के साथ ही आवश्यकतानुसार पद सृजित कर, बजट स्वीकृति करना चाहिये। तभी शिक्षा व्यवस्था सुधर सकती है। देश में प्राथमिक सं माध्यमिक स्तर पर 45 लाख महाविद्यालय स्तर पर 30 लाख शिक्षकों की कमी से चल रहे शिक्षालय देश का भला नहीं कर रहे हैं।

सरकार शैक्षिक उन्नयन तो चाहती है लेकिन केन्द्र का शिक्षा पर कुल बजट 6 प्रतिशत दिया गया है जिसमें शिक्षा कार्यालयों का व्यय भी सम्मिलित है। कई बार बजट स्वीकृत न होने से शिक्षकों को 6-6 माह तक वेतन नहीं मिलता जबकि अधिकारियों को समय पर वेतन मिल जाता है। जन प्रतिनिधियों के वेतन में भी बढ़ोतरी होती रहती है। शिक्षा बजट कम से कम 10 प्रतिशत किया जाना आवश्यक है।

देश में प्रशिक्षण हेतु एस.टी.सी., बी.एड. कॉलेज खोल दिये गये हैं। वहां प्रशिक्षकों की कमी के कारण ठीक प्रकार से प्रशिक्षण नहीं हो पाता है। निजी प्रशिक्षणालयों की स्थिति से पता लगेगा कि आवेदक फीस जमा करा देता है। उपस्थिति से अतिरिक्त फीस देकर मुक्त हो जाता है। यहां तक कि मात्र परीक्षा देने जाता है। ऐसे प्रशिक्षण से निकला शिक्षक कैसा होगा? कल्पना की जा सकती है।....

सर्व शिक्षा अभियान में नियुक्त संकुल प्रभारी, दक्ष प्रशिक्षक, संदर्भ व्यक्ति विषयानुसार समकक्ष ग्रेड के शिक्षकों को आमुखीकरण प्रशिक्षण दे रहे हैं। उनका कितना प्रभाव उनसे वरिष्ठ शिक्षक पर पड़ता है, यह विचारणीय है।

वर्तमान शिक्षकों को सर्वोच्च न्यायालय की व्यवस्था के वावजूद भी कई गैर शैक्षिक कार्य यथा बी.एल.ओ. मिड डे मिल, कई प्रकार की गणना, निर्वाचन, पल्स पोलियो जैसे कार्यों में शिक्षकों को अनिवार्य रूप से कार्य करना पड़ता है। इस कारण शिक्षण व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

देश के मानव संसाधन मंत्री पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था को प्राथमिकता देकर पाठ्यक्रमों में पाश्चात्य साहित्य की भरमार कर रहे हैं। राज्यों की स्थिति, भौगो, लिक परिवेश, निवासियों की आवश्यकता सम्पूर्ण देश में एक समान मानकर रटने की विषय वस्तु दी जा रही है। देहात के विद्यार्थी प्रतियोगिता परीक्षा में न्यून संख्या में भाग ले पा रहे हैं।

यद्यपि लोक जुम्बिश, सर्वशिक्षा अभियान योजना के अन्तर्गत विद्यालय निर्माण योजना एवं बहुत सुधार हुआ है तथापि 30540 स्कूलों में प्रधानाध्यापक कक्ष नहीं है। 45 हजार 415 स्कूलों में खेल मैदान नहीं है। 40 प्रतिशत विद्यालयों में बालिकाओं के लिये शौचालय नहीं है। 15 हजार 910 स्कूलों में चार दीवारी नहीं है। पेयजल बिजली की व्यवस्था तो कई विद्यालयों में नहीं है। मनरेगा योजना में मिट्टी कार्य में हो रहे धन के अपव्यय को रोक कर पक्के विद्यालय आवश्यकता के निर्माण कार्य कराने की आवश्यकता है।

सार्वजनिक कार्यकर्ता तो इस दृष्टि से कम ही सचेत है। जिला शिक्षा अधिकारी भी अपने कार्यकाल में जिले के सभी विद्यालयों में नहीं जा पाता है। शिक्षक की सूचना एवं बाबू द्वारा दी सूचना पर ही लगभग निर्भर रहते हैं। फिर भी कह सकते है कि सूचना तंत्र मजबूत हुआ है।

-प्रधानाध्यापक (से.नि.)
सांपला वाया केकड़ी जिला-अजमेर
मो. 9460894708

प्रशिक्षण-आमुखीकरण

संस्था प्रधानों हेतु लीडरशिप प्रशिक्षण

❒ शमीम परिहार

फरवरी माह की 17 से 19 तारीख को न्यूपा (National university of Edu. Planning & Administration) एवं यूकेरी (U.K. India, Education & Research Initiatives) के समर्थन द्वाराराष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RAMSA) के अर्न्तगत देश में दो राज्य तमिलनाडु व राजस्थान का चयन किया गया। तथा राजसीन में भी यह सौभाग्य केवल दो जिलों को प्राप्त हुआ जिसमें भरतपुर के साथ बीकानेर भी सम्मिलित है। जहाँ के प्रधानाचार्य व प्रधानाध्यापकों को नेतृत्व क्षमता के विकास हेतू प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम का भव्य आगाज़ किया गया तथा इस प्रशिक्षण के कार्यक्रम का प्रारम्भ U.K. से आये यूकेरी के प्रतिनिधि Mr. Robiusou के प्रेरक शब्दों से हुई। जिन्होंने राजस्थान की कला, संस्कृति को भी इस प्रशिक्षण में सम्मिलित करते हुए राजस्थान के प्रति अपने लगाव को व्यक्त किया।

तीन दिनों तक चले इस प्रशिक्षण में समस्त संस्थाप्रधानों को विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर प्रत्येक समूह को तीन-तीन दक्ष प्रशिक्षकों के साथ न्यूपा के अनुभवी दिग्गजों ने भी प्रशिक्षण के साथ-साथ अपने अनुभव साझा किये।

यह प्रशिक्षण अपने आप में अद्भूत एवं अत्यन्त उपयोगी रहा, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण यही से मिल जाता है कि सभी संस्थाप्रधानों ने बहुत ही तल्लीनतापूर्वक न केवल इस प्रशिक्षण में भाग लिया बल्कि प्रशिक्षणोपरान्त नव संस्था प्रधानों ने लीडरशिप को अधिगमित भी किया।

सौभाग्य से नव संस्था प्रधानों को भी इसमें शामिल किया गया और जिसके अर्न्तगत मुझे भी इस प्रशिक्षण में भाग लेने का मौका मिला।

प्रशिक्षण आवासीय था, शायद आवासीय रखने का मक़सद यही था कि प्रशिक्षणार्थी पूरी तरह से एकाग्रचित व ध्यानमग्न होकर प्रशिक्षण ले तथा प्रशिक्षण का उद्देश्य सार्थक हो सके।

इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत चूंकि प्रत्येक वर्ग को तीन दक्ष प्रतिक्षकों के साथ-साथ न्यूपा के अधिकारियों ने भी अपने अमूल्य अनुभव साझा किये।

इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत लीडरशिप व मैनेजमेन्ट के मध्य के मामूली अन्तर को विस्तृत रूप से समझाया गया। अनुभवहीन नव संस्था प्रधानों को लीडरशिप के विभिन्न पहलूओं की और विभिनन उदाहरणों के द्वारा ज्ञान प्रदान किया और बताया गया कि लीडरशिप एक लीक पर चलने वाला गुण नहीं है बल्कि सर्वत्र गुणों व सुकृत्यों का एक मेल है।

इस प्रशिक्षण के दौरान लीडरशिप का सही अर्थ यही उभरकर आया कि एक संस्था प्रधान का सर्वप्रथमेव उद्देश्य अपने विद्यालय के बच्चों का सार्वत्रिक विकास करना है इस उद्देश्य में वह अकेला नहीं है बल्कि उसे अपनी शाला के समस्त शिक्षकों का अतूल्य सहयोग भी प्राप्त होता है।

समस्त शिक्षकों के साथ वह टीमवर्क की भांति कार्य करता हुआ जिस भी प्रकार की परिस्थिति मिले उसी में वह संभावनाओं की खोज करता हुआ निरन्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन का कार्य करता है।

इस प्रशिक्षण के दौरान न्यूपा की एक विदुषी प्रतिनिधि श्रीमती रश्मि सिन्हा ने लीडरशिप के साथ समस्त संस्था प्रधानों का ध्यान विद्यार्थियों की अप्रत्यक्ष मजबूरियों की तरफ आकृष्ट करने का प्रयास किया जिसमें बाल मनोविज्ञान के ज्ञान की महत्ता को भी स्पष्ट किया।

इस क्रम में इन्होंने एक बहुत ही संवेदनशील उदाहरण प्रस्तुत कर नेतृत्व को थोड़ा संवेदनशील बना दिया। इन्होंने बताया कि एक बार एक विद्यालय में एक छात्रा के स्कूल बेग में चाकु पाया गया जिसकी शिकायत बच्चों द्वारा शिक्षक को किये जाने पर उस शिक्षक ने न केलव छात्रा को डाँट कर घर भेज दिया वरन् अभिभावकों को शाला बुलाकर उसकी शिकायत कर टी.सी. भी काट दी।

लेकिन इस तथ्य की गहराई में जाँच की गई तो ज्ञात हुआ कि बच्ची का पिता शराबी था जो आयेदिन उसकी माँ से मारपीट करता था। और बच्ची को यह भय था कि उसका पिता कहीं उसकी माँ को चाकू से न मार दे। इस डर के मारे वह घर में रखे चाकू को अपने बेग में छुपाकर स्कूल में ले आती थी।

इस पूरे घटनाक्रम में छात्रा का कोई दोष नहीं था वह तो केवल अपनी माँ की सुरक्षा हेतू ऐसा कर रही थी। इसका तात्पर्य था कि बच्चे के द्वारा की गई गलतियों का सही कारण ढुंढकर उनका समाधान निकालने का प्रयास करना चाहिए।

इस उदाहरण ने सभी का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि समस्या का निराकरण मूल में जाकर ही किया जा सकता है।

इस प्रशिक्षण के अर्न्तगत समूहों को पुनः छोटे समूहों में बाँट कर शिक्षण अधिगम तथा लीडरशिप से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा कर अपने समूहों के विचारों को एकाकार कर सफल लीडरशिप के निष्कर्ष निकाले गये।

सही अर्थों में नेतृत्व के गुण का तात्पर्य यही है कि संस्था प्रधान को अपने साथी शिक्षकों के उस परनकर्त्तव्य को याद दिलाते हुए शिक्षकों की ऊर्जा को विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन के पुनीत कार्य में लगाना है। यह ईश्वर की हम पर संभव तथा विशेष अनुकंपा ही है कि हम उस क्षेत्र के लोगों का नेतृत्व कर रहे है जहाँ के कार्मिकों का कार्य बच्चों के भविष्य का निर्माण करना है। यदि विद्यार्थियों का नैतिक विकास व शैक्षिक विकास होता है तो इसका प्रभाव हमारे समाज पर और राष्ट्र पर पड़ेगा।

इस प्रशिक्षण के अर्न्तगत न केवल दुसरों के विकास के बारे में बल्कि स्वयं का विकास करने हेतु अधिगम की महत्ता स्पष्ट की गई।

यह भी बताया गया कि नैतृत्व शिक्षक केन्द्रिय तथा शिक्षा बालकेन्द्रित होने पर विशेष बल देना चाहिए। संस्थाप्रधान योजनाओं का निर्माता होता है वह निष्पक्षता के साथ ईमानदारी से इस प्रकार की योजना बनाने वाला होना चाहिए जो विद्यालय के भविष्य के हित में विद्धार्थियों के शैक्षिक उन्नयन में महत्त्वकांक्षी कदम उठाने के साथ समस्त शिक्षकों की सहभागिता सुनिश्चित कर अनवरत् शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहे।

इस प्रशिक्षण के दौरान ''समावेशी विद्यालय'' की विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। हमें अपने विद्यालय को समावेशी विद्यालय बनाने का प्रयास करना चाहिए। एक समावेशी विद्यालय वह विद्यालय होता है जिसमें शिक्षण कार्य तथा सहायक गतिविधियाँ तथा विद्यालय के मानवीय पक्ष के साथ-साथ भौतिक वातावरण सम्पूर्ण रूप से बालकेन्द्रित हो, बालक के सार्वत्रिक उन्नयन से जुड़ा हो।

वास्तव में शिक्षकों की गुणवत्ता को शिक्षा की गुणवत्ता से कम नहीं आंका जा सकता है।

सफल विद्यालय के लिये शिक्षकों हेतू प्रभावी शिक्षण के निर्देशन के साथ आदर्श विद्यालय का विजन तैयार कर उस विजन को प्राप्त करने हेतू सभी शिक्षकों को सभी संभव प्रयास करने होंगे।

संस्थाप्रधान अपने टीम के शिक्षकों के साथ आत्मीय व्यवहार तथा उनके समस्याओं को समझकर उचित प्रतिपुष्टि प्रदान कर अपने विजन की सफलता हेतू प्रेरित कर सकता है।

न्यूण के ही एक विद्वान प्रतिनिधि मिस्टर नेगी ने विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप शिक्षण के उद्देश्य तय करने हेतू प्रेरित किया और आदर्श प्रधान शिक्षक के उत्तम गुणों की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया।

विद्यार्थियों हेतू शिक्षक जाँच कार्य प्रतिभावान तथा कमज़ोर दोनों तरह के बालकों को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

प्रशिक्षण के अर्न्तगत बताया गया कि मुख्याध्यापक में उत्तम प्रशासनिक व नेतृत्व के गुण के साथ अनुशासन भी होना चाहिए। उसे नित्य शिक्षकों की उपस्थिति जाँचनी चाहिए, शिक्षण में सहायता करनी चाहिए तथा कक्षा शिक्षण का उचित निरीक्षण कर छात्रों को अधिक महत्त्व देना चाहिए। साथ ही संस्थाप्रधान को शिक्षकों व विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए तथा अभिभावकों के साथ विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

न्यूपा के अनुसार सफल नेतृत्व सदैव ऊर्जावान जोखिमपूर्ण कार्य करने वाला तथा मौलिक व आत्मविश्वासी व तनाव झेलने वाला तथा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता वाला होता है।

नेतृत्व विद्यालय में सकारात्मक विकासात्मक परिवर्तन लाने वाला होना चाहिए। नेतृत्व को यदि सफल लगाना है तो हमें इन गुणों को आत्मसात् करने का प्रयास करना होगा।

-प्रधानाध्यापिका, रा.मा.वि., चाण्डासर (बीकानेर)
मो. 9460522654

18 वर्ष की उम्र कर ली पार,
मिला वोट का अब अधिकार।

इस माह का गीत

नये जगत की नयी कल्पना

नये जगत की नयी कल्पना, को आओ साकार बनायें।
चलो नया संसार बसायें।।

हृदय-हृदय में दीप जलें जो अन्तर का अज्ञान मिटा दें।
नयन-नयन में निर्माणों के, सुन्दर मनहर स्वप्न सजा दें।
सबको दें विश्वास लक्ष्य का और सतत चलने का साहस।
ज्योति भरें ऐसी जीवन में, कभी ना आये गहन अमावस।।
फूट पड़े आत्मा का झरना, गंगा जल की धार बहाये...।।
चलो नया संसार बसायें।।

मानव शान्ति पा सके, ऐसी नई धरा हो नया गगन हो।
सांस ले सके सुख की मानव, ऐसी शीतल मन्द पवन हो।।
बढ़े चलो पथ पर प्रकाश के ऐसी प्राणमयी हो आशा।
स्वार्थ रहित कर्त्तव्य भावना, हो इस जीवन की परिभाषा।।
आओ हर घर, हर आंगन में, आज खुशी के फूल खिलायें।।
चलो नया संसार बसायें।।

जिसमें पनपे नैतिकता वह, नया भवन निर्माण करेंगे।
साहस, बल, पुरुषार्थ जुटा, तन की ईंटों से नींव भरेंगे।।
रच डालेंगे चिर नूतन इतिहास, क्रिया का सम्बल लेकर।
एक नया संघर्ष सृजन का, होगा अब प्राणों में प्रतिफल।।
मिटते-मिटते भी अपने, कर्मों से नव गीता लिख जायें।।
चलो नया संसार बसायें।।

नये जगत की नयी कल्पना, को आओ साकार बनायें।
चलो नया संसार बसायें।।

मानसिक व्यायाम

साहित्य की खेल विधा है-अन्त्याक्षरी

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

श्री महेश कुमार चतुर्वेदी हिन्दी-शिक्षण के कुशल चितेरे हैं। साथ ही कुशल प्रशासक एवं दक्ष प्रधानाध्यापक है। लेखक एवं बाल कहानीकार के रूप में विशिष्ट पहचान रखते हैं। शिक्षा विभाग के शिक्षक दिवस प्रकाशनों में दो दशकों से विशिष्ट स्थान। नए शैक्षिक चिंतनों एवं नवाचारों से युक्त, शिविरा के सशक्त रचनाकार। राजस्थान की पूर्व की हिन्दी कक्षा छः में प्रेरक-प्रसंग' संकलित पाठ में स्वीकृत। **-वरिष्ठ सम्पादक**

साहित्य जहां लोकानुरंजन का सशक्त माध्यम है वहीं दूसरी ओर साहित्य हमारी संस्कृति, रीति रिवाज एवं परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहायक है और हमारे शाश्वत मूल्यों के पोषक भी हैं। इसीलिए कहा है-''साहित्य समाज का दर्पण है।'' साहित्य के बारे में यह भी प्रचलित है कि जिस समाज का साहित्य जितना समृद्ध होगा वह समाज उतना ही उन्नति और प्रगति की ओर अग्रसर होगा। जहाँ सद् साहित्य व्यक्ति के मानसिक विकास का द्योतक है वहीं इसके चिंतन-मनन एवं स्वाध्याय से व्यक्ति के ज्ञान में आशातीत अभिवृद्धि होती है। उसमें चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है। उसमें जाने-अनजाने में कोई सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। साहित्य जहां भटके हुए को राह दिखाता है वहीं जीवन के दुष्कर एवं दुखी क्षणों में शकुन के साथ जीने व सकारात्मक सोच के साथ हँसते-गाते जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

साहित्यकारों के लिए जहाँ साहित्य स्वांत: सुखाय है वहीं साहित्य-अनुरागियों के लिए साहित्य जीवन जीने की कला है। मन के भावों और उद्वेगों को प्रस्फुटित करने का सशक्त माध्यम है- साहित्य। यथार्थ के सागर में कल्पनाओं की डुबकी लगाने वाला और शब्दों की नौकाओं एवं लेखनों की पतवार से जीवन रूपी लहरों से जूझने वाला व्यक्ति जितना प्रवीण होगा वह उतना ही नामवर साहित्यकार होगा।

वैसे तो साहित्य की खेल विधा में नाटक, नुक्कड़, नाटक, कठपुतली-नाटक, एकांकी, एकाभिनय, मूकाभिनय आदि मुख्य हैं। लेकिन उपर्युक्त विधाओं के साथ एक रोचक खेल विधा है- 'अन्त्याक्षरी।' अन्त्याक्षरी खेल-विधा में न तो किसी विशेष संसाधन की आवश्यकता पड़ती है और न ही अत्यधिक वित्तीय आवश्यकता की। सिर्फ मानव संसाधन के समूह मात्र से इस खेल विधा का आयोजन आसानी से किया जा सकता है। यह हर वर्ग के एवं हर उम्र के व्यक्तियों में उतना ही प्रिय है- जितना कि बच्चों का।

समय के सदुपयोग एवं मनोरंजन के लिए बिना किसी तैयारी के अन्त्याक्षरी तत्काल खेली जा सकती है। अगर इसे पूर्व तैयारी के साथ खेली जाए तो खेलने का आनंद द्विगुणित हो जाता है तथा प्रतियोगिता प्रतिस्पर्धा का उत्साह देखने लायक होता है।

शादी-ब्याह का अवसर हो, बस में बारातियों का सफर हो या हो शैक्षिक भ्रमण, संयुक्त परिवार का माहौल हो या दोस्तों का हो जमावड़ा, या कक्षा कक्ष में रिक्त कालांश के सदुपयोग की बात हो या सांस्कृतिक कार्यक्रम में खेल साहित्यिक खेल विधा के रूप में अपना हुनर दिखाने की बात हो, हर परिस्थिति और हर हाल में दो व्यक्तियों या दो समूह के आपसी सहमति एवं फुर्सत के क्षणों में अन्त्याक्षरी को अमली जामा पहनाया जा सकता है।

विद्यालय में बालकों में साहित्य के प्रति रुचि-रुझान पैदा करने के साथ उनमें छिपी अन्तर्निहित शक्तियों के विकास के साथ-साथ बालकों की सृजनात्मक शक्तियों के विकास में अन्त्याक्षरी मील का पत्थर साबित हो सकती है। इसमें बालक का मस्तिष्क तेजी से सक्रिय होता है । हर बालक गतिविधि करने के लिए तैयार होता है। क्या गलत है और क्या सही है! की निर्णय क्षमता का विकास होता है। प्रतिस्पर्धा के साथ टीम-भावना का विकास क्षमता का विकास है। बालक कल्पनाओं की उड़ान भरता हुआ आगे बढ़ने का दम भरता है। उसमें हिन्दी के स्वर-व्यंजनों एवं बारहखड़ी से बनने वाले शब्दों का ज्ञान बखूबी हो जाता है। इसे कहते हैं-हींग लगे न फिटकरी और रंग चोखा।

आखिर अन्त्याक्षरी है क्या ? आइए इसके बारे में पता करें। जैसा कि नाम से ही विदित है-अंत+अक्षरी अर्थात् अंत के अक्षर को पहचानकर अन्त्याक्षरी खेलना। इस साहित्यिक खेल विधा में निष्पक्ष साहित्यिक निर्णायक की आवश्यकता होती है। खेल-खिलौने से पूर्व इसके नियम एवं शर्तो को पूर्व में ही बता दिया जाता है। दो व्यक्तियों या दो समूहों के बीच खेला जाने वाला यह खेल बड़ा ही रोचक और मजेदार होता है। अंतिम अक्षर पर प्रस्तुति न देने वाला व्यक्ति या दल हारा हुआ माना जाता है तथा उसके माइनस पोइंट मार्किंग की जाती है।

यह अन्त्याक्षरी खेल-विधा अंतिम अक्षर को पहचान कर उससे बनने वाले दोहा, कविता, छंद, सोरठा, संगीत, भजन आदि की पंक्तियों को गाकर अथवा सुनाकर शुरू की जाती है और अंतिम पंक्ति के अंतिम शब्द के अक्षर को पहचान कर दूसरा दल फिर इसी प्रक्रिया को दोहराता है यह क्रम चलता रहता है। जो दल जितनी बार मात खाता है वह दल उतने ही अंकों से हारा हुआ माना जाता है। दूसरे रूप में इसे हिन्दी-अंग्रेजी शब्द भण्डार वृद्धि के रूप में भी खेला जाता है ताकि बालकों में शब्द भण्डार की वृद्धि हो सके।

वर्तमान समय में देखने में यह आता है कि साहित्य ज्ञान भण्डार की कमी के रहते साहित्य की दृष्टि से यह खेल ज्यादा समय तक नहीं चल पाता और कुछ ही क्षणों में यह अंतिम सांसें गिनने लग जाता है। तब इस खेल में ज्यादा

आनंद और मजा नहीं आता है।

विकृति के रूप में इस खेल में साहित्यिक गतिविधि के बजाय फिल्मों के फूहड़ और भौंडे संगीतों ने अपने पांव पसारने शुरू कर दिए हैं। जो भावी पीढ़ी को दिशाहीन एवं दिग्भ्रमित करने का काम करता है। आवश्यकता है विद्यालय में प्रति शनिवारीय कार्यक्रम में इस साहित्य खेल विधा को जीवन्त बनाये रखने की। इसके लिए हिन्दी शिक्षक का दायित्व और भी बढ़ जाता है। हिन्दी शिक्षक चाहे तो बालकों से मेरा-संग्रह नाम से एक उत्तर-पुस्तिका में साहित्यिक दोहे, छंद, भजन, कविताओं आदि का सुपाठ्य अक्षरों में संकलन करें उन्हें कंठाग्र करावें फिर देखें अन्त्याक्षरी किस कदर परवान चढ़ती है। इसके लिए यह जरूरी है कि बालकों को समय-समय पर मार्गदर्शन एवं साहित्य उपलब्ध कराते हुए इसे नियमित बनाया जाए और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए तो निश्चित रूप से उनमें छिपी अन्तर्निहित शक्तियों को उजागर कर सृजनात्मक शक्ति के विकास के रूप में उन्हें नई दशा और दिशा दी जा सकती है।

यदि यह सच है तो आइए हम अभी और आज ही अन्त्याक्षरी साहित्य खेल प्रतियोगिता का आगाज करते हैं। मैं अपनी ओर से पहल कर रहा हूं आप भी अपना सहयोग दीजिए। लीजिए अन्त्याक्षरी का पहला पायदान शुरू और उसके बाद आप अंतिम अक्षर की प्रस्तुति के लिए तैयार रहें।

बैठे-बैठे क्या करें, करना है कुछ काम।
शुरू करो अन्त्याक्षरी, ले प्रभु का नाम।।

(लेखक राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत अध्यापक हैं)
-प्रधानाध्यापक
रा.उ. प्रा.वि. पुराना, छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)
मो. 9460607990

A man without a vote in this land is like a man without hand.

-Henry Ward Beecher

धरती पर बिना वोट का व्यक्ति बिना हाथ के समान है।

-हैनरी वार्ड बीचर

'शिविरा' शिक्षा दर्पण

❒ **शशिकान्त द्विवेदी**

शिविरा पत्रिका शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायी, अनुकरणीय, मर्मस्पर्शी, स्तुत्य एवं एक प्रकाश स्तम्भ के समान है। साथ ही शिक्षा जगत से जुड़े व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शक, बच्चों के भविष्य निर्माण एवं शिक्षा की गुणवत्ता कायम करने के लिए उपयोगी भी है। यह पत्रिका शिक्षकों का चेतना केन्द्र, प्रेरणा और ज्ञान का स्रोत है। प्रकाशित सामग्री पठनीय, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय होती है। विशेष रूप से आकर्षण एवं चिन्तन परक है।

'शिविरा' शैक्षिक जगत में लाखों की मन पसंद एवं नवाचारों से भरपूर एक मात्र अनूठी पत्रिका है। बहुआयामी सामग्री से परिपूर्ण अंक है। प्रकाशित सामग्री अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक-रोचक एवं शैक्षिक प्रयासों को गति देने वाली होती है। वास्तव में देखा जाए तो 'शिविरा पत्रिका' शिक्षा विभाग का दर्पण है। इसे गागर में सागर भरने का प्रयास कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शिविरा शिक्षा जगत की अमूल्य निधि है, इसकी लोकप्रियता एवं उपादेयता अक्षुण्ण है। इसका प्रत्येक अंक प्रगति की ओर अग्रसर होता नजर आता है। 'शिविरा' अध्यापकों के लिए ही नहीं अपितु विद्यार्थियों के लिए रामबाण औषधि है। शिक्षक की सहजता ही विद्यार्थी को अपनी ओर आकर्षित कर पाएगी। राष्ट्र की उन्नति और व्यक्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले शिक्षक को अपनी कार्य क्षमता एवं दक्षता का आकलन करने, शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका इसी प्रकार शिक्षकों एवं छात्रों के लिए नित-नई एवं विशेष सामग्री का प्रकाशन करती रहेगी तथा इन्हीं आलेखों के आधार पर शिक्षक अध्ययन पक्रिया सम्पन्न करें तो निश्चित ही शिक्षा में गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है।

यह पत्रिका मुझे बेहद पसन्द आयी। मैं भी प्रकाशित सामग्री को पढ़कर ही सृजनशीलता की आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त कर सका। अध्यापक को अपनी पहचान हो जाए तो कहना ही क्या? वह पूरे शैक्षिक जगत को बदलने की क्षमता रखता है। **प्रत्येक शिक्षक को इस पत्रिका को अवश्य पढ़ना चाहिए। आखिर शिविरा है किसकी? इसलिए अच्छी सोच ही नया धरातल तय कर सकती है।**

शिविरा पत्रिका राजस्थान की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत की लोकप्रिय पत्रिका बने। पढ़ें भी और लिखें भी। अधिकाधिक शिक्षकों के अनुभवों का लाभ शिक्षा जगत को मिल सकेगा। **आओ तेजस्वी शिक्षक बनने का संकल्प ग्रहण करें।** उत्कृष्ट विचार चिन्तन के प्रकाशन के लिए शिविरा पत्रिका के सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएँ।

पूर्व चलने के बटोही...

पूर्व व्याख्याता (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहरिया
(बांसवाड़ा)
मो. 9460116012

निवेदन

प्रिय शिक्षक साथियो,

विनम्र प्रणाम!

शिविरा-मार्च 2014 अंक में बड़े भाई की पाती में हमारे वरिष्ठ साथी श्री रूपनारायण काबरा ने शिविरा के ग्राहक बनने की अपील हम शिक्षकों से की थी। इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रतिदिन डाक से आने वाले पोस्टल ऑर्डर, एम.ओ. ड्राफ्ट की संख्या बढ़ रही है। भाई शशिकान्त जी के विचार भी बड़े अनमोल है। शिविरा पर पाठकों की इस महत्ती कृपा से हम अभिभूत हैं। शिविरा आपकी ही तो है। पढ़ने को बहुत कुछ मिलता है। शुल्क भी नाम मात्र का है। वार्षिक 50 रुपये यानी महीने का यही कोई 4 रुपये। इतने में तो आजकल आधा कप चाय भी नहीं आती। फिर शिविरा तो स्वयं चलकर आपके घर आती है- शिविरा आपके द्वार। कारण इन पचास रुपयों में डाक व्यय भी शामिल है। आइये, संकल्प लें कि ग्रीष्मावकाश में प्रस्थान करने से पूर्व हम शिविरा का शुल्क भेजकर जाएंगे ताकि जुलाई से हमें शिविरा, हमारी अपनी शिविरा नियमित रूप से मिल सके। एक माह के चार रुपये शिविरा के लिए रखिये और हाँ आप समूह में एक ही बैंक ड्राफ्ट से शुल्क भिजवा सकते हैं। बस, पिन कोड नम्बर सहित पतों की स्पष्ट सूची अवश्य संलग्न कर दें। आप सतत स्वाध्यायी बनें तथा आपका अध्ययन सुखदायी व फलदायी हो, इसी मंगलकामना के साथ...

आपका ही,
ओमप्रकाश सारस्वत
वरिष्ठ संपादक

आदेश-परिपत्र : अप्रैल, 2014

1. **मण्डल में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड–II) पुरुष/महिला के राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची में संशोधन से सम्बन्धित।**
2. **विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा हेतु दिशा–निर्देश।**
3. **अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना में माता–पिता/अभिभावक की वार्षिक आय सीमा राशि रुपये 2.00 लाख से 2.50 लाख तक बढ़ाये जाने के संबंध में।**
4. **एनएमएमएस 2013–2014 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति सम्बन्धी निर्देश एवं क्लेम बिल का प्रारूप।**
5. **शिविरा पंचांग 2013–14 में संशोधन**

1. मण्डल में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड–II) पुरुष/महिला के राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची में संशोधन से सम्बन्धित।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● इस कार्यालय द्वारा समय-समय पर मण्डल अधिकारियों को निर्देश दिये जाते रहे हैं कि उनके मण्डल में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड–II) पुरुष/महिला के नामांकन राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में नहीं है तथा उनके जन्म तिथि, वर्ग (एस.सी./एस.टी.) अथवा योग्यता अभिवृद्धि एवं अन्य संशोधन किये जाने हैं तो ऐसे प्रकरण एक सीमा के अन्दर-अन्दर निपटाये जावें।

इस कार्यालय पत्र क्रमांक शिविरा/मा/संस्था/वरि./के-2/11988/मानदण्ड/वो-(1)/2002-02/05-06/दिनांक 11.9.2009 एवं सम संख्यक विज्ञप्ति दिनांक 18.9.09 द्वारा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रसारित कर दिनांक 25.9.09 तक उक्त कार्यवाही करने के निर्देशित किया गया था, तत्पश्चात इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 18.1.2010, 07.07.10, 04.08.11, 31.03.10, 05.09.10, 30.09.11, 17.10.12 एवं 09.05.13 द्वारा पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करने के निर्देश दिये गये थे, लेकिन अब भी कई मण्डलों द्वारा नामांकन, योग्यता अभिवृद्धि, जन्मतिथि एवं वर्ग संशोधन इत्यादि के लिये प्रकरण भिजवाये जा रहे हैं।

इससे विदित होता है कि मण्डल स्तर पर कार्य की गति मंद है तथा इस कार्यालय द्वारा जारी निर्देशों की पूर्णतः पालना नहीं हो रही है अतः मण्डल अधिकारियों को पुनः अवसर देते हुए पाबन्द किया जाता है कि दिनांक 30.8.14 तक पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करें एवं निदेशालय स्तर पर निपटायें जाने वाले प्रकरण तत्काल निदेशालय को भिजवावे तथा अधीनस्थ कार्यालयों को ये निर्देश जारी करे कि उक्त बढ़ायी गई निश्चित तिथि तक प्रकरणों का निस्तारण करें। अब भी यदि पुराने लम्बित प्रकरणों का निस्तारण नहीं होता है, तो यह जिला/मण्डल अधिकारियों के कार्य के प्रति शिथिलता का द्योतक है।

अतः उपर्युक्त के लिए तत्काल करणीय कार्यवाही करें।

निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ● बीकानेर

क्रमांक-शिविरा/मा/संस्था/वरि/के-2/11988/मानदण्ड/वो-(1)/2000-02/05-06/दिनांक 06.02.14

2. विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा हेतु दिशा–निर्देश

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : राप्राशिप/गुणवत्ता/2013/8223 दिनांक : 29/10/13 ● मुख्य कार्यकारी अधिकारी, समस्त जिले। ● विषय : विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा हेतु प्रधानाध्यापकों/ब्लॉक/जिला स्तरीय अधिकारियों के लिए दिशा-निर्देश।

गुणवत्ता शिक्षा को लेकर सत्र 2012-13 में सम्बलन कार्यक्रम क्रियान्वित किया गया। सम्बलन में बच्चों की शैक्षिक स्थिति उत्साहजनक देखने को नहीं मिली। बच्चों के शैक्षिक स्तर को बेहतर करने तथा विद्यालय में सीखने का बेहतर माहौल बनाने के उद्देश्य से इस सत्र 2013-14 के जुलाई-अगस्त माह में रीडिंग कैम्पेन कार्यक्रम का प्रथम चरण चलाया गया। रीडिंग कैम्पेन के बाद सत्र 2013-14 में सम्बलन का पहला चरण 23, 24 सितम्बर, 2013 को पूरा किया गया। रीडिंग कैम्पेन एवं सम्बल दोनों में भी बच्चों की शैक्षिक स्थिति संतोषजनक नहीं पाई गई। रीडिंग कैम्पेन एवं सम्बलन से यह तो स्पष्ट है कि बच्चों के शैक्षिक स्तर को बेहतर करने के लिए अभी इस प्रकार के विभिन्न प्रयास किए जाने आवश्यक है।

रीडिंग कैम्पेन के फॉलोअप के रूप में दिशा-निर्देश पूर्व में भिजवाए जा चुके हैं। जिसकी प्रति संलग्नक-1 एवं 2 पर संलग्न है।

रीडिंग कैम्पन में प्राप्त अनुभवों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विद्यालय में गुणवत्ता को बनाए रखने में प्रधानाध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः प्रधानाध्यापक को एक लीडर के रूप में अपनी टीम के सभी सदस्यों के साथ कार्य करने की जरूरत है। एक अच्छा स्कूल बनाने में प्रधानाध्यापक के क्या दायित्व हैं, प्रधानाध्यापक को यह बहुत अच्छे से पता होने चाहिए। एक प्रधानाध्यापक के निम्नांकित दायित्व है-

- प्रधानाध्यापक अपने स्कूल के लिए लक्ष्य तय करें।
- लक्ष्यों को पाने के लिए उपलब्ध मानवीय, भौतिक और वित्तीय संसाधनों का समुचित उपयोग करें।
- लक्ष्यों के अनुरूप विद्यालय की उपलब्धियों और प्रगति की समुदाय और शिक्षकों के साथ समय-समय पर समीक्षा करें।

उक्त दायित्वों को पूरा करने के लिए प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय के बेहतर संचालन हेतु निम्नांकित काम किए जाने हैं-

1. **अकादमिक संबलन से संबंधित :**

- सत्र के शुरूआत में प्रधानाध्यापक को विभागीय नियमानुसार विद्यालय के सभी शिक्षकों के साथ बैठक करना अनिवार्य है। इस बैठक में विद्यालय के शैक्षिक स्तर पर चर्चा कर सत्र के लिए लक्ष्य तय करने हैं और उन लक्ष्यों के अनुरूप प्रत्येक शिक्षक को अपनी विस्तृत कार्य योजना बनानी है। शिक्षक बच्चों के शैक्षिक स्तर का ध्यान रखते हुए विषयवार कार्य योजना बनाएँगे।
- शिक्षा का अधिकार कानून 2009 में स्पष्ट प्रावधान है कि शिक्षक

बच्चों के स्तर का आकलन करेंगे। आकलन के अनुरूप शिक्षण योजना बनाएँगे। बच्चों की प्रगति और स्थिति के अनुसार समीक्षा करेंगे और शिक्षण योजना में बदलाव करेंगे। समय-समय पर बच्चों की प्रगति के बारे में उनके अभिभावकों को जानकारी देंगे।

- जहाँ तक सम्भव हो कक्षा 1 व 2 को पृथक-पृथक बैठाकर पढ़ाये जाने की व्यवस्था की जावे ताकि कक्षा 1 व 2 के विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सके। साथ ही कक्षा 1 के विद्यार्थियों पर शुरू से ही ध्यान केन्द्रित किया जा सके।
- राज्य सरकार द्वारा पूर्व में आदेश प्रसारित किये जा चुके हैं कि जहाँ तक सम्भव हो एक शिक्षक द्वारा एक ही विषय सभी कक्षाओं में पढ़ाया जायें। अर्थात विषय अध्यापक के रूप में एक शिक्षक को सभी कक्षाओं में एक विषय की जिम्मेदारी दी जाए ताकि शिक्षक को बच्चों के एक विषय में शैक्षिक स्तर की जानकारी रहे एवं वह कार्य योजना बना कर कार्य कर सके।
- विद्यालयों में बच्चों को कम से कम 5वीं कक्षा तक पैंसिल से लेखन कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए।
- प्रधानाध्यापक महीने में एक बार अनिवार्य रूप से शिक्षकों के साथ बैठ कर विद्यालय की समस्याओं/चुनौतियों पर चर्चा करें एवं समाधान करने का प्रयास करें। यह बैठक पूर्णतया अकादमिक हो। बैठक के माध्यम से प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों को यह पता चल सकें कि शिक्षण के दौरान उन्हें किस प्रकार की चुनौतियाँ आ रही है, उनकी क्या मजबूतियाँ है, उन्हें किस प्रकार की मदद की आवश्यकता है? इन बैठकों का आयोजन शिक्षण कालांश के पश्चात् किया जाए। इन बैठकों का कार्य विवरण रखा जाए। बैठक के लिए निम्नांकित मुद्दे हो सकते हैं:-
  - ➢ शिक्षकों द्वारा गत बैठक से इस बैठक की अवधि में किए कार्यों का विवरण एवं अनुभव की गई कठिनाइयाँ।
  - ➢ प्रधानाध्यापक द्वारा किए गए कक्षा अवलोकन पर चर्चा।
  - ➢ कक्षा अवलोकन पर सभी शिक्षकों की राय एवं अनुभूत कठिनाइयों के समाधान हेतु सुझाव।
  - ➢ कक्षावार/विषयवार बच्चों के सीखने की गति पर चर्चा एवं आवश्यक प्रयास।
  - ➢ आगामी महिनों की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाकलापों की योजना बनाना।
  - ➢ समुदाय से जुड़ाव पर चर्चा।
  - ➢ विद्यालय विकास पर चर्चा।
  - ➢ बच्चों के पोर्टफोलियों के संधारण की स्थिति।
  - ➢ अन्य कोई आवश्यक मुद्दे।
- यदि प्रधानाध्यापक को ऐसा लगता है कि कोई शिक्षक अपने दायित्व को ठीक से नहीं निभा रहे हैं तो प्रधानाध्यापक के पास यह अधिकार (राज्य सरकार के आदेश क्रमांक शिविरा/प्रारं/प्राथ/सी/19510/93 दिनांक 19.8.99 के अनुसार) है कि वह-
  - ➢ ऐसे शिक्षक को एक लिखित में नोटिस देंगे जिसमें शिक्षक द्वारा कि गई अनुशासनहीनता/अनियमितता/असंतोषजनक कार्य आदि के बारे में उल्लेखित किया जाएगा।
  - ➢ ऐसे नोटिस में शिक्षक को एक माह का समय भी दिया जाएगा कि वह अपने कार्य व्यवहार में वांछित सुधार करें।
  - ➢ यदि प्रधानाध्यापक को उक्त नोटिस की अवधि समाप्त होने के पश्चात् ऐसे लगे कि संबंधित शिक्षक ने अपने कार्य व्यवहार में कोई सुधार नहीं किया और उसका विद्यालय में रहना विद्यालय हित में नहीं है तो प्रधानाध्यापक ऐसे शिक्षक को विद्यालय से कार्यमुक्त कर सकेगा।
  - ➢ प्रधानाध्यापक ऐसे शिक्षक के कार्य मुक्ति के आदेश में यह भी निर्देशित करेंगे कि वह तत्काल अपनी उपस्थिति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में दें।
  - ➢ प्रधानाध्यापक द्वारा ऐसे शिक्षक के विरुद्ध अनियिमितता/अनुशासनहीनता संबंधी आरोप-विवरण-पत्र कार्य मुक्ति आदेश के साथ ही भिजवाया जाएगा।
  - ➢ बिना दोषारोपण विवरण के कार्यमुक्ति आदेश अनियमित माना जाएगा जिसके लिए प्रधानाध्यापक जिम्मेदार होगा।

    कार्य मुक्ति आदेश प्रधानाध्यापक द्वारा संबंधित शिक्षक को व्यक्तिशः दिये जायेंगे तथा ऐसे कार्यमुक्ति आदेश एवं आरोप-विवरण-पत्र की प्रतिलिपि विद्यालय में कार्यरत किसी एक शिक्षक के हाथों वाहक स्तर पर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित की जायेगी।
  - ➢ संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ऐसे शिक्षक को अधिकतम दो दिन के समय में जिले के किसी भी रिक्त स्थान पर पदस्थापित किया जायेगा, परंतु ऐसे शिक्षक का पदस्थापन किसी भी स्थिति में शहरी क्षेत्र के विद्यालय में नहीं किया जायेगा। शहरी क्षेत्र के विद्यालय में पदस्थापन तभी किया जायेगा जब ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में स्थान रिक्त न हो। परंतु पूर्व के स्थान से अधिक सुविधाजनक स्थान न दें।
  - ➢ जिला शिक्षा अधिकारी प्रधानाध्यापक द्वारा भेजे गए आरोप-विवरण-पत्र के आधार पर कार्रवाई करेंगे।
- प्रधानाध्यापक प्रति कक्षा एक सप्ताह में कम से कम एक बार शिक्षण कार्य का अवलोकन करें। किए गए अवलोकन के आधार पर लिखित में आवश्यक मार्गदर्शन दें। प्रधानाध्यापक निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर कक्षा का अवलोकन करें।
  - ➢ कक्षा में कितने बच्चे नियमित पढ़ने आते हैं?
  - ➢ क्या शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य की कार्य योजना बनाई गई है?
  - ➢ क्या योजना के अनुसार शिक्षक कार्य करवा रहे हैं?
  - ➢ क्या सहायक सामग्री का उपयोग किया गया?
  - ➢ क्या बच्चों को गृहकार्य दिया गया?
  - ➢ क्या गृहकार्य की प्रतिदिन जाँच की गई?
  - ➢ क्या शिक्षक बच्चों के साथ सरलता के साथ बातचीत कर रहे हैं?
  - ➢ पढ़ाए गए बिन्दु पर क्या बच्चों की समझ बनी है, इसका आकलन किया गया?
  - ➢ क्या कक्षा में बच्चों के स्तरानुसार समूह बनाए गए हैं?
  - ➢ क्या कक्षा में जरूरत के अनुसार छोटे एवं बड़े समूह में गतिविधियाँ करवाई जाती है?

➢ क्या शिक्षक द्वारा शैक्षणिक रूप से पिछड़ रहे बच्चों पर अधिक ध्यान दिया जाता है?

➢ क्या बच्चों को स्वयं करके सीखने एवं एक-दूसरे की मदद से सीखने के अवसर दिए गए?

➢ क्या विशेष योग्य जन बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है?

➢ क्या शिक्षक में विषय की समझ है या उन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता है?

➢ प्रधानाध्यापक द्वारा किए गए कक्षा शिक्षण कार्य अवलोकन के पश्चात् संबंधित शिक्षक के साथ शिक्षण योजना, समय प्रबंधन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आदि पर चर्चा करें। अवलोकन के पश्चात् प्रधानाध्यापक किए गए अवलोकन पर अपनी दैनिक डायरी में टिप्पणी लिखें एवं इन टिप्पणियों के आधार पर विद्यालय मासिक आन्तरिक मूल्यांकन प्रपत्र (संलग्नक-3) को पूरा करें।

- **पुस्तकालय का उपयोग :**

➢ विद्यालयों में पुस्तकालय का उपयोग सुनिश्चित करने हेतु समय विभाग चक्र में अनिवार्य रूप से पुस्तकालय हेतु सप्ताह में एक कालांश (एक कक्षा के लिए) आवंटित किया जाए।

➢ पुस्तकालय कालांश में बच्चों को पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें पढ़ने के अवसर दिए जाएँ एवं बच्चों को नियमित रूप से पुस्तकें ईश्यू की जाएँ। पढ़ी गई कविताओं/कहानियों एवं अन्य सामग्री पर बच्चों को अपनी बात कहने, सबको सुनाने तथा एक-दूसरे के साथ शेयर करने के अवसर दिए जाएँ।

➢ पुस्तकालय कालांश के अतिरिक्त यह कार्य प्रार्थना सभा में भी करवाया जाए। प्रार्थना सभा में प्रतिदिन दो-तीन बच्चों को ऐसे अवसर देकर बारी-बारी से सभी बच्चों को अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

➢ पुस्तकों के रख-रखाव, आवंटन एवं पुस्तकालय की अन्य व्यवस्थाओं हेतु बच्चों की भागीदारी ले सकते हैं। इस हेतु पाँच बच्चों की पुस्तकालय मैनेजमेन्ट कमेटी बनाई जा सकती हैं।

➢ आयुक्त, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर के पूर्व आदेशानुसार (आदेश क्रमांक-शिविरा/प्रारं/अ.शि./विविध/3554/बी-1/11-12/152/5.3.12) एवं आयुक्त, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद के आदेशानुसार (आदेश क्रमांक-राप्राशिप/जय/औ.शि./फा-पुस्तकालय/2013-14/1695 दिनांक 8.5.13) पुस्तकालय में पुस्तकें बच्चों के उपयोग से कट-फट सकती है, अतः पुस्तकों की सुरक्षा के नाम पर बच्चों को पुस्तकों के उपयोग से वंचित नहीं किया जाए।

➢ आयुक्त, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद के आदेशानुसार (आदेश क्रमांक-राप्राशिप/जय/औ.शि./फा-पुस्तकालय/2013-14/1696 दिनांक 8.5.13) प्रत्येक विद्यालय शाला सुविधा अनुदान राशि में से हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अनिवार्य रूप से क्रम करें।

➢ सत्रांत में प्रधानाध्यापक एवं पुस्तकालय प्रभारी पुस्तकों का भौतिक सत्यापन कर गुम एवं कटी-फटी पुस्तकों को समायोजित कर सकते हैं।

- **कल्प :**

➢ कल्प विद्यालयों में शिक्षण हेतु कम्प्यूटर का उपयोग सुनिश्चित किया जाएँ। इस हेतु खराब कम्प्यूटर को समय पर ठीक कराया जाए। विषय अध्यापकों द्वारा ई कंटेंट का उपयोग सुनिश्चित करें।

➢ जिन कल्प विद्यालयों में एक भी अध्यापक कम्प्यूटर में प्रशिक्षित नहीं हैं उनके प्रस्ताव जिले के माध्यम से परिषद् मुख्यालय स्थित आइटी प्रकोष्ठ को भिजवाए जाएँ ताकि शिक्षकों को कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण करवाया जा सके।

➢ विद्यालय में उपलब्ध विज्ञान एवं गणित किट का उपयोग शिक्षण के दौरान किया जाना सुनिश्चित किया जाए। प्रधानाध्यापक यह ध्यान रखे कि अगर उनके विद्यालय में विज्ञान एवं गणित किट पर कोई भी शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है तो किसी एक शिक्षक के प्रशिक्षण हेतु ब्लॉक/जिले स्तर पर प्रस्ताव भिजवाएँ।

2. समुदाय के साथ संबंध

प्रधानाध्यापक इस बात का ध्यान रखे कि स्कूल और समुदाय के बीच आपसी समझ और विश्वास का माहौल है। शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत प्रत्येक विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन समिति का गठन किया गया है। प्रधानाध्यापक यह सुनिश्चित करे कि-

- इस समिति की साधारण सभा की बैठक नियमित रूप से प्रति तीन माह में एक बार आवश्यक रूप से हो।
- यह भी सुनिश्चित करें कि कार्यकारिणी समिति की बैठक नियमित रूप से प्रति माह आयोजित की जा रही हो।
- प्रधानाध्यापक विद्यालय प्रबंधन समिति को निम्नांकित बातों से अवगत कराएँ-

➢ बच्चों की विद्यालय में नियमित उपस्थिति की क्या स्थिति है। विशेषतौर पर लड़कियों की नियमित उपस्थिति पर आवश्यक रूप से चर्चा हो।

➢ बच्चों की शैक्षिक प्रगति की स्थिति क्या है। यदि आवश्यक हो तो प्रधानाध्यापक समिति के सामने उन बच्चों के बारे में चर्चा करे जिनकी प्रगति की स्थिति चुनौतिपूर्ण है।

➢ विद्यालय के पास उपलब्ध आर्थिक और भौतिक संसाधनों पर समिति के सदस्यों से पारदर्शिता रखी जाए और उन्हें आवश्यक सभी सूचनाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।

➢ बच्चों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय की प्रगति के लिए आवश्यक आर्थिक और भौतिक संसाधनों पर चर्चा कर सदस्यों को प्रेरित करे इनकी पूर्ति में सहयोग प्रदान करें।

➢ प्रधानाध्यापक यदि आवश्यक समझे तो विद्यालय के स्टाफ को आ रही किसी समस्या पर भी समिति के सदस्यों से चर्चा कर सकते हैं।

- ➢ प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक विद्यालय समय के पश्चात् निरन्तर एवं बहुत अधिक अनुपस्थित रहने वाले बालक-बालिकाओं के अभिभावकों से सम्पर्क कर उन्हें उनके स्तर/ग्रेड (ए.बी.सी.) से अवगत कराएँ तथा चर्चा करें।
- ➢ अभिभावकों से अनुरोध करें कि उनका बालक/बालिका जब भी विद्यालय से घर आए तो वे उसकी कॉपी/अभ्यास पुस्तिका अवश्य रूप से देखें।
- ➢ घर पर अपने बालक/बालिका को प्रतिदिन समय की उपलब्धता के अनुसार थोड़ी देर पढ़ने के लिए जरूर कहें और अपने सामने बैठाएँ।

3. स्कूल प्रबंधन में भूमिका

स्कूल का प्रबंधन एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। समुदाय चाहता है कि स्कूल हमारे बच्चों को सम्मान दे और उन्हें पढ़ना लिखना सिखाएँ। बच्चे चाहते हैं कि स्कूल उन्हें प्यार से रखे, उन्हें खेलने-कूदने कर मौका दे और वो सब पढ़ाएँ जो किताबों में लिखा है। अधिकारी वर्ग चाहता है कि स्कूल तय मापदण्डों के अनुरूप चले और बच्चों का शैक्षिक स्तर प्रारम्भिक शिक्षा के लिए तय किए गए पाठ्यक्रमीय उद्देश्यों के अनुरूप हो। विद्यालय प्रबंधन समिति की अपेक्षा होती है कि विद्यालय की विकास योजना का ठीक से क्रियान्वयन किया जाए और विद्यालय के लिए प्राप्त बजट का समुचित उपयोग किया जाए। प्रधानाध्यापक एक कुशल प्रबंधक के रूप में यह सुनिश्चित करें कि-

- प्रधानाध्यापक विद्यालय से संबंधित सभी दस्तावेजों का समय पर संधारण करे।
- विद्यालय में साथी शिक्षकों को एक टीम के रूप में तैयार करें।
- सत्र के शुरूआत में ही विद्यालय की वार्षिक योजना तैयार कर साथी शिक्षकों के साथ बैठक कर कार्य विभाजन करें। समय-समय पर विद्यालय विकास योजना की क्रियान्विति की समीक्षा करें।
- प्रधानाध्यापक का यह दायित्व है कि वह विद्यालय संचालन में आ रही चुनौतियों से उच्च अधिकारियों को समय-समय पर अवगत कराते रहें। चाहे वह अकादिमक हो या गैर अकादमिक। प्रधानाध्यापक ब्लॉक एवं जिला स्तरीय अधिकारियों को यदि आवश्यक हो तो यह सूचना दे कि शिक्षकों को किस विषय पर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। शिक्षकों को अवकाश, वेतन एवं सेवा संबंधी में किस प्रकार की चुनौती आ रही है आदि।
- शिक्षकों की बीएलओ ड्यूटी होने पर उन्हें पूर्व में दिए गए आदेशानुसार (भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली के प्रत्रांक 23/बीएलओ/2009/ईआरएस/3 मार्च 2010 के अनुसार) कार्य करने के लिए निर्देशित करें। निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देश एवं बीएलओ हैण्डबुक के अनुसार बीएलओ को बीएलओ ड्यूटी के लिए प्रति भाग प्रति वर्ष 3000 रुपये मानदेय दिए जाने का प्रावधान किया गया है जो कि उन्हें बीएलओ के रूप में अतिरिक्त कार्य करने के लिए देय है। साथ ही यह निर्देश भी दिए गए हैं कि बीएलओ अपने कार्यालय समय से अतिरिक्त समय में बीएलओ ड्यूटी से संबंधित कार्य करें। अतः संस्था प्रधान सुनिश्चित करें कि जिन शिक्षकों की बीएलओ ड्यूटी है वे शिक्षक विद्यालय समय पश्चात् ही बीएलओ ड्यूटी दें ताकि बच्चों की पढ़ाई बाधित नहीं हो।

4. विद्यालय के भौतिक विकास में योगदान

प्रधानाध्यापक विद्यालय की भौतिक स्थितियों के प्रति सजग रहें एवं सुनिश्चित करें कि-

- स्कूल की भौतिक स्थिति बच्चों के अनुरूप है।
- बच्चों की संख्या एवं आवश्यकता के अनुरूप कमरे, भोजनशाला, शिक्षकों की संख्या, लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय, पीने का साफ पानी एवं खेलने के पर्याप्त स्थान एवं उपकरण इत्यादि हो।
- विद्यालय शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुरूप तय मापदण्डों को पूरा करे। इसके लिए आवश्यक है कि प्रधानाध्यापक विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ मिलकर विद्यालय विकास योजना का निर्माण करे और समय-समय पर विद्यालय विकास योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की समिति के सदस्यों के साथ मिलकर समीक्षा करें।
- प्रधानाध्यापक यह भी ध्यान रखें कि विद्यालय विकास योजना में शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में भी चर्चा की जाएँ। विद्यालय विकास योजना के निर्माण पर चर्चा करते समय प्रधानाध्यापक निम्नांकित बातों का ध्यान रखेः-
- विद्यालय विकास योजना केवल आदर्शवादी नहीं हो बल्कि व्यावहारिक हो।
- उपलब्ध संसाधनों का ध्यान रखा जाए-शिक्षकों की संख्या, छात्रों की स्थिति, भौतिक संसाधन, कक्षा-कक्ष, शौचालय-मूत्रालय की स्थिति, पुस्तकालय की स्थिति आदि
- छात्रों की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक विकास योजना :
  - ➢ छात्रों का शैक्षिक स्तर का निर्धारण विषयवार करना
  - ➢ कमज़ोर छात्रों हेतु विशेष कार्य योजना बनाना
  - ➢ प्रतिभावान छात्रों हेतु अलग कार्य योजना का निर्माण
  - ➢ अनियमित रहने वाले छात्रों हेतु कार्य योजना
  - ➢ खेलकूद, शैक्षिक भ्रमण, सांस्कृतिक विकास हेतु कार्य योजना
  - ➢ भाषागत एवं लेख सुधार की योजना का निर्माण
- भौतिक संसाधनों के विकास हेतु प्रयास करना
  - ➢ कक्षा कक्षों की कमी को विभाग, एस.एस.ए. अथवा जनसहयोग से दूर करना
  - ➢ शुद्ध पेयजल की व्यवस्था करवाना
  - ➢ विद्युत कनेक्शन, पंखे आदि की व्यवस्था करना
  - ➢ खराब कम्प्यूटरों को सुधारना
  - ➢ रेम्प आदि की व्यवस्था

नोट : विद्यालय में एक महीने में किए गए अकादमिक कार्यों की समीक्षा एवं प्रगति को समझने की दृष्टि से प्रधानाध्यापक के लिए एक आन्तरिक मूल्यांकन प्रपत्र (संलग्न-3) दिया जा रहा है। प्रधानाध्यापक को प्रति माह इस प्रपत्र को भरना है और एक फाइल में इसे संधारित करना है।

प्रधानाध्यापक अपने दायित्वों का बेहतर रूप से संचालन करें इसके लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय को ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर से सहयोग मिलता रहे। ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर पर किए जाने वाले कार्य इस प्रकार है-

ब्लॉक स्तर पर किये जाने वाले कार्य-

- नोडल बैठकों में संस्था प्रधानों के साथ बच्चों के शैक्षिक स्तर आकलन **प्रपत्र ब** (रीडिंग कैम्पेन **मासिक प्रगति प्रपत्र ब**) के आधार पर चर्चा/समीक्षा की जाए।
- प्रधानाध्यापक वाक्पीठ संगोष्ठ में विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित किये जाने के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं/बिन्दुओं पर चर्चा/वार्ता करवाई जाए।
- प्रधानाध्यापक वाक्पीठ संगोष्ठी तथा नोडल बैठकों में डाइट फेकल्टी को शामिल किया जाए। डाइट प्रतिनिधियों के साथ इन बैठकों में प्रदर्शन पाठ, वार्ता एवं अकादमिक फीड बैक आदि की कार्य योजना बनाते हुए संदर्भ व्यक्ति के रूप में इनकी उपस्थिति सुनिश्चित कराएँ।
- आवश्यकता होने पर ब्लॉक स्तर पर ऐसे विद्यालयों के संस्था प्रधानों को बिन्दु एक के अनुसार अकादमिक सम्बलन प्रदान किए जाए जिनमें सी ग्रेड के विद्यार्थियों की संख्या अधिकतम है।
- जिन विद्यालयों के भवन क्षतिग्रस्त हैं उनकी सूचना संकलित कर जिले के माध्यम से परिषद मुख्यालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

जिला स्तर पर किये जाने वाले कार्य-

- जिला सर्व शिक्षा अभियान कार्यालय ब्लॉक एवं डाइट के साथ समन्वयन स्थापित करते हुए गुणवत्ता के आधार पर कमजोर रहे विद्यार्थियों को चिह्नित करते हुए उन्हें अकादमिक संबलन प्रदान करने की कार्य योजना बनाए एवं संबलन प्रदान करें।
- जिन कल्प विद्यालयों में अभी एक भी शिक्षक कम्प्यूटर में प्रशिक्षित नहीं है उन विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित कराये जाने की कार्य योजना बनाएँ एवं आईटी प्रकोष्ठ परिषद् मुख्यालय के सहयोग से प्रशिक्षण की व्यवस्था करें।
- नोडल बैठकों में जिला कार्यालय से अपने प्रतिनिधियों को भिजवाकर गुणवत्ता से जुड़े बिन्दुओं पर चर्चा/मॉनिटरिंग करवाना सुनिश्चित कराएँ।

गत सत्र में आयोजित सम्बलन कार्यक्रम, इस सत्र के रीडिंग कैम्पेन एवं सम्बलन के प्रथम चरण के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट है कि शिक्षा में गुणवत्ता की दृष्टि से अभी बहुत प्रयास किए जाने की जरुरत है। गुणवत्ता के इन प्रयासों में विद्यालय के प्रधानाध्यापक की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यह सब करने में प्रधानाध्यापक की क्या भूमिका हो, इन भूमिकाओं का निर्वहन वह कैसे करें इस दृष्टि से प्रधानाध्यापक को दिशा-निर्देश दिए जा रहे हैं। जिला स्तरीय अधिकारी यह दिशा-निर्देश सभी प्रधानाध्यापकों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें। ● आयुक्त क्रमांक : राप्राशिप/ गुणवत्ता/ 2013/8223 दिनांक : 29-10-13

3. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना में माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय सीमा राशि रुपये 2.00 लाख से 2.50 लाख तक बढ़ाये जाने के संबंध में।

● राजस्थान सरकार ● सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ● जी 3/1 राजमहल रेजीडेन्सी एरिया, सिविल लाइन्स फाटक, जयपुर ● क्रमांक : एफ 9(4)() छात्र/नियम/सान्याअवि/2010-11/ दिनांक : 4.2.2014

● विषय : अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना में माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय सीमा राशि रुपये 2.00 लाख से 2.50 लाख तक बढ़ाये जाने के संबंध में। ● प्रसंग : सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के पत्र क्रमांक 11017/01/2008 SCD-V (Vol-III) दिनांक 29.4.2013 एवं जनजाति कार्य मंत्रालय की वेबसाइट नियमावली में उल्लेखित आय सीमा अनुसार ● महोदय,

उक्त विषयान्तर्गत संदर्भानुसार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना में छात्र-छात्राओं के माता-पिता/अभिभावकों की वार्षिक आय सीमा उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आधार पर राशि रुपये 2.00 लाख से बढ़ाकर राशि रुपये 2.50 तक की गई है। संशोधित वार्षिक आय माह अप्रेल 2013 से प्रभावी है।

अतः योजना में वर्ष 2013-14 में माता-पिता/अभिभावक की संशोधित वार्षिक आय सीमा राशि रुपये 2.50 लाख के अनुसार छात्रवृति स्वीकृति की नियमानुसार कार्यवाही की जावे। ● डॉ. हरसहाय मीणा ● अतिरिक्त निदेशक (अजा/जजा कल्याण)

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/22600/एससी-एसटी-ओबीसी/उत्तर मैट्रिक/2013 दिनांक 4-3-14

4. एनएमएमएस 2013-2014 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति सम्बन्धी निर्देश एवं क्लेम बिल का प्रारूप।

● राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर (विज्ञान एवं गणित विभाग) ● क्रमांक : राराशैअप्रसं-उदय/वि-2/एन.एम.एम.एस./फा-1061/14 दिनांक 06.03.14 ● विषय- एनएमएमएस 2013-2014 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति सम्बन्धी निर्देश एवं क्लेम बिल का प्रारूप शिविरा पत्रिका में प्रकाशन हेतु।

उपयुक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि एन.एम.एम.एस. 2013-14 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति सम्बंधी आवश्यक निर्देश समय पर

पूर्ति करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारी एवं छात्रों हेतु छात्र हित में शिविरा में प्रकाशन हेतु पत्र प्रेषित है। संलग्न– 1. सूचना प्रपत्र 2. क्लेम बिल प्रारूप

निदेशक ● राजस्थान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

एन.एम.एम.एस. छात्रवृत्ति के संबंध में आवश्यक निर्देश

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा आयोजित नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप 2013–14 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति सम्बन्धी आवश्यक निर्देशः–

1. छात्रवृत्ति हेतु चयनित छात्रों को एसबीबीजे/एसबीआई बैंक में स्वयं के नाम से खाता खुलवाकर बैंक खाते के पास बुक की प्रथम पृष्ठ की छाया प्रति भेजना।
2. चयनित छात्रों को अपना आधार कार्ड बनवाकर उसकी छाया प्रति भेजना।
3. कक्षा 8 वीं उत्तीर्ण प्रगति पत्र की छाया प्रति।
4. निर्धारित प्रारूप में क्लेम बिल फार्म को पूर्ण कर प्रेषित करना।

उपर्युक्त सभी पूर्तियाँ पूर्ण कर **5 मई 2014** तक सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम) के कार्यालय में जमा करावे। राज्य के सभी जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक प्रथम छात्रों की समेकित सूचना निर्धारित 24 कॉलम प्रारूप में **15 मई 2014** तक अनिवार्यतः एसआईईआरटी, उदयपुर को प्रेषित करावे।

नोटः परीक्षा परिणाम rajshiksha.gov.in website तथा सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक प्रथम/द्वितीय कार्यालय में उपलब्ध है। ● निदेशक ● राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

National Means-cum-Merit Scholarship Scheme State Rajasthan

Claim Bill Performa for Payment of Scholarship

a. Scholarship is paid in advance at the beginning of the session.

b. Fill the form and get it signed from the Principal of your School where you are studying and submit it to the District Education Officers (Secondary).

1.	Name of the Candidate: (in block letters)	.....
2.	(a) Year of Selection :	.....
	(b) State/Roll No.:	.....
	(c) Reference/File Number, if any, issued by State	...../...../.....
3.	Class and year for which claim bill is submitted	Class..... Year of claim.....
4.	Name and Address of the School/College in which he/she is studying/ studied in the year for which claim bill in being submitted (in capital letters)	....Pin.....
5.	Marks obtained in the previous year Annual Examination (In Main 6 Subjects) (Attach photocopy of mark sheet)	Year of examination..... Total marks obtained..... Maximum marks..... Percentage of obtained Marks.....
6.	Postal Address for correspondence	....Pin.....
7.(i)	Rate of scholarship par month	Rs.:.....
(ii)	Number of the months for which the scholarship is claimed.	Months:..... Amount (in figures):..... .....
(iii)	Total amount	(in words):.....
8.	Details of any Other scholarship/ ad hoc grant received - Name of scholarship - Name of the awarding authority - Amount	
9.	Details of Bank Account - SBI Core Bank Account Number	SBI core Banking Account No..... SBI Branch Code..... .....city.....
	OR - Electronic Clearance Facility (The SBI does not have core banking facility or the city does not have SBI)	Bank Account No..... Name of the Bank..... Branch Code..... city.....

10. Certified that
    - the amount for the above mentioned claim year (item 3) has not been claimed before.
    - I have verified all the entries and there is no error in it. I am fully responsible for the error. if any.

Photocopy of the bank account giving account number, name of bank, branch code is enclosed

Signature of Awardee.....
Signature of Parent/ Guardian.....

Certified that Master/Mr. ..... is a bonafide student of.....since.....and that particulars furnished by him/her are correct.

Signature of Principal/Head of Institution with Seal

ADVANCE RECEIPT

Received a sum of Rs. ..... (Rupees.....) from the State/UT.....to wards the scholarship for the period from.....to.....under the national Means-cum-Merit Scholarship Scheme.

Signature of the Awardee (on Revenue Stamp)

NB: 1. Scholarship will commence from July. It will be paid for maximum period of 12 months or period of course whichever is minimum.

2. In case of advance receipt, please fill in the amount for the total period not exceeding 12 months.

3. The claim bill is to be submitted for each class/year separately.

5. शिविरा पंचांग 2013-14 में संशोधन

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/माध्य/मा/स/22419/2013-14 दिनांक 18.3.14 ● कार्यालय आदेश ● राज्य सरकार के पत्रांक प. 32(1) शिक्षा-1/शिविरा पंचांग/2000 पार्ट, जयपुर दिनांक : 14.3.14 द्वारा प्रदत्त स्वीकृति के क्रम में शिविरा पंचांग : 2013-14 में तत्काल प्रभाव से एतद् द्वारा संशोधन किये जाते हैं:-

क्र.सं.	पंचाग में उल्लेखित कार्यक्रम	पूर्व निर्धारित तिथियां	संशोधित तिथियां
1.	कक्षा 1 से 9 व 11 की वार्षिक परीक्षा का आयोजन	10 अप्रैल 2014 से 24 अप्रैल 2014	28 अप्रैल 2014 से 08 मई 2014
2.	परीक्षा परिणाम की घोषणा	30 अप्रैल 2014	10 मई 2014
3.	नवीन सत्र 2014-15 का आरम्भ	01 मई 2014	12 मई 2014
4.	ग्रीष्मावकाश	17 मई 2014 से 30 जून 2014	यथावत

उप निदेशक (माध्यमिक) ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/22419/2013-14 दिनांक 18.03.2014

दूसरों से घृणा वैसा है जैसा चूहों से छुटकारा पाने के लिए अपने घर में आग लगा देना।

क्षमा कर देना अपने आप में घृणा से छुटकारा पाना है। यह कमज़ोरी नहीं है, यह शक्ति है।

शाला प्रांगण से

58वीं राज्यस्तरीय तैराकी प्रतियोगिता

बूंदी। रा.उ. माध्यमिक विद्यालय खटकड़ (बूंदी) की तैराकी टीम 58वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में 4 x 100 मी. एफ.एस. रिले में द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक हासिल किया। विजेता टीम को शाला प्रधान तथा छात्रों द्वारा दल के सभी खिलाड़ियों व कोच का स्वागत कर अभिनन्दन किया गया।

एक दिवसीय शिविर का आयोजन

हनुमानगढ़। रा.उ. माध्यमिक विद्यालय, गोलूवाला (हनुमानगढ़) में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा 12 फरवरी 2014 को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के बौद्धिक सत्र में आयुर्वेदिक औषधियों का उपयोग व महत्व विषय पर वार्ता का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. धर्मेन्द्र कुमार वर्मा (प्रभारी, राजकीय आयुर्वेदिक औषधमालय) ने स्वयंसेवकों को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के महत्व देते हुए घरेलू वस्तुओं धनिया, लहसुन, अदरख, अजवायन, कालीमिर्च, हल्दी, लौंग आदि के गुणों व सामान्य बीमारियों में इनके उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने आदर्श दिनचर्या का परिचय देते हुए ब्रह्म मुहूर्त में उठने, सद्य स्नान करने, योग व व्यायाम करने, नियमित पौष्टिक आहार लेने, शारीरिक श्रम करने और अहंकार, क्रोध, नशे आदि से दूर रहने की प्रेरणा दी। प्रधानाचार्य सत्यपाल शर्मा ने धन्यवाद देते हुए छात्रों को आयुर्वेद की ऐतिहासिक जानकारी प्रदान की और भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन शैली अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम अधिकारी दयाराम ने कार्यक्रम का संयोजन व मंच संचालन किया।

शुभ और सभ्यता

शुभ और अशुभ जीवन का ताना-बाना है। प्रकृति ने ऐसा ही जीवन हमको प्रदान किया है और इस ताने-बाने के द्वारा इतिहास-कार्य सम्पन्न होता है। शुभ और अशुभ के बीच संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में शुभ की विजय संस्कृति और शालीनता की विजय है। ज्यों-ज्यों शुभ की वृद्धि और अशुभ की हानि होती है त्यों-त्यों सभ्यता की उन्नति होती है। मानव के आत्म-विकास में भी यह संघर्ष सहायक होता है। बिना संघर्ष के आत्म-विकास सम्भव नहीं है। जिस व्यक्ति के सामने कोई समस्या नहीं है, जिसने किसी समस्या के हल करने का प्रयत्न नहीं किया है उसके व्यक्तित्व का विकास कैसे हो सकता है ? शुभ कर्म के लिए अदम्य उत्साह का होना, जुल्म, अन्याय, दारिद्र्य के विरुद्ध अनवरत युद्ध करना एक विकसित व्यक्तित्व का कार्य है। निरन्तर संघर्ष करके ही मानव पाशविक जीवन से ऊपर उठा है और उसने जीवन के नवीन मानवीय मूल्यों की सृष्टि की है। मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त की है और यदि हम बहुजन-हित सुख के उद्देश्य से प्रेरित होकर काम करें तो विपुल साधनों का उचित उपयोग करके हम दारिद्र्य और सामाजिक अन्याय का अन्त कर सकते हैं, और उन सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सकते हैं जिनके लिए मनुष्य ने अनेक लड़ाइयां लड़ी हैं और अथक परिश्रम किया है। खेद है कि साधनों के विपुल होते हुए भी दारिद्र्य और विषमता का अन्त नहीं होता। पूंजीवादी समाज साधनों पर अपने लाभ के लिए प्रभुत्व कायम रखना चाहता है और अपने हितों पर समाज के कल्याण को निछावर करता है। शोषित किसान और मजदूर इस अन्याय को रोकने में अपने को असमर्थ पाते हैं। उनमें शिक्षा और धन की कमी है। उनका संगठन दुर्बल है। वर्ग-संघर्ष के द्वारा यह वर्ग शिक्षित और संगठित होते हैं। यही इनकी पाठशाला है। आदर्शों के लिए कष्ट सहन करना, एक-दूसरे के लिए त्याग की भावना रखना इत्यादि गुणों का पोषण इन पिछड़े हुए वर्गों में इसी प्रकार होता है।

-आचार्य नरेन्द्र देव

शिविरा पंचांग

अप्रैल, 2014

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

● **कार्य दिवस 22, रविवार 04, अवकाश 04, उत्सव 04** ● **1 अप्रैल**-चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव) **8 अप्रैल**-रामनवमी (अवकाश-उत्सव) **13 अप्रैल**-महावीर जयन्ती, अहिंसा दिवस (अवकाश-उत्सव) **14 अप्रैल**-डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती (अवकाश-उत्सव) **18 अप्रैल**-गुडफ्राइडे (अवकाश) **28 अप्रैल से 8 मई**-कक्षा 1 से 9 एवं 11 की कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाएं।

रपट

101वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस

❒ डॉ. रूपा पारीक

एक सौ वर्ष पहले जनवरी, 1914 में जब पहली बार भारतीय विज्ञान कांग्रेस का सम्मेलन हुआ तो उसी दिन हमारी स्वतन्त्रता का संघर्ष साकार हो उठा था क्योंकि स्वराज के साथ आवश्यकता होती है स्वदेशी विज्ञान और तकनीक की, और उसकी शुरुआत हो चुकी थी।

प्रतिवर्ष की भांति भारत के प्रधानमंत्री माननीय मनमोहन सिंह जी द्वारा 3 फरवरी को जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू कश्मीर के विशाल परिसर में, भव्य पाण्डाल में, पांच हजार से अधिक वैज्ञानिक व बाल वैज्ञानिक प्रतिभाओं के समक्ष ''101वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2014'' का उद्घाटन किया गया। ''समग्र विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचार'' केन्द्रीय विषय पर आधारित इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के विकास में विज्ञान-तकनीकी और वैज्ञानिकों की भूमिका से सभी परिचित हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी से उद्योग और रोजगार का व्यापक क्षेत्र जुड़ा हुआ है। इसी से देश की अर्थव्यवस्था में सुधार सम्भव है। बायो तकनीकी, नाभिकीय व परमाणुवीय ऊर्जा, चन्द्रयान व मंगल अभियान से जुड़े अंतरिक्ष कार्यक्रम, अनुसंधान व विकास का महत्व, विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में भारत की वैश्विक महत्ता आदि का विस्तार से उल्लेख किया गया। उन्होंने कहा कि सत्य-तथ्य और मूल आधारित विज्ञान की सामाजिक स्वीकार्यता दिनों-दिन बढ़ रही है, यह प्रसन्नता की बात है। विद्यार्थियों में निरन्तर वैज्ञानिक सोच विकसित करने से ही यह संभव है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो. रणबीर चन्दर सोबती ने अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, कृषि, विकास दर के आधार पर भारत व अन्य देशों की तुलना प्रस्तुत कर यह चिन्ता व्यक्त की कि हमें विज्ञान व तकनीकी अनुसंधान विकास में अपना निवेश बढ़ाना चाहिए।

उद्घाटन अवसर पर श्री जयपाल रेड्डी, केन्द्रीय विज्ञान एवं तकनीकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री, भारत सरकार ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी में नवाचार, चिकित्सा विज्ञान में रोटा वायरस की खोज, क्रायोजनिक स्वदेशी तकनीकी, मौसम विभाग द्वारा हिन्द महासागर से उठे तूफान की सटीक भविष्यवाणी आदि का विस्तृत विवरण दिया। अनुसंधान-ज्ञान और उससे प्राप्त मूल्य व सम्पदा के मध्य सम्बन्ध का भी उल्लेख किया।

''ऊर्जा अन्वेषण, बचत और संरक्षण'' पर आधारित बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन 4 फरवरी को पूर्व राष्ट्रपति वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम ने किया। इसमें सभी राज्यों से दो सर्वश्रेष्ठ परियोजनाओं को सम्मिलित किया गया जो राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में राज्य स्तर पर कनिष्ठ और वरिष्ठ समूह में प्रथम स्थान पर रहीं। कुल 67 परियोजनाएं प्रस्तुत की गईं। अपने उद्बोधन में मिसाइल मैन कलाम ने याद दिलाया कि प्रत्येक वैज्ञानिक खोज और आविष्कार सामाजिक परिवर्तन का आधार होती है। आग और पहिए से लेकर वर्तमान संचार क्रांति तक उल्लेख उनके वक्तव्य में सम्मिलित था। उन्होंने बच्चों से संकल्प कराया-

"I am born with dreams. I am born with ideas indeed. I am born with peace. I am born with confidence, I try, I try and I fly, I am born to fly."

इन शब्दों से उन्होंने बाल वैज्ञानिकों को आत्मविश्वास के साथ ऊंची उड़ान के लिए तैयार किया।

बाल विज्ञान कांग्रेस में राष्ट्रीय विज्ञान मेले में चयनित बारह उत्कृष्ट विज्ञान प्रादर्श रोबोट, निटिनॉल ईंधन, बायो-रिएक्टर, नेचुरल गीजर, सोलर रिक्शा आदि का प्रभावी प्रदर्शन किया गया।

4 फरवरी को ही सातवें राष्ट्रीय विज्ञान संचारक सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग, कृषि दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं के लिए तैयार किए गए वैज्ञानिक नवाचार आधारित समाधानों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। राजस्थान के किसान जगदीश पारी (अजीतगढ़) के पचास वर्ष से भी अधिक लम्बे कृषक जीवन की उपलब्धि की सभी ने सराहना की। उनके देशज नवाचारों में सामान्य से दस गुना अधिक वजन और आकार की सब्जियाँ सबके आकर्षण का केन्द्र रहीं। दूसरी तरफ सुविधाजनक हल्की बैशाखी, व्यर्थ होती विकिरण ऊर्जा से पानी गर्म करने जैसे नवाचार भी प्रदर्शित किए गए।

तृतीय महिला विज्ञान कांग्रेस का शुभारम्भ 5 फरवरी को जनाब फारुख अब्दुल्ला, ऊर्जा एवं नवीन ऊर्जा मंत्री, मंत्रालय जम्मू कश्मीर द्वारा किया गया। जम्मू विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रोफेसर मोहन पाल सिंह ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महिलाओं के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि विश्व की आधी जनसंख्या महिला हैं। अत: विज्ञान के क्षेत्र में उनकी सक्रिय भागीदारी समग्र एवं संतुलित विकास के लिए आवश्यक है। महिला वैज्ञानिकों के शोध पत्रों की पुस्तिका का विमोचन किया गया, जिसमें चिकित्सा, स्वास्थ्य,संचार क्रान्ति, भूविज्ञान, रसायन, विज्ञान, कृषि व पर्यावरण सम्बन्धी शोध-पत्र सम्मिलित किए गए।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2014 में "Mega Expo Vision 2020" प्रदर्शनी में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का पण्डाल विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा, जहाँ भारतीय सेना में उपलब्ध अत्याधुनिक युद्धक विमान, जलपोत, मिसाइल, बंदूकें, बुलट प्रुफ जैकेट, जैविक रासायनिक युद्ध में उपयोगी पोशाकें आदि प्रदर्शित की गई थी जो हमें अपने देश की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त करती हैं।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस 2014 का समापन माननीय हामिद अंसारी, उपराष्ट्रपति महोदय के प्रेरक उद्बोधन के साथ 7 फरवरी को हुआ। विज्ञान के इस महापर्व में सम्मिलित वैज्ञानिक समुदाय ने इस इरादे के साथ एक-दूसरे से विदाई ली कि अगले वर्ष फिर नये जोश और ऊर्जा के साथ खुशहाल समाज और मजबूत राष्ट्र के निर्माण में वैज्ञानिक योगदान के साथ फिर मिलेंगे।

इस प्रकार 101वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का यह महायज्ञ विज्ञान के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच गया जिसकी खुशबू बाल वैज्ञानिकों के जेहन में सदैव बनी रहेगी।

-व्याख्याता,रा.उ.मा.वि.हुरडा (भीलवाड़ा)
मो. 9461765960

आम चुनाव 2014

लोकतंत्र की करने हिफाजत, दिखाए तर्जनी अपनी ताकत

❒ प्रकाश पंड्या

विश्व का सबसे बडा जनतन्त्र इस माह लोकतन्त्र का महा महोत्सव का सुकून पा रहा है। सोलहवीं लोकसभा के चुनाव का शंखनाद हो चुका है। देश का मतदाता जनतन्त्र के प्रमुख स्तम्भ के भाग्य विधाता का किरदार निभाने को उद्यत और आतुर है। वह अपने वोट के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ स्वयं के विधायिका निर्माता होने का गौरव महसूस कर रहा है । इस विशेष अवसर पर लोकतन्त्र के आत्म कथ्य ''यथा प्रजा तथा राजा'' के महत्व को प्रतिपादित करते हुए मत की महिमा और मतदाता के अधिकार-कर्त्तव्य के विषय में लोकतन्त्र की सुदृढता के लिए भावनाएं शब्द बनकर सरकार निर्माताओं तक पहुंचने को व्यग्र है। आईये, लोकतन्त्र की हिफाजत में तर्जनी की ताकत का बोध करें और संविधान में दिये मतदान के अधिकार का जागरुकतापूर्वक प्रयोग करें ।

तकनीक बनी वरदान : समय बदला और उसके साथ ही बदल गई तकनीक । घर-परिवार, समुदाय, समाज का बुजुर्ग तबका जिसने विगत 6 दशकों में अपनी पसन्द की सरकार चुनने के लिए अब तक हुए चुनावों में हर बार ठप्पा लगाया है लेकिन अब पांचों अंगुलियों को मिलाकर ताकत दिखाने का समय नहीं रहा अब तो एक अकेली तर्जनी अपनी ताकत दिखायेगी और मात्र बटन दबाकर देश में अपनी पसन्द की सरकार का गठन करेगी।

जी हां मतदाता का नाम पुकारे जाने के बाद युवा हो या वृद्ध हाथ में अपनी जानकारी पूरित पर्ची लिये मतदाता जब आगे बढ़ेगा तब उसे स्टाम्प पेड की स्याही से पोतकर सील नहीं दी जायेगी बल्कि वह सीधे ही उस मशीन की तरफ जायेगा जहां हाथ की तर्जनी अपनी ताकत का अहसास कराती हुई देश में सरकार बनाने का रास्ता तय करेगी। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से मतदान के कारण अब न मतदाताओं के सामने अपनी पसन्द के उम्मीदवार के नाम के आगे ठीक से मुहर लगने न लगने की चिंता है न ही खड़ा अथवा आड़ा मत पत्र मोड़ने को लेकर किसी तरह की टेन्शन है। अब तो जो ताकत क्रिकेट के मैदान में अम्पायर की तर्जनी प्रदर्शित करती है वही ताकत चुनावी मैदान में मतदाता की तर्जनी दिखला सकेगी।

स्वीप बना लोकन्त्र का प्रहरी : भारत निर्वाचन आयोग की देशव्यापी पहल और निर्देश के बाद वोट डालने को लेकर जन जागरण पैदा करने की दिशा में प्रत्येक जिला प्रशासन ने अपने यहां के लोक कलाकारों के जरिये भरपूर वातावरण निर्माण किया जा रहा है । सैंकड़ों लोगों के एक स्थान पर इकट्ठे होने की सांस्कृतिक परम्परा के रुप में हाट बाजारों का भरपूर उपयोग करते हुए गांव-ढाणी तक वोटिंग मशीन से वोट देने की तकनीक का व्यावहारिक प्रदर्शन एक अभियान के रुप में कराया है। अपनी कला के माध्यम से पूरे राजस्थान और देश के कई हिस्सों में अपनी छाप छोड़ने वाले स्थानीय कला जत्था कलाकारों ने सहज और जन सामान्य को शीघ्र समझ में आने वाली विधि से वोटिंग मशीन से मतदान का तरीका समझाने में सराहनीय योगदान दिया है। मताधिकार के प्रति

जन जागरण के भारत निर्वाचन आयोग के निर्देषों की क्रियान्विति के लिए सम्पूर्ण राज्य में ''स्वीप'' प्रकोष्ठ गठित किए गए हैं जिन पर मताधिकार के सदुपयोग के प्रति जन चेतना का अहम जिम्मा है।

मेरा मत लिये बिना... : एक मतदाता के एक मत की महत्ता को देश के महान साहित्यकार कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने अपने लोकप्रिय निबन्ध ''मैं और मेरा देश'' में सार्वजनीन सत्य के रुप में कुछ इस तरह बयां किया है-

''क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिक को आधार बना कर देश की उच्चता और हीनता को हम तौल सकें । लीजिए चलते-चलते आपके इस प्रश्न का भी उत्तर दे ही दूं । इस उच्चता और हीनता की कसौटी है- ''चुनाव'' ।

जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है और जहां के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन हैं।

इसलिए मैं कह रहा हूं कि मेरा यानी हरेक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह जब भी कोई चुनाव हों, ठीक मनुष्य को अपना मत दे और मेरा अधिकार है कि मेरा मत लिये बिना कोई भी आदमी, वह संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष ही क्यों न हो, किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सकें।''

अतः हर नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह चुनाव व वोट के मूल्य को समझें। उसे दोहरी भूमिका निभानी है। वह मतदाता है तो मतदान करने अवश्य जाता है, साथ ही मतदान में बेरुखी दर्शाने वालों को चुनाव व मत का महत्व समझा कर मतदान के लिए तैयार करना है। इसी में राष्ट्र व लोकतंत्र की बुनियाद की सुरक्षा निहित है।

-कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, बांसवाड़ा
मो.9414101857

नकल मनोविज्ञान

नकल की बढ़ती प्रवृत्ति, आखिर क्यों?

❒ रूपनारायण काबरा

परीक्षाओं के साथ-साथ ही आ जाता है मौसम नकल का भी। सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं महाविद्यालयी, विश्वविद्यालयी सभी स्तर की परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है। शिक्षा, परीक्षा और नकल एक 3-डी तस्वीर है हमारे शैक्षिक ढाँचे की। हमारा भौतिक पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। हवा, पानी सभी प्रदूषित हो रहे हैं। शोर और धुंआं बढ़ता जा रहा है। हमारी मानसिकता में भी जबरदस्त प्रदूषण है। यह नकल की प्रवृत्ति, जिसका आधार है बिना कुछ किए सब कुछ पा जाने की हमारी प्रवृत्ति। प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालयी परीक्षाओं में धोखाधड़ी। चपरासी से लेकर न्यायाधीशों की पद-प्रतियोगिता में नकल। हम हमारा दिल, दिमाग और कौशल जितना पढ़ने में नहीं लगाते उससे ज्यादा तो नकल में लगा देते हैं।

एक नहीं कम से कम 320 नकल करने वाले छात्रों से हमने साक्षात्कार किया, जिनमें 150 को तो बोर्ड की परीक्षा से 'डिबार' कर दिया गया था। सभी छात्र माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के थे। व्यक्तिगत विश्वास में लेकर उनसे नकल करने की प्रवृत्ति का कारण पूछा गया।

अधिकांश ने स्पष्ट कहा, ''सर, साफ बात तो यह है कि हम दसवीं-ग्यारवीं तक आ गए हैं, केवल नकल के बलबूते पर। हमें अभी आप छठी या सातवीं कक्षा का प्रश्नपत्र दो तो हम निश्चय ही उसमें फेल हो जाएंगे। जब इतना पा लिया है तो बाकी भी पा लेंगें। बीच में झटके भी लग जाते हैं। पकड़े भी जाते हैं। सजा भी मिलती हैं, पर क्या करें? रास्ता तो यही बचा है हमारे लिये । हम अब पढ़ तो सकते नहीं। हमारी हालत वैसी ही है जैसी बस या रेल में आदतन बिना टिकट लिए चलने वालों की होती है। वे पकड़े भी जाते हैं और उस घाटे की पूर्ति भी वे उसी प्रकार करते हैं। यह नकल करना सीखा क्यों? इसके उत्तर में अधिकांश छात्रों के बयानों से लगा कि कक्षा में गुरुजी ने कोई ध्यान नहीं दिया, माता-पिता को फुर्सत नहीं यह सब देखने की और परीक्षा में पास होना तो जरूरी होता ही है न!

नकल की प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी मुख्य घटक है-नकल की तीव्र आवश्यकता, अध्यापकीय उपेक्षा, नकल करने का कौशल, नकल करने की हिम्मत, अध्यापक को आतंकित कर सकने की क्षमता, अध्यापकीय कमजोरी या पक्षपात, माता-पिता तथा अभिभावक की उदासीनता एवं दायित्वहीनता, पास बुकों का कुप्रभाव, नकल के खिलाफ प्रशासकीय सख्ती की कमी। जो भी छात्र नकलची बने हैं, इन्हीं कारणों से बने हैं। जो एक बार इस रास्ते पर बढ़ चला और प्रारंभ में ही यदि उसे आंशिक सफलता मिल गई तो वह बढ़ता ही चला जाता है। अब जरा इन घटकों पर विचार कर लें-

नकल की तीव्र आवश्यकता-यह आवश्यकता उसी को होगी जिसकी तैयारी नहीं होगी। जिसने सत्रपर्यन्त पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया अथवा जो वैयक्तिक या पारिवारिक किन्हीं भी कारणों से पढ़ नहीं पाया हो और जो पढ़ाई के अभाव में अनुत्तीर्ण होने का साहस नहीं रखता है, उसके लिए नकल अपरिहार्य हो जाती है।

अध्यापकीय उपेक्षा-आज की भीड़ भरी कक्षाओं में तो यह संभव भी नहीं कि अध्यापक व्यक्तिगत ध्यान दे पाए। छात्र एवं अध्यापक के संबंध इतनी दूरी के होते हैं कि न अध्यापक कोई दिलचस्पी लेता है और न छात्र निःसंकोच सहायता। दोनों में पारस्परिक संप्रेषण नहीं है। गिरते मूल्यों की इस दौड़ में शिक्षक से भी इतनी निष्ठा की अपेक्षा नहीं की जा सकती है कि वह प्रत्येक छात्र में व्यक्तिगत दिलचस्पी ले। परिणामस्वरूप उपेक्षित छात्रों के पास नकल ही एक सहारा होता है।

नकल का कौशल-नकल करना तो अधिकांश चाहते हैं। कोई पास होने के लिए तो कोई पोजीशन के लिए। उद्देश्य भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, पर नकल करना कोई आसान काम नहीं है। सामान्यत: यह कार्य आँखों में धूल झोंक कर किया जाता हैं, जिनके पास यह कौशल है वे यथाशक्ति इसका सहारा लेते ही हैं।

नकल करने की हिम्मत-नकल करने पर सब कुछ सहने की, सामना करने की हिम्मत होनी चाहिए। दुनिया की हर बेईमानी के साथ कौशल और हिम्मत जुड़ी रहती है। एक दब्बू व्यक्ति, एक औसत बुद्धि वाला व्यक्ति सामान्यत: बेईमान नहीं बन सकता। कई बार देखा गया हैं कि ''विशिष्ट नकलची'' बच्चों को ढंग से ''टेकल'' किया गया तो वे अच्छे विद्यार्थी बन गए। कहने का तात्पर्य यह है कि सफल नकलची साधारण व्यक्ति नहीं होता है।

आतंकित कर सकने की क्षमता-हिम्मत के साथ ही जुड़ी हुई है आतंकित कर सकने की क्षमता। इसके लिए विशिष्ट ''पर्सनेलिटी'' विशिष्ट पहनावा, विशिष्ट मुद्रा, बात करने का टोन यह सब तो विशिष्ट होते ही हैं।

अध्यापकीय कमजोरी या पक्षपात-कुछ तो अध्यापक ही इतने कमजोर व्यक्तित्व एवं मनोबल के होते हैं कि वे डराये जाने के पहले ही डरे होते हैं, आशंकित होते है शायद इसीलिए देखकर भी अनदेखी करते हैं। उनको अनदेखी करते देखकर नकलची समझ जाता है कि वह मुसीबत से दूर रहना चाहता है और बस उसका हौसला बढ़ जाता है। कुछ श्रीमान तो ऐसे होते है जो स्वयं प्रोत्साहित करते है चाहे डरकर, चाहे सस्ती लोक-प्रियता के चक्कर में अथवा फिर अन्य के चक्कर में या किसी को 'ओब्लाइज' करने को। ऐसे अध्यापक नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन और संरक्षण देते है। यह बहुत गलत है। ऐसा कतई नहीं करना चाहिए।

अभिभावक उदासीनता-यह कहानी सभी ने पढ़ी है कि जब माता ने बच्चे की स्कूल में की गयी छोटी-मोटी चोरी के लिए उसे रोका-टोका व दंडित नहीं किया तो वह नामी चोर बन गया। माता-पिता की उदासीनता छात्रों को इस दिशा में बढ़ने का एक जबरदस्त कारण है। वे यह जानने की कोशिश ही नहीं करते कि उनका लाड़ला क्या पढ़ता है? उसे क्या आता है, क्या नहीं? वे उसका प्रगति पत्र भी गौर से नहीं देखते। अशिक्षित माता-पिता भी चाहे तो पूरी जानकारी

ले सकते है पर वे तो बच्चों को स्कूल में भर्ती कराके अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं। अभिभावकों की यह उदासीनता बच्चों की गलत प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती है।

पास बुक्स का कुप्रभाव–पास बुक्स और कुंजियों की शिक्षा विभाग, बोर्ड एवं शिक्षाविद् सभी आलोचना करते हैं, फिर भी वे धड़ल्ले से बिक रही हैं। शिक्षण सामग्री का तो प्राय: अभाव रहता है पर पास बुक, कुंजियां, नोट्स एवं गाइड्स इत्यादि छा रहे हैं, बाजार में। पाठ्य पुस्तकें तो कई बार कुंजियों के सहारे बेची जाती है ''कुंजी लो तो किताब मिलेगी।'' इनके कारण छात्र कक्षा से कभी भी पलायन कर जाते हैं। वे अध्यापक के अध्यापन को नहीं स्वीकारते और कई अध्यापक तो स्वयं भी कुंजियों का सहारा लेते हैं। नकल करने वाले छात्र पास बुकों के भरोसे कक्षाओं से विमुख रहते हैं और साधन बनाते है नकल को।

प्रशासकीय शिथिलता–लगता है कि जैसे नकल करने वालों से प्रशासन भी कतराता है। यदि नकल करने वालों को यह विश्वास हो कि पकड़े जाने पर उन्हें निश्चय ही सजा मिलेगी तो बात कुछ और हो, पर वे जानते है कि पकड़ने का भी लगभग एक नाटक ही है (विशेषत: मिडिल कक्षाओं तक) तभी तो कुछ नहीं जानते हुए भी नीचे की सब कक्षाएं पार करके वे सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं कॉलेज शिक्षा तक पहुँच गए हैं। नकल के नये–नये साधन और तरीके निकाले जा रहे हैं, संकेत बनाए जा रहे हैं। छिपाने की कला विकसित की जा रही है। आज नकल स्कूलों कॉलेजों तक ही नहीं प्रतियोगी परीक्षाओं तक में जा पहुंची है। अब बच्चे ही नहीं, शिक्षक भी, बुजुर्ग भी नकल करने लगे हैं। नकल हमारे जीवन का अंग बनती जा रही है। **इस दुष्प्रवृति को नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों के माध्यम से मिटाया जा सकता है। हम सभी को इस दिशा में संगठित एवं समन्वित प्रयास करने चाहिए।**

परीक्षाओं में ही नहीं हम जीवन के हर क्षेत्र में नकल करने लगे हैं। हम नकली चीजें, नकली दवाएं बनाने लगे हैं। अपनी संस्कृति तक से दूर हटकर डिस्को संस्कृति को नकल करने लगे हैं। नकल को जीवनयापन की जगह अब जीवन का आधार मानने लगे हैं हम।

किशोर कुटीर, ए–438, वैशाली नगर, जयपुर
मो. 8233360830

नैतिक शिक्षा

विद्यालयों में प्रभावी मूल्य शिक्षा

❒ डॉ. कल्पना शर्मा

हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है जो किसी समय में सोने की चिड़िया एवं विश्वगुरु के नाम से जाना जाता था। प्रत्येक मानव के अस्तित्व को पहचान एवं सम्मान दिलाने वाले मूल्य ही प्रजातंत्र के वाहक होते हैं। इन मूल्यों को हम मानव मूल्य भी कहते हैं,इनके आधारों में लोक कल्याण की चेतना प्रमुख है। आदिकाल से हमारे यहाँ मूल्य शिक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में तो मूल्य शिक्षा का स्थान सर्वोपरि था।

आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं, शिक्षा पद्धति भी बदल गई है । यही कारण है कि आज शिक्षा जीविकोपार्जन या अर्थोपार्जन का माध्यम भर रह गई है।आज हर अभिभावक का सपना है, उसका बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. आदि बने और अधिक से अधिक वेतन कमाएं। इस उपलब्धि को ही साध्य मानकर मात्र रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। चूंकि मनुष्य सृष्टि का श्रेष्ठतम प्राणी है, अत: सृष्टि के संतुलित संचालन में उसकी सर्वाधिक दायित्वपूर्ण भूमिका है।

प्राचीन समय में मूल्य शिक्षा के कई साधन हुआ करते थे–जिनमें दादी, नानी की कहानियाँ, चौपालों पर बुजुर्गों के कहानी किस्से आदि । लेकिन आज भौतिकता की भयावह में ये सब उड़ चले हैं । मूल्य शिक्षा के माध्यम अब विद्यालय हैं। विद्यालय वह स्थान है जहाँ सुसंस्कृत नागरिक तैयार होते हैं और नागरिकों से ही समाज और राज्य का निर्माण होता है। अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालयों में देश व समाज के मूलभूत ढाँचे की शिक्षा दी जानी चाहिये। यह शिक्षा मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये। विद्यालयों में प्रभावी मूल्य शिक्षा निम्नांकित प्रकार से दी जा सकती है :–

प्रार्थना सभा : प्रार्थना का मूल उद्देश्य एकाग्रता है। एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है। विद्यार्थियों के लिये जहाँ दिन की शुरूआत प्रार्थना से होती है, इसी के द्वारा बालकों में संस्कार निर्माण एवं अच्छे नागरिक के निर्माण में अहम भूमिका होती है। इस हेतु परमावश्यक है कि प्रार्थना सभा का प्रभारी ऐसे शिक्षक को बनाया जावे जो कि प्रार्थना सभा का श्रेष्ठ संचालन पूर्ण मनोयोग से कर सके। प्रतिदिन प्रार्थना सभा वाद्य यंत्रो के द्वारा पूर्ण हो एवं सप्ताह के प्रति दिवस भिन्न–भिन्न प्रार्थनाएं करवाई जानी चाहिये । प्रार्थना के पश्चात प्रेरक प्रसंग, नैतिक शिक्षा पर आधारित लघुकथा, दोहा, समाचार, पत्रवाचन, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, अनमोल वचन आदि का प्रस्तुतिकरण विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों की सहभागिता व हर्षोल्लास से किया जाना चाहिये । प्रेरणादायी देशभक्ति गीतों की समवेत प्रस्तुति विद्यार्थियों में जोश भरते हुए विद्यालय के समूचे वातावरण को ऊर्जावान बना देते हैं। प्रतिदिन संस्था प्रधान अथवा शिक्षकों के प्रेरणादायी उद्बोधन बालकों को सुसंस्कारित कर सद्गुणों के विकास का एक सशक्त माध्यम है। प्रार्थना सभा में प्रतिदिन बालकों का आसन, ध्यान व प्राणायाम का व्यावहारिक ज्ञान भी प्रदान करावें ।

बाल सभा : बाल सभाएं प्रभावी मूल्य शिक्षा में अत्यन्त सहायक हो सकती है । बाल सभाओं में मूल्यपरक गतिविधियां सम्पन्न की जावें । विविध प्रकार की प्रतियोगिताएँ यथा–वाद विवाद, काव्य पाठ, अंत्याक्षरी, भाषण, गीत की संगीतमय प्रस्तुति का आयोजन कर मूल्य शिक्षा की दृष्टि से विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ।

उत्सव एवं पर्व : शिविरा पंचांगानुसार सत्र पर्यन्त विविध प्रकार के उत्सव एवं पर्वो के प्रभावी आयोजन द्वारा बालकों में मूल्य शिक्षा के प्रति रुझान पैदा किया जा सकता है। इन आयोजन के अवसरों पर विविध उत्सव एवं पर्वो के सामाजिक महत्व एवं प्रासंगिकता आदि पर प्रभावी चर्चा से भी मूल्य शिक्षा का एक प्रभावी जरिया बनाया जा सकता है। महापुरुषों की जयन्तियों के अवसर पर महापुरूषों के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं–प्रसंगों आदि को विद्वान वक्ताओं को आमंत्रित कर उनके प्रेरणादायी

उद्‌बोधन करवाये जाने चाहिये ।

पुस्तकालय एवं वाचनालय : विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इस हेतु विद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं की समुचित उपलब्धता आवश्यक है। प्रति सप्ताह प्रत्येक कक्ष के विद्यार्थियों हेतु पुस्तकालय कालांश की व्यवस्था की जानी चाहिये। यही नहीं बालक पुस्तकालय का कितना उपयोग करते है इस पर भी नजर रखनी चाहिये। पुस्तकालय में श्रेष्ठ साहित्य के अतिरिक्त प्राचीन ग्रंथ यथा रामायण, वेद, गीता, उपनिषद, कुरान एवं बाईबिल भी मंगवायी जानी चाहिये। प्रभावी मूल्य शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा हेतु बालकों का पुस्तकालय, वाचनालय से जुड़ाव पूरे विद्यालय, परिवार एवं समाज को अभिसंचित करेगा ।

विद्यालय भित्ति पत्रिका : यह निर्विवाद सत्य है कि भित्ति पत्रिका, बुलेटिन, विद्यालय की वार्षिक पत्रिकाएं, प्रभावी मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण का तत्व है। भित्ति पत्रिका का सुन्दर संचालन कर छात्रों में विभिन्न भाषाओं, साहित्य, महापुरुषों द्वारा प्रदत्त ज्ञान विज्ञान एवं नवीनतम आंकडों को छात्रों तक पहुँचाया जा सकता है। भित्ति पत्रिका निर्माण, बालकों में लेखन की प्रवृति में वृद्धि, पाठयक्रम संबधी ज्ञान विज्ञान में बढोतरी के साथ साथ बालकों को संवेदनशील एवं सृजनशील भी बनाएगी। इससे बालक कई नकारात्मक गतिविधियों से बच जायेगा जिससे सभी क्षेत्रों में उसका सर्वोगीण विकास हो सकेगा ।

सदन व्यवस्था : सदन की प्रभावी व्यवस्था मूल्य शिक्षा में अत्यंत सहायक सिद्व हो सकती है । विद्यालय में प्रत्येक सत्र में विभिन्न महापुरूषों के नाम पर आधारित सदन व्यवस्था यथा सुभाष सदन, जवाहर सदन, गांधी सदन आदि संचालित की जावे जिससे प्रत्येक सदन में विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थी रखे जायें । प्रत्येक माह विविध गतिविधियों जैसे उत्सव, पर्व आयोजन, दैनिक प्रार्थना सभा, भित्ति पत्रिका का निर्माण एवं प्रदर्शन आदि कार्यक्रम की जिम्मेदारी सदन कों दी जावे। इससे विभिन्न सदनों में प्रतिस्पर्धा का भाव उत्पन्न होगा जो विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं अन्य सहभागी प्रवृतियों में सहभागिता बढायेगा जिससे बालकों में मानवीय एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना हो सकेगी।

शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक वाक्य : विद्यालय वातावरण की प्रभावी मूल्य शिक्षा हेतु काफी कारगर हैं। विद्यालय भवन साफ सुथरा होना चाहिये। विद्यालय के बरामदों में संतो, महापुरूषों, वीरों-वीरागंनाओं के चित्रों को टांगा जाना चाहिये। शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक वाक्यों को लिखकर भी चरित्र निर्माण हेतु प्रभावी वातावरण तैयार किया जा सकता है ।

संवाद और व्याख्यान का आयोजन : विद्यार्थियों को प्रभावी मूल्य शिक्षा हेतु विद्यालय में विभिन्न अवसरों पर शिक्षकों, शिक्षाविदों, शिक्षा शास्त्रियों, मनोवेज्ञानिकों आदि के परस्पर संवाद, समूह चर्चा, व्याख्यान आदि आयोजित किये जा सकते है जिनके सद् विचारों एवं निष्कर्षो को विद्यार्थी अपने व्यवहार में लाने का प्रयास करेंगें ।

शिक्षक का व्यक्तित्व : बालक शिक्षक के आचरण का अनुकरण अनायास सहज भाव से करते हैं। विद्यार्थियों में अपेक्षित संस्कारों का समावेश गुरु के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। अत: एक शिक्षक के लिये अनुकरणीय जीवन और आचरण अत्यावश्यक है। शिक्षक अपने विशिष्ट मानवीय गुणों, आत्मीय व्यवहार तथा सादगीपूर्ण प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण बालकों के हृदय में अपनी जगह बना लेते है।

नि:संदेह विद्यालयों में प्रभावी मूल्य शिक्षा के माध्यम तलाशने होंगे एवं उन्हें क्रियान्वित करना होगा ताकि हमारी भावी पीढी श्रेष्ठ मानवीय गुणों की संवाहक बनकर देश एवं समाज के उन्नयन में अपनी अनुकरणीय योगदान दे सकेगी एवं हमारा देश पुन: गुरू पद पर प्रतिष्ठित होकर विश्व में सोने की चिड़िया कहलायेगा ।

-प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि., पुर (भीलवाड़ा)
मो. 9414838145

**वोट डालना बहुत जरूरी है,
चाहे कोई हो मजबूरी।**

घोषणा-पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक है।

1. प्रकाशन संस्थान	:	माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	विकास एस. भाले
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर
4. प्रकाशक	:	विकास एस. भाले
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर
5. सम्पादक	:	विकास एस. भाले
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,बीकानेर

मैं, विकास एस. भाले घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(विकास एस. भाले)
निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

एक विषय - दो लेखक

किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाए

मशहूर गजलकार निदा फाजली की बच्चों को समर्पित एक गजल का एक..... है, 'सर से यदि मस्जिद है दूर तो चलों यूं करें, किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाए' बच्चे को खुश करना यानी ईश्वर को खुश करण होता है। इसके लिए जरूरी है कि हम बच्चों से उनका बचपन न छिने। आजकल माता-पिताओं की अपेक्षाओं के भार तले दबे बच्चों को देखकर लगता है कि उनका बचपन कहीं खो गया है, वे असमय सयाने हो गए हैं। हमें बच्चों के बचपन से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। यहाँ इस विषय पर दो प्रबुद्ध शिक्षक अभिभावकों के विचार प्रस्तुत हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

आह्वान

बचपन बचाएं

❒ **विश्वजीत गौड़**

आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में बच्चों का बचपन उनसे छिनता जा रहा है। माना कि प्रतिस्पर्धा जरूरी है, लेकिन व्यक्तित्व का निखार हेतु बच्चों की महत्वपूर्ण अवस्था को ही समाप्त कर दें। यह कहां तक उचित है।

आज मैं देखता हूं कि शिक्षा के प्रथम सोपानों में प्री-नर्सरी जिसमें कि दो से तीन वर्ष के बच्चे जिन्होंने कि पूरा बोलना ही ढंग से नहीं सीखा इस प्रतिस्पर्धा में भाग लेने अभिभावक द्वारा पहुंचा दिए जाते हैं। उनका दिन इतना व्यस्त होता है कि उनको प्राकृतिक वातावरण व बचपन का महत्व जैसे बातों को सोचने का ही समय नहीं रहता है। प्रातः 5.00 बजे उठना, दैनिक नित्य कार्यों से निवृत होना (कई बार तो बच्चे अपना दैनिक निवृत की क्रियाएं विद्यालयों में ही कर पाते हैं) नाश्ता, फिर बस पर सुबह 6 या 6.30 बजे बस द्वारा निकल पड़ना दिन भर की यात्रा पर। विद्यालय तो मानो जैसे सजा। सजा काट कर घर पर पहुंचना 2 या 3 बजे और फिर खाना, खेलना, कभी कभी वह भी नाम मात्र का क्योंकि 4 या 5 बजे तो ट्यूशन पर जाना और लौट कर जब वापिस घर आना तो केवल रात्रि भोजन और होमवर्क और फिर सोना। दूसरे दिन वही भागमभाग की जिन्दगी का सफर फिर शुरू। क्या आपने सोचा कि बच्चा आज एक अतिव्यस्तम दौर से गुजर रहा है। वह अपने लिए न जी कर केवल प्रतिस्पर्धा में ही अपना जीवन काट रहा है। उसके प्रकृति के साथ आनन्ददायी क्षणों का लाभ लेना, बच्चों के साथ अपने विचारों का आदान प्रदान करना, घर व परिवार के सदस्यों के साथ संस्कारों को सीखना, जीवन के महत्वों को समझना, शारीरिक व्यायाम (जो कि स्वस्थ दिमाग तथा स्वस्थ शरीर के लिये अति उत्तम है) इत्यादि सपनों को कभी भी पूरा न करने की कमी व अपने जीवनपर्यन्त महसूस करता रहेगा।

मैं उन शिक्षण संस्थानों का शुक्रगुजार हूं जो अपने शिक्षण कार्य के अन्तर्गत बच्चों को प्राकृतिक वातावरण तथा उनके मनोरंजन व शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ उनका मस्तिष्क का विकास कर रहे वही साथ ही भारतीय संस्कृति की शिक्षा भी बच्चों को दे रहे हैं।

परिवारों का बिखराब व भ्रूण हत्याओं जैसी घटनाएं इन मासूम बच्चों के मन पर क्या प्रभाव डालती है, यह शायद हम बड़ों ने कभी सोचा ही नहीं। आज हमने ऐसा कर बच्चों से उनके रिश्तों को समाप्त सा कर दिया है। आज का बच्चा अपने रिश्तों की महता ही नहीं समझता क्योंकि हम देखते है कि किसी बच्चें का भाई तो किसी के बहन तो किसी के मौसी तो किसी के बुआ और किसी के चाचा तो किसी के मामा जैसे समाज के महत्वपूर्ण रिश्ते होते ही नहीं है। आज रिश्तों के दायरे सीमित हो गये है।

बाल मजदूरी एक किशोर को मिली सजा है जिसका की वह कभी हकदार नहीं था। बाल श्रमिक अपना ही बच्चा है हमें चाहिये कि हम बाल श्रमिकों को इस सजा से मुक्त करायें। बाल श्रमिक व अपने बच्चें में कोई भेद नहीं है, क्या किसी ऐसे बालक को सजा दी जा सकती है जो गरीब परिवार में जन्मा, या किसी के माँ-बाप का असामयिक निधन हो गया या कोई लावारिस रह गया.... नहीं। मानव जाति को इतना निर्दयी नहीं होना चाहिये कि इन स्थितियों से जूझ रहे बालकों का हम शोषण करे और उन पर अत्याचार करें। हम अगर इनके भगवान नहीं बन सकते तो हमें कोई हक नहीं कि हम इनके यमदूत बने।

कहावत है कि बच्चों में भगवान बसते हैं या फिर बच्चे भगवान का रूप होते हैं। आज धार्मिक व सामाजिक सेवा का ढोल पीटने वालों को ही देख लीजिये कि उनके वहाँ बाल मजदूर के साथ जानवरों जैसा व्यवहार, मंदिरों में उनका तिरस्कृत होना हमारी मानवता पर कलंक है। केवल भगवान की पूजा-अर्चना, पूजा-पाठ ही भगवान की सेवा नहीं, बल्कि भगवान रूपी बच्चें की सेवा उसका सहारा ही सही मायने में परमात्मा की सेवा है।

अभिभावकों की बच्चों के द्वारा बढ़ती महत्वाकांक्षाएं ही बच्चों से उनका बचपन छीन रही है। आज का अभिभावक चाहता है कि मेरा बच्चा ऐसा हो, मेरा बच्चा वैसा हो वो ये मानने को तैयार ही नहीं है कि मेरा बच्चा किसी से कम है हमेशा बच्चे की आयु व उसकी मानसिक स्थितियों को न समझ कर केवल अपनी महत्वकाक्षांओं को उनसे पूरा करवाने में लगा रहता है और बचपन कब समाप्त हो जाता है यह ख्याल न तो अभिभावक को न ही उस बच्चे का महसूस होता है।

मेरा यह मतलब नहीं है कि बच्चों को शिक्षा न दी जाये या फिर बच्चों को स्कूल ना भेजा जाये या फिर बच्चों को आज की प्रतिस्पर्धा के लिये तैयार न किया जाये, बल्कि मेरा यह संदेश है कि जिस प्रकार देश अतिव्यस्तम व्यक्ति भी या फिर अतिव्यस्तम अभिभावक अपना दैनिक कार्यक्रम तैयार करता है वैसे ही अपने बच्चें की आयु व मानसिकता तथा उसकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसका कार्यक्रम तैयार करें जिससे कि उसका समाज द्वारा संस्कार तथा प्राकृतिक वातावरण के साथ लगाव व उपयोगी सभी गतिविधियों का समावेश हो तथा बच्चों से उनका बचपन भी बचे।

आज वैज्ञानिक युग है लेकिन बच्चों को प्रकृति से दूर कर भौतिक साधनों की ओर ले जाना ही आज बच्चों के तरह-तरह की बीमारियों का फैलना, शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का कम होना इत्यादि कारण बन रहा है। हमें चाहिये कि आवश्यकतानुसार बच्चों को प्रकृति के नजदीक लेकर जाये और उसे जीवन के उस स्वर्णिम अवस्था 'बचपन' का आनन्द लेने दें। आज अमीर से अमीर व्यक्ति अपने जीवन की जमा पूंजी लौटाने को तैयार है कि अगर उनका बचपन उन्हें कोई लौटा दे। लेकिन यह असंभव है। आज हर अमीर की हालत ऐसी है तो हम क्यों भविष्य में बनने वाले इन तरूण पौधों से इनका यह अमूल्य अवस्था 'बचपन' छीन रहे है, हमें क्या हक है। हमारा कर्तव्य है कि हम इनका भविष्य बनाये लेकिन यह अधिकार नहीं है कि इनके जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था को कुचल दें।

हम बच्चों के हित में बड़ी-बड़ी बातें करते तो नजर आते हैं लेकिन समय आने पर उसके पलट व्यवहार करते भी नहीं शरमाते। अतः कथनी और करनी के भेद को मिटाकर बचपन बचाने के लिए सार्थक प्रयास ईमानदारी करने चाहिए।

5 ई 20, डुप्लेक्स कॉलोनी, बीकानेर-334004
मो. 9214455261

बालकों का छिनता बचपन

❒ **जगदीश सेन 'धूँधला'**

आज के बदलते परिवेश में बच्चों की दिनचर्या भी बदलती जा रही हैं। जहां पहले बच्चे सुबह-शाम खेल के मैदानों में खेलते हुए नजर आते थे, वहीं आज के बालक मोबाइल, लेपटॉप, कम्प्यूटर व टी.वी. से चिपके नजर आते हैं। बच्चों ने शारीरिक श्रम करना बिल्कुल ही बन्द कर दिया हैं। जहाँ पहले मैदानों में खेले जाने वाले खेल के माध्यम से बच्चों में शारीरिक स्फूर्ति, ताजगी व चंचलता जैसे गुणों का विकास होता था, वहीं आज का बचपन टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर व इंटरनेट व पोनत्रसाइट्स की तरफ भटकाव को लेकर आज हर अभिभावक बच्चों के प्रति चिंतित है और उनकी चिन्ता काफी हद तक ठीक भी है, क्योंकि इंटरनेट पर जिस तरल से पोर्न सामग्री धड़ल्ले से परोसी जा रही है, ऐसे में कोमल बालमन के भटकने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। इन सबके पीछे कहीं न कहीं मुख्य कारण अभिभावकों के पास समय की कमी हो सकती है, जिससे बच्चों का बचपन छिनता जा रहा हैं और आज का बचपन एकांकी होता जा रहा है अथवा यूँ कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि 'आज के बच्चे टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर व इंटरनेट के सहारे बड़े हो रहे हैं' जिससे युवा पीढ़ी की नींव कमजोर होने एवं किशोरावस्था में उचित मार्गदर्शन नहीं मिलने के कारण वे दिशा भ्रमित हो रहे हैं इसलिए समाज और सरकार दोनों का नैतिक दायित्व बनता है कि इसके रोकथाम के उपाय खोजे जाए। इस हेतु सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। वे ऐसे सॉफ्टवेयर का विकास करे, जिनसे पोर्न सामग्री को बच्चों की पहुँच से दूर रखा जा सके।

आज के बच्चे विद्यालय के पश्चात अपना अधिकतम समय टी.वी. पर कार्टून देखने में बिता देते हैं। उनका पसंदीदा टी.वी. चैनल-पोगो, निक, हंगामा, डिजनी, कार्टून फिल्में इत्यादि ही होते हैं और उनके पसंदीदा पात्र होते हैं-डोरेमान, शक्तिमान, नोबिता, सिनचेन, टोम एण्ड जेरी इत्यादि, वहीं बच्चों के पहले पात्र महाभारत और रामायण के चरित्र हुआ करते थे। आज जरूरत है बच्चों को मैदानी खेल व मनोरंजन के स्वच्छ अवसर प्रदान करने की अतः इस हेतु अभिभावकों को चाहिए कि वे अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में से कुछ समय अपने बच्चों हेतु निकाल कर उन्हें सुबह-शाम खेल मैदान तक ले जाए और उन्हें मैदानी खेल की ओर प्रेरित करें साथ ही सरकार को भी चाहिए कि बच्चों के शारीरिक विकास हेतु कार्यक्रम को प्रोत्साहन दे साथ ही बच्चों के पाठ्यक्रम में भी खेल विषय को उचित स्थान देकर क्रियान्विति पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। धनराज पिल्ले, सुशील कुमार, जयवर्द्धन सिंह, विजेन्द्र सिंह, मेरीकाम, सायना नेहवाल, कृष्णा पूनिया, सचिन तेंदुलकर सरीके मैदान से जुड़े से खिलाड़ी। आज के बालकों के आदर्श होने चाहिए न कि टीवी व कार्टून फिल्मों के पात्र। अतः प्रत्येक अभिभावक का यह नैतिक कर्तव्य बनता हैं कि वे बच्चों को स्वास्थ्यप्रद, मनोरंजात्मक खेल के माध्यम से बचपन संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायें।

(लेखक राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त शारीरिक शिक्षक हैं)
रा.उ.प्रा.वि., राजोलाखुर्द (पाली)
मो. 9001113344

गुरु की सीख

❒ **संदीप कुमार शर्मा**

अगस्त 1996 ई. में मैं ग्यारहवीं कक्षा का छात्र था। हिन्दी के व्याख्याता महेन्द्र जी मिश्रा हिन्दी विषय पढ़ाते थे। गुरुजी ने प्रथम परख की कॉपियाँ जाँचकर हमें अंक बताये और कॉपियाँ दिखाईं। मैंने मेरी कॉपी में **उज्वल** शब्द को सही समझते हुए गुरुजी द्वारा गलत मानने को स्वीकार नहीं किया और उसे सही मानने की जिद की तो गुरुजी मुस्कुराए और बोले तुझे तेरी कॉपी में लिखा शब्द सही लग रहा है परन्तु सही शब्द **उज्ज्वल** ही है। इस प्रकार गुरुजी के द्वारा समझाने पर मुझे मेरी गलती का अहसास हुआ और सही शब्द का ज्ञान प्राप्त होने की खुशी भी हुई।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि क्या आज हमारे पढ़ाने का ढंग ऐसा है? जिसमें हम विद्यार्थियों को पढ़ाते समय, कॉपी जाँच करते समय उनकी त्रुटियों को सुधारकर उनको वर्तनी का शुद्ध ज्ञान करवा सकें। क्या हम भाषा जैसे विषयों का शिक्षण करवाते समय छात्रों को उनके वर्तनी सम्बन्धी अधूरे ज्ञान पर छोड़ कर कहीं औपचारिकता मात्र ही नहीं कर रहे हैं?

अध्यापक, रा.मा.वि., झाड़सर गंजिया (चूरू) 331302
मो. 9982103975

श्रद्धांजलि

शिक्षा, साहित्य और सेवा के प्रतिरूप भगवती प्रसाद देवपुरा

❒ डॉ. दाऊदयाल गुप्ता

कोई व्यक्ति कितने लम्बे समय तक जीवित रहा, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्व तो इस बात का है कि वह समाज को क्या देकर गया।यह शाश्वत प्रश्न सभी के समक्ष है कि–

'यह जीवन है किस अर्थ अहो,
समझो जिसमें कुछ व्यर्थ न हो।'

भौतिक सुख–समृद्धि को नमस्कार जब व्यक्ति अपनी समस्त प्रतिभा को लेकर समाज–सेवा के लिये समर्पित हो जाता है तो वह 'आम' से 'खास' बन जाता है तथा उसका जीवन एक प्रतिमान बनता दिखाई देता है। शिक्षा, साहित्य और सेवा के असाधारण एवं तप:पूत व्यक्तित्व का नाम था–भगवती प्रसाद देवपुरा जिनके लिये किसी कवि की दो पंक्तियां सर्वथा उपयुक्त हैं–

साथ अपने, अपने हिस्से की धूप लेकर चलो
चमकना है तो साथ अपने सूरज का रूप लेकर चलो
बाँटना चाहते हो रोशनी यदि इस जहान में तुम प्रिये
तो साथ अपने दीपक का रूप लेकर चलो।

इकहरा बदन, मझला कद, गेहुंआ रंग, उन्नत भाल, लम्बे काले बाल आँखों पर चश्मा, मुखमंडल पर मुस्कान, वफादार कुरता, पल्लूदार धोती, जिसका पल्ला बांधे हाथ से पकड़ा होता, पैरों में चप्पल तथा ऊर्जास्वित गतिमय चाल चलते हुए सबके प्रिय 'बाबूजी' सहज ही सबका चित्त चुरा लेते थे। तेजोमयी शिक्षकत्व की बानगी उनके शिष्य की सपाट बयानी में है।

'गुरुजी ने पढ़ाना आरंभ किया। प्रथम पाठ वंदना/काव्य/उसका सस्वर पाठ, सभी विद्यार्थियों को बड़ा सरस लगा। ....काव्य का प्रसंग, अर्थ, भाव, विभाव, अनुभाव, और विशेष बताया गया। विशेष में शब्द शक्ति, अलंकारों की व्याख्या जो प्रयुक्त हुए थे, का विवरण दिया। गुरुजी पूरे मन से पढ़ा रहे थे। कालांश बदलने की घण्टी बजी, गुरुजी ने इस ध्वनि को अनसुना कर दिया। पढ़ाते ही रहे। दूसरा कालांश भी पढ़ाते रहे। तीसरा और चौथा कालांश उन्होंने पढ़ाया। ....चार कालांश तक एक पाठ और उससे जुड़े सभी अन्यान्य प्रसंग छू लिये। मैं ही नहीं कक्षा के सभी विद्यार्थी उन्हें तन्मयता से पढ़ाता देख अभिभूत थे। ....पूरे उत्साह के अध्ययन में विद्यार्थियों में हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि के बीज रोप दिये। ....सत्रावसान तक विज्ञान संकाय का विद्यार्थी हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी बनने के लिए लालायित हो गया।

–डॉ. इन्दुप्रकाश श्रीमाली, फतहपुरा, उदयपुर

'बाबूजी' के नाम से जाने–पहचाने गये श्री भगवती प्रसाद देवपुरा बिरले एवं पारदर्शी व्यक्तित्व के धनी थे जिनका शिक्षकीय जीवन एक मशाल के रूप में उजागर हुआ। वे व्यवसाय से नहीं अपितु अन्तरमन से सच्चे शिक्षक रहे। कठोर अनुशासन, दृढ़ आस्था, उच्च सदाशयता, कार्य के प्रति लग्न, सहज उदारता, संवेदनशलीता एवं प्रत्येक क्षण को दाँत से पकड़कर सदुपयोग करने की क्षमता ने उन्हें संवेदनयुक्त शिक्षक के रूप में मिसाल बना दिया था। शिक्षा के प्रति समर्पण विषयक अन्तर्भाव एक शिक्षक से मुंह जुबानी सुनिये–

'मैंने देखा कि नगर के बीसियों लोगों को जो अपने पुत्रों को सामान्य शिक्षा ही दिला सकते थे या फिर वे पुश्तैनी कार्य में लगाये जाने से पढ़ाई से विमुख रहते थे, उन्हें अपने साथ, अपने घर पर रखकर बाबूजी ने पढ़ा लिखाकर योग्य बनाया। उन बालकों को पाठ्यसामग्री भी बाबूजी ही उपलब्ध कराते थे।यदि शिक्षा के प्रति ऐसा समर्पण न होता तो वे बालक जो कुछ आज बने हैं, न बन पाते। ये सब कार्य बाबूजी ने बिना किसी स्वार्थ अथवा प्रतिदान की आकांक्षा रखते हुए किये। उद्देश्य केवल एक ही था कि अधिक से अधिक बालकों को सार्थक जीवन जीने योग्य बनाया जाये।'

–पुरुषोत्तम दास पालीवाल, नाथद्वारा

तीस बरस की राजकीय सेवा से विमुक्त होकर अक्टू.'79 में सेवानिवृति तो मिल गई किन्तु शिक्षकीय प्रवृति में उनसे जीवन के अंतिम क्षण तक ऐसा अध्यापन कार्य कराया जो आज भी जन सामान्य एवं शिक्षार्थियों के दिल–दिमाग पर छाया हुआ है। जो उनके सम्पर्क में आया वह उनका हो गया तथा उनका विलक्षण व्यक्तित्व सम्पर्की के समक्ष वंदनीय बन गया, यथा–

वदनं प्रसादसदनं सहर्ष हृदयं सुधामुच्चो वाच:।
करणं परोपकरण येषा केषां न तो वंद्य:।

(जिसका मुख्य प्रसन्नता का आलय, हृदय दयायुक्त, वाणी सुधास्भाविणी हो, कर्तव्य कर्म परोपकार हो, वे किसके वंदनीय नहीं होते हैं?)

बालक देवपुरा का जन्म पिता श्री लक्ष्मीचन्द जी कस्टम अधिकारी मेवाड़ सरकार की कार्यस्थली जहाजपुर में माता श्री रतन कंवर की कोख से दिनांक 31 अक्टूबर 27 को हुआ। पांच वर्ष की आयु में ही पिता श्री का स्वर्गवास हो जाने से अपने पैतृक गांव मावली को छोड़कर इनका लालन–पालन अपनी मातेश्वरी की देख–रेख में श्री नाथद्वारा में हुआ। सत्तरह वर्ष की आयु में विवाह हुआ। तब वे केवल सातवीं कक्षा पास थे। परिवार में सबसे बड़े पुत्र थे। अस्तु, शिक्षा छोड़कर नौकरी करनी पड़ी। प्रारंभिक सेवा केलवा ठिकाने में अध्यापन कार्य से शुरू हुई राजकीय सेवा 28 जनवरी '49 से प्रारंभ हुई। शिक्षा के प्रति लगाव था कि सन् 47 में साहित्यरत्न,52 में मैट्रिक, 56 में एस.टी.सी., 61 में बी.ए. व 63 में बीएड तथा 65 में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कहना न होगा कि जीवन के अंधड़ों से साक्षात्कार करते हुए वे दृढ़ संकल्पित मन:स्थिति से आगे बढ़े और यह उक्ति चरितार्थ कर दी–

जो टकराएं इरादों से उसे तूफान कहते हैं
जो छा जाए तूफानों पर उसे इन्सान कहते हैं।

और देवपुरा जी ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए इन्सान बनकर दिखला दिया। 'स्वनिर्मित व्यक्तित्व', का विश्लेषण यदि शब्दश: किसी व्यक्ति पर लागू होता है तो वह भगवती प्रसाद देवपुरा है। उनका जीवन मंत्र उनके तेजस्वी ललाट से फूटती किरणों के माध्यम से यही प्रकट करता है–

हम खुद कांटों में आये हैं फूलों को क्यों रोएं
कांटों को पैरों से मसलें, फूलों को बोएँ।

बाबूजी के विराट व्यक्तित्व का दूसरा सोपान 'साहित्य-साधना' रही। अध्यापन के साथ सृजन की संधि बैठ जाए तो सोने में सुहागा बन जाता है। प्रारंभ से लघु कथाएँ, एकांकी, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र आदि लिखने में आपकी रुचि रही। अस्तु, नाथद्वारा दर्शन, बलिदान, प्रतिनिधि कहानियाँ, सुख की घड़ियां, दहेज की बलिवेदी पर, साँप का बदला, मुन्ने का कोट आदि आपकी अनेक आकर्षक एवं सार्थक रचनाएं जन्मित हुईं। इनके अतिरिक्त अष्टछाप के महान कवियों के ग्रंथों की भूमिकाएं एवं 'हर सिंगार', त्रैमासिक पत्रिका की सम्पादकीय टिप्पणी आपकी विद्वता एवं वैदुष्य के परिचायक हैं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में प्रतिपादित करने के प्रयास स्वतंत्रता पूर्व से होने लगे थे। यह अभियान राष्ट्रीय आन्दोलन का अंश था तथा देवपुरा जी इसमें युवावस्था से ही सक्रिय रहे थे। उस समय इन्होंने न तो अपने योगक्षेम की चिन्ता की और न अपने परिवार की। केवल ध्येय के प्रति एकनिष्ठ समर्पण इनकी वृत्ति बन गई। माँ भारती के अप्रतिम सपूत का यह समर्पण वंदनीय है-

तनसमर्पित मन समर्पित और यह जीवन समर्पित
माँ भारती तेरे लिये। तेरे लिये!! तेरे लिये!!!

वस्तुत: श्री नाथद्वारा जैसे तीर्थ धाम में साहित्य मण्डल की स्थापना होना हमें उन पावन उद्देश्यों का स्मरण कराता है जिन्होंने महामना मदनमोहन मालवीय को शिक्षा-उन्नयन तथा हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए प्रेरित किया था। गालीवीय जी स्वयं श्री नाथद्वारा के साहित्य मण्डल की स्थापना के प्रेरणा पुरुष रहे थे। उच्च कोटि की हिन्दी साहित्य साधना के क्रम में माहेश्वरी समाज के युवा सदस्य श्री देवपुरा हिन्दी की सेवा यज्ञ के होता बने तथा प्रधानमंत्री के रूप में इन्होंने साहित्य मण्डल की काया-कल्प कर दी। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के पक्ष में उनका खुला आह्वान था।

'आज हम मौन क्यों हैं ? ....उनसे कहें कि यदि हमारे बलिदान देने से ही हिन्दी आ सकती है तो वैसा हम करने के लिये तत्पर हैं। दोगले चरित्रवालों के लिये उनसे निपटने हेतु उनका मार्गदर्शन सटीक रहा।

'अच्छा होगा कि जो जहां हैं, वहीं अपने को राष्ट्र भाषा का सेवक माने। स्वयं हिन्दी में काम करें। अपने इष्ट मित्रों को प्रेरित करें कि चाहे उन्हें थोड़ी हानि उठानी पड़े, हिन्दी में काम करें। ऐसे समारोह आयोजित करें, ऐसी रचनाएं प्रकाशित करें, जिससे हिन्दी का विकास हो।'

-हर सिंगार वर्ष 6 अंक 4 पृ.6

यह सर्वविदित है कि श्रीनाथ द्वारा पाटोत्सव के समय ब्रजरंग में रंगकर चित्ताकर्षक झांकी प्रस्तुत की जाती है जिसमें ब्रजभाषा, ब्रज कला तथा ब्रज के रीति-रिवाज जीवन्त हो उठते हैं। इसी प्रकार 14 सितम्बर को श्रीनाथद्वारा हिन्दीमय होकर सम्पूर्ण हिन्दी जगत का नेतृत्व करता है।

साहित्य मण्डल के एक विशाल कक्ष में हिन्दी की पुस्तकों को सुसज्जित कर पुस्तकालय भवन में रखना श्री देवपुरा की साहित्य सेवा का परिणाम है। प्रो. महेन्द्र रायजादा के अनुमान से इसमें लगभग साठ-पेंसठ हजार पुस्तकें हैं जिनकी संख्या में प्रतिदिन अभिवृद्धि होती है। इसी प्रकार वाचनालय में सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं का आगमन मासिक पाक्षिक अथवा साप्ताहिक रूप से होता है। इस दृष्टि से पुस्तकालय एवं वाचनालय दोनों दर्शनीय हैं। यहां प्राचीनतम प्रकाशित वे पत्रिकाएं भी सुसज्जित हैं जो अनुसंधाताओं के लिये विशिष्ट महत्व की हैं।

एक और असाधारण कार्य बाबूजी के हाथों सम्पन्न हो गया। जो स्वयं तो अमर हैं ही, साथ ही परम साधक को अमरत्व प्रदान करता है। वह है महाकवि सूरदास प्रणीत समग्र 'सूरसागर' का दो खण्डों में वृहदाकार संपादित एवं टीका सहित प्रकाशन। यथार्थत: यह कार्य विश्वपटल पर एक सुखद स्वप्न का साकार होना जैसा है। इससे पूर्व 'पुष्टि मार्ग के जहाज महाकवि सूरदास' ग्रथ का संपादन संभव हुआ जो 1345 पृष्ठों का था तथा जिसमें साहित्य जगत की बेजोड़ हस्तियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये।

महात्मा तुलसीदास ने 'मानस' में वर्षाकाल का वर्णन करते हुए लिखा है-

'बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे।
खल के वचन संत सहि जैसे।।
सिमिट-सिमिट जल भर हिं तलावा।
जिमि सदगुण सज्जन पहिं आवा।।'

श्री देवपुरा को पर्वत के समान उपमित करना इसलिये उपयुक्त है क्योंकि वे भी बूँद-आघात की भाँति दुष्टों के बचनों को सहकर अपूर्व धैर्य का परिचय देते रहे। वे उस सरोवर के समान थे जिसकी सुपात्रता देखकर अनेक सदगुण स्वयं आकर समाहित हो जाते हैं। उनके सद्गुणों की पहचान, सम्पर्क में आया कोई भी व्यक्ति कर सकता था क्योंकि उनका जीवन एक खुली पुस्तक बना रहा। उनमें प्रबन्ध-पटुता, समय प्रतिबद्धता, नियमितता, अनुशासन प्रियता, विश्वसनीयता, विनय शीलता, वाक् पटुता, अभिव्यक्ति कुशलता, सृजनशीलता पत्र-व्यवहार दक्षता, वचन-बद्धता, स्वदेशी संस्कारिता, संवेदनशीलता, संतोष प्रियता, आतिथ्य सत्कार निपुणता, नेतृत्व क्षमता, सहकारिता, आत्मीयता एवं कार्य के प्रति समर्पण भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनके व्यतित्व में चुम्बकीय आकर्षण था। इतना सब होते हुए भी वे हर कदम पर सेवा भावी थे जिसके विषय में कहा जा सकता है-'सबहिं मानप्रद आप अमानी।'

श्री देवपुरा की साहित्य-साधना एवं सेवा-भावना का ही प्रभाव था कि उन्हें उच्चस्तरीय, स्तुत्य एवं श्लाघनीय सम्मान प्राप्त होते रहे। गोलोक गमन तक देश की सर्वोपरि हिन्दी संस्था, 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष पद पर आसीन रहकर अनन्य सेवा में जुटे रहे। आप को 'विद्या वाचस्पति' की उपाधि प्राप्त थी। अनेक संस्थाएँ आपका मार्गदर्शन प्राप्त करती रहीं। श्री देवपुरा स्वयं में एक जीवन्त संस्था थे। वे एक चलते-फिरते पुस्तकालय थे। नये-नये हिन्दी शब्दों को गढ़ने की टकसाल थे। वे सचमुच एक प्रकाश पुंज बनकर रहे जिसमें तिमिर स्वयंमेव छँटने लगता है। एक ऐसी चेतना जिससे मृतप्राय व्यक्ति प्राणवान हो जाता है। वे एक ऐसे इन्सान थे जिसके विषय में कहा जा सकता है-

'रीति न जाने अपना-तेरा
केवल जाने धड़कन मन की।'

श्री भगवती प्रसाद देवपुरा की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का 16 अप्रेल 2008 को विजयदशमी के दिन देवलोक गमन हो गया। देवपुरा जी ने इसे भगवान श्रीनाथ जी की इच्छा मानकर स्वीकार किया किन्तु हिन्दी भाषा और साहित्य सृजन में किंचित बाधा नहीं आने दी। उनका अन्तर्भाव सदैव यही रहा-

कोई चले, चले ना चले, हम तो चल पड़े
मंजिल की जिसको धुन हो, उसे कारवां से क्या?

और वे सचमुच 07 जनवरी 2014 को 87 वर्ष की उम्र में इस प्रकार उस ओर चल दिये जहां व्यक्ति की अंतिम मंजिल होती है। यूँ तो श्री देवपुरा 31 अक्टूबर 1982 को शिक्षा प्रसार अधिकारी के पद से सेवानिवृत हुए थे। किन्तु, जिसने सदैव चलना सीखा हो, वह रुकना क्या जाने? माँ भारती के मन्दिर में घोर निराशा को दुत्कारता हुआ परम तपस्वी बनकर वे आशा-दीप जलाये बैठे रहे, जिसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति के मानस में यह प्रश्न उठता रहा-

अंधेरी रात में दीपक जलाये कौन बैठा है?
उठा जो शीश सकते थे उन्होंने सिर झुकाया है
मगर विद्रोह की ज्वाला जलाये कौन बैठा है?

आज भी उनके स्वर 'हिन्दी लाओ, देश बचाओ', हमें सुनाई देते हैं। दृढ़ संकल्पी देवपुरा जब तक रहे, हमें जगाते रहे। वे आज भी कानों में जो स्वर फूँकते हैं, वे यही हैं-

'चलना मुझे है, बस अंत तक चलना
गिरना ही मुख्य नहीं, मुख्य है संभलना
फिर भी उठूँगा और बढ़के रहूँगा
नर हूँ, पुरुष हूँ, चलके रहूँगा।'

-डॉ. सुषमा शर्मा

यही है अमरत्व की निशानी। चिरंजीवी बनने के लक्षण। एक सद्गृहस्थ संत, जो असीम वेदनाओं, प्राकृतिक आपदाओं को सहन करने की शक्ति रख सका तथा स्थितप्रज्ञ रहकर अपना कर्तव्य-पालन करता रहा। स्थूल रूप से न सही वह सूक्ष्म रूप से हमें तब तक झकझोरता रहेगा जब तक हिन्दी सच्चे अर्थो में राष्ट्रभाषा व राजभाषा के पद पर आसीन नहीं हो जाती। श्री देवपुरा की अमर आत्मा के प्रति जितना नमन किय जाये कम है क्योंकि ऐसे विलक्षण एवं विरले व्यक्ति कभी-कभी इस धरा धाम पर आते हैं और अमर हो जाते हैं। मेरी हृदयस्थ भावना एवं मंगल कामना यही है-

अमर रहें श्री देवपुरा जी गूँजे विश्व पटल पर नाम।
दृढ़ संकल्पों के राही को अपना शत-शत बार प्रणाम।

क्योंकि वे शत-प्रतिशत शिक्षा-साहित्य तथा सेवा और श्रीनाथ जी की अनन्य भक्ति भावना के अक्षय प्रतिमान थे। -पुरुषोत्तमायन,

दही वाली गली, ब्यानियान मौहल्ला, भरतपुर
मो. 9461462739

हौंसला

समस्या बड़ी या सोच

❒ किशन गोपाल व्यास

समस्या और आदमी की सोच का एक बहुत गहरा संबंध है। समस्या चाहे कितनी भी बड़ी हो यदि व्यक्ति की सोच बड़ी हो तो समस्या उसके जीवन में कोई मायने नहीं रखती है। एक आम आदमी के जीवन में कई समस्याएं उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। उन समस्याओं से घबरा कर कायर व्यक्ति उनके सामने नत्मस्तक हो कर काल का ग्रास बनने के लिए आतुर हो जाता है। वहीं इसके विपरीत वीर पुरुष अपनी बड़ी सोच के बल पर उन समस्याओं से लड़ने के लिए सदा तैयार रहता है। व्यक्ति के जीवन में आने वाली खुशियां उसकी सोच की विशेषताओं पर ही निर्भर करती है। व्यक्ति की बड़ी सोच के आगे समस्या का कद छोटा होने के लिए मजबूर हो जाता है। जीवन में विपत्ति/समस्या आने पर वही लोग घबराते हैं जिन्हें समस्या से ही समस्या का निदान करना नहीं आता हो।

''जीवन में विपत्ति आये तो आपत्ति मत कीजिये..... क्योंकि..... दूध के फटने पर वही लोग उदास होते हैं, जिन्हें फटे दूध से पनीर बनाना नहीं आता।''

समस्या और सोच के कद में अन्तर को इस लघु कथा के माध्यम से समझा जा सकता है-

''एक समय तीन मित्र बसन्त, अमन और सोहन संध्याकाल घूमने निकले और उन्हें ये मंजर देखने को मिला कि बहुत खूबसूरत मौसम था, पक्षी उड़ते हुए कलाबाजियां कर रहे हैं। फूलों से लबालब बगीचा प्रकृति की खूबसूरती को चार चांद लगा रहा है। बसन्त ने अपने मित्र सोहन को भाव विभोर होकर कहा, हां-अमन मेरा दिल भी इस दृश्य को निहारने को कर रहा है। देखो, अमन सुन्दर पक्षी पंख फैलाये आकाश में उड़ रहे हैं। ऐसा लगता है कि मानो वे पक्षी आकाश में पिकनिक मना रहे हों।

अमन ने आसमान की ओर देखते हुए कहा-अरे! यह क्या काली घटाएं चली आ रही है, लगता है बारिश होगी?-बसन्त ने कयास लगाते हुए कहा हां मुझे भी बारिश की आकांक्षा जान पड़ती है।

अचानक बिजली चमकने लगती है और तेज गर्जना होती है। देखते ही देखते सैकड़ों तरह के पक्षी अचानक विभिन्न दिशाओं में अपने आसरों की ओर बढ़ते हैं और कुछ अपने आप को पेड़ों के पत्तो में छिपा लेते हैं।

देखो, सारे पक्षी गायब हो चुके हैं, केवल कुछ चीलें ही आसमान में रह गई हैं, और ऊँचाई पर उस तरफ उड़ने लगी है जहां बिजली चमक रही है। बसन्त ने सोहन की ओर इशारा करते हुए दिखलाया।

हाँ, अमन मुझे चीलें बहुत बहादुर जान पड़ती हैं जो अपने आप को और ऊँचाई पर ले जाकर उड़ रही हैं। उस तरफ जहां बिजलियाँ चमक रही हैं। सोहन ने कहा।

हाँ! मुझे ऐसा ही लगता है कि चीलों ने बाधाएं आने पर घबराकर उनसे दूर भागने की बजाय बादलों से ऊपर उठकर अपने सफर को जारी रखा है। साहिल हमें भी इनसे सीख लेनी चाहिए कि मुश्किलें आने पर घबराकर डरें नहीं बल्कि इनसे ऊपर उठकर उन्हें छोटा बना दें, नाकारा साबित कर दें और अपने लक्ष्य के प्रति सफलता के प्रयास को जारी रखें।''

किसी ने ठीक ही कहा है कि-''रख हौंसला कि वो मंजर भी आयेगा, प्यासे के पास चलके समन्दर भी आयेगा। थक कर ना बैठ जाना मंजिल के मुसाफिर, मंजिल भी मिलेगी, तुम्हें हौंसले के बल पर।''

-कनिष्ठ लिपिक
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414147499

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

साहित्य, कला, उद्योग और अध्यात्म का संगम है राजसमंद

❒ दिनेश श्रीमाली

श्री दिनेश श्रीमाली शिक्षक एवं स्वतंत्र लेखक, टिप्पणीकार होकर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, डूमखेडा में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत है। श्रीमाली विगत 25 साल से विश्व प्रसिद्ध राजसमंद झील बचाओ आंदोलन के अगुवा है। इसके लिए श्रीमाली को भारत सरकार ने 2010 का राष्ट्रीय भूमिजल संवर्धन पुरस्कार भी प्रदान किया है।

-वरिष्ठ सम्पादक

शक्ति और भक्ति की धरा मेवाड़ के नाभि केन्द्र में स्थित जिले का नाम है राजसमंद। अपनी ऐतिहासिक धरोहर, इतिहास, शिल्पकला, पुरा प्राकृतिक वैभव के साथ मार्बल नगरी के रूप में इस जिले की पहचान देश दुनिया में है। मेवाड़ के महाराणा राजसिंह द्वारा बसाया गया राजसमंद नगर रियासत काल में मेवाड़ रियासत का एक जिला था लेकिन आजादी के बाद यह उदयपुर जिले का एक भाग बना । 1991 में राज्य सरकार द्वारा 10 अप्रेल को पुनः जिला बनाया गया। उसके उत्तर में अजमेर, दक्षिण में उदयपुर, पूर्व में भीलवाड़ा और पश्चिम में पाली जिला अवस्थित है।

राजसमंद जिला 24.46 डिग्री से 26.01 डिग्री अक्षांश और 73.28 डिग्री से 74.19 डिग्री देशान्तर के मध्य स्थित है। जिला मुख्यालय दिल्ली से मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर राजधानी जयपुर से 350 किमी. दूर है। जिले का कुल क्षेत्रफल 4550.93 वर्ग किमी. है। अरावली पर्वतमाला की उतंग उपत्यकाएं जरगा, कुंभलगढ़ और परशुराम पर्वत इसी जिले में है। जिले में नाथद्वारा, कुंभलगढ़ तहसीले पहाड़ी क्षेत्र है जबकि आमेट, राजसमंद, रेलमगरा को मैदानी और भीम, देवगढ़ को सूखा प्रभावित पहाड़ी इलाका माना जाता है।

अरावली पर्वत शृंखला की परशुराम, कुंभलगढ पर्वत से राजस्थान की प्राण संजीवनी बनास नदी का उद्गम वीरों का मठ से हुआ है। यह नदी कुंभलगढ़ के बाद उदयपुर जिले के गोगुन्दा तहसील से गुजर पुनः राजसमंद जिले की नाथद्वारा, राजसमंद, रेलमगरा तहसील से होते हुए चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवेश कर प्रवाहित होती है। जिले की दूसरी बड़ी नदी गौमती चारभुजा के पास सेवन्त्री की पहाड़ियों से निकल कर कुंभलगढ़, आमेट तहसील के विभिन्न गांवों से गुजर कर राजसमंद झील में गिरती है। खारी नदी कुंभलगढ़ के घाटा थोरिया की पहाड़ियों से निकल कर चिकलवास बांध को भर आगे जाकर बनास नदी में मिल जाती है। चौथी बड़ी नदी दिवेर की पहाड़ियों से निकल कर चन्द्रभागा के रूप में आमेट तहसील से होती हुई भीलवाड़ा के पास पोटला गांव में प्रवेश करती है।

जनसंख्या एवं शिक्षा : 2011 की जनगणना के अनुसार जिले में कुल जनसंख्या 1158283 है जिनमें से 5 लाख 85 हजार 670 पुरुष एवं 5 लाख 75 हजार 613 महिलाएं है। जिले की साक्षरता का प्रतिशत कुल 63.93 है जिनमें से पुरुष साक्षरता 79.52 और महिला साक्षरता दर 48.44 है। इसे देखते हुए जिले के सामने महिला साक्षरता एक बड़ी चुनौती है। जिले में राजसमंद, नाथद्वारा, भीम, आमेट, देवगढ़ और केलवाड़ा में राजकीय महाविद्यालय है जबकि नाथद्वारा में राजकीय कन्या एवं संस्कृत महाविद्यालय है। निजी क्षेत्र में नाथद्वारा, राजसमंद, रेलमगरा में कई निजी महाविद्यालय संचालित हैं।

इतिहास : राजसमंद जिला विश्व प्रसिद्ध राजसमंद झील के नाम से ही जाना जाता है। जिला मुख्यालय दो प्रमुख नगर राजनगर और कांकरोली में विभक्त है। महाराणा राजसिंह ने 1676 में राजसमंद झील के निर्माण के साथ ही राजनगर की स्थापना की थी । कांकरोली नगर पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की तृतीय पीठ के कारण जगत विख्यात है। इस नगर को खांका जी रावत की डोली के नाम से जाना जाता था जो बाद में कांकरोली के नाम से जाना गया। इसी जिले का प्रमुख नगर श्री नाथद्वारा विश्व वंदनीय प्रभु श्रीनाथ के कारण जाना जाता है। यहां पर पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की प्रधान पीठ प्रभु श्रीनाथ जी एवं द्वितीय पीठ विट्ठलनाथ प्रभु बिराज रहे है। श्रीनाथ प्रभु का यहां आगमन सवंत 1726 में जतीपुरा से हुआ था । मेवाड़ आराध्य प्रभु चारभुजा पाण्डवकालीन माने जाते है वहीं परशुराम जी ने मातृ हत्या के पाप से मुक्ति का तप इसी जिले के परशुराम महादेव पर किया था जिसे राजस्थान के अमरनाथ माना जाता है। इतिहास प्रसिद्ध महाराणा कुंभा की जन्म भूमि इसी जिले के देवगढ़ नगर के पास मदारिया गांव में है तो प्रतापी प्रताप की जन्मस्थली कुंभलगढ़ है। गिलुण्ड कस्बे में प्राचीन मानव की नगर सभ्यता द्वारा आंखें खोलने के पुरातात्विक प्रमाण मिले है तो दरीबा में प्राचीन तांबा एवं सीसा उत्खनन की खदाने एवं गलन भट्टियां यहां के पुरा वैभव की कहानी कहती है।

प्रशासनिक ढांचा : जिले में सात उपखण्ड राजसमंद, नाथद्वारा, कुंभलगढ़, भीम, देवगढ़, आमेट और रेलमगरा है। इसी प्रकार सात पंचायत समितियां, एक नगर परिषद एवं तीन नगर पालिकाएं है। जिला मुख्यालय को नगर परिषद का दर्जा प्राप्त है तो नाथद्वारा, देवगढ़ एवं आमेट नगर पालिकाएं हैं। जिले में कुल 205 ग्राम पंचायतें और 906 राजस्व ग्राम है। जिले में वर्षा का औसत 60 सेमी हैं । यहाँ का वातावरण सम है।

श्वेत संगमरमर का खजाना : राजसमंद जिले को विश्व का सबसे ज्यादा सफेद संगमरमर उत्खनित करने वाला जिला माना जाता है। इस जिले में करीब एक हजार दौ सौ मार्बल पत्थर की खदाने है। इसके अलावा दरीबा में हिन्दुस्तान जिंक वैदान्ता समूह द्वारा शीशा,

जस्ता, तांबा और चांदी का खनन किया जाता हैं जबकि नाथद्वारा, कुंभलगढ़, आमेट में लाइम स्टोन, फैल्सफार, सोप स्टोन, देवगढ़ भीम में ऐसबेस स्टोन, ग्रेनाइट का खनन होता है। जिले के बडगुल्ला एवं तीखी क्षेत्र मे कभी पन्ना निकाला जाता था लेकिन आजकल ये खदानें बंद पड़ी है। जिले के सिन्देसर ब्लाक में सोने जैसी महंगी धातु होने के संकेत मिलने के बाद यहां भी सर्वे कार्य इन दिन चल रहा है।

औद्योगिक परिदृश्य : जिला मुख्यालय पर कांकरोली में 1974 में प्रारम्भ हुआ। जे.के. टायर राजस्थान का बड़ा उद्योग है जहां पर सबसे पहले रेडियल टायर का निर्माण किया गया। इसके अलावा हिन्दुस्तान जिंक वेदान्ता समूह का रेलमगरा दरीबा में बड़ा कारखाना है जहां पर सीसा, जस्ता, तांबा और चांदी खनन शोधन होता है। मार्बल इस जिले का प्रमुख उद्योग है जहां पर 250 बड़े गेंगशा एवं करीब 2000 मार्बल कटर पर मार्बल पत्थर प्रसंस्करित किया जाता है। इसके अलावा फैल्सफार पिसाई के करीब 60 यूनिट यहां काम कर रहे है तो क्रेशर गिट्टी के भी कई कारखानें जिले के राजसमंद और नाथद्वारा तहसील क्षेत्र में स्थापित हैं। इनमें हजारों लोगों को रोजगार मिल रहा है।

हस्तकला एवं शिल्प : जिले की नाथद्वारा तहसील के पास स्थित मोलेला गांव मृण कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहां के कुंभकार अपनी कला के बूते देश दुनिया की सैर कर चुके हैं। इसी प्रकार नाथद्वारा की पीछवाई, चित्रकारी और मीनाकारी का अपना अलग ही रंग और ढंग है। देवगढ़ और गिलुण्ड में नमदे और दरी पट्टी, सूती जाजम का काम बड़े पैमाने पर होता हैं। कांकरोली, राजनगर, आमेट, केलवा, बडारड़ा, पीपरड़ा में मार्बल कला के उत्तम उत्पाद मिलते है।

स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्थली : राजसमंद जिले में खमनोर के पास स्थित ऐतिहासिक रणभूमि हल्दीघाटी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा स्थली माना जाता हैं। इसी जिले में कोठारिया के पास रकमगढ के छापर में 1858 को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक तांत्याटोपे के साथ रावत जोधसिंह की संयुक्त सेना ने अंग्रेज जनरल होम्स से लोहा लिया था ।

मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना के बाद 1938 और 1942 के अंग्रेजों भारत छोड़ों आंदोलन में राजस्थान मे सबसे ज्यादा गिरफ्तारी इसी जिले के नाथद्वारा नगर में हुई थी। कांकरोली, मोही, राजनगर, केलवाड़ा और देवगढ़ आजादी के आंदोलन में भाग लेने वाले स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों की कर्म एवं जन्म भूमि है। नंदलाल जोशी, नरेन्द्रपाल सिंह, राजेन्द्रपाल सिंह, मोहनलाल सुखाडिया, मोहनलाल निष्कलंक, देवेन्द्र कुमार, मास्टर किशनलाल, मनोहर कोठारी, रघुनाथ पालीवाल, नारायणदास बागोरा प्रमुख स्वतंत्रता सैनानी रहे हैं।

आस्था स्थलियां : नाथद्वारा–पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ प्रभु श्रीनाथजी नाथद्वारा हैं। यहां पर श्रीकृष्ण के बाल रूप में ठाकुर की राग, भोग एवं शृंगार पूजा होती हैं। प्रतिदिन आठ दर्शन होते हैं। यहां पर दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा और रात्रि को अन्नकूट का भव्य आयोजन होता है। इसके अलावा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और नंद नवमी का आयोजन देखने हजारों भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। यहां पर पुष्टि परम्परा की द्वितीय पीठ एवं नवनीतप्रियाजी भी विराजीत हैं । लालबाग, गणेश टेकरी और गिरिराजजी यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

कांकरोली : कांकरोली के भव्य मंदिर महलनुमा हवेली में पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय के आराध्य प्रभु श्रीद्वारकाधीश विराजते हैं। यहां पर मथुराधीश का भी मंदिर है जहां हजारों लोग दर्शन करने आते हैं। यहां पर गोपाष्टमी, अन्नकूट, नंदनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रमुख मनोरथ माने जाते हैं ।

चारभुजा : पाण्डवों के अज्ञातवास के दौरान चारभुजा मंदिर में विष्णु विग्रह की स्थापना मानी जाती है। जिला मुख्यालय से करीब 42 किमी. दूर इस मंदिर का निर्माण मेवाड़ के महाराणा ने कराया था। यहां पर प्रतिदिन मिश्री–चावल का भोग लगाया जाता हैं। यहां पर भाद्रमास में देवझूलनी एकादशी का लक्खी मेला लगता है जिसमें राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश से हजारों पैदल यात्री यहां पहुंच दर्शन लाभ लेते है।

रूपनारायण सेवन्त्री : चारभुजा से करीब नौ किमी दूर नारायण का श्रीविग्रह रूपनारायण के रूप में विराजीत है। भव्य मंदिर पंचरथ का बना हुआ है और फाल्गुन मास में यहां फागोत्सव का भव्य आयोजन होता है। यहां की गैरनृत्य राजस्थान में अपनी अलग पहचान रखती हैं ।

परसुराम महादेव : अरावली पर्वत शृंखला की ऊंची पर्वत चोटी परसुराम पर ज्योतिकार गुफा में भगवान परसुराम ने कुण्डीया गांव में मातृहत्या से मुक्ति के बाद शिव आराधना की थीं। यहां पर प्राकृतिक शिवलिंग के नयनाभिराम दर्शन होते हैं । इसी मंदिर के पास स्थित है वीरों का मठ जहां से बनास नदी का उद्गम होता है। लोक मान्यता है कि यहीं पर परसुराम ने गंगापुत्र भीष्म एवं अंगराज कर्ण को गुरु दीक्षा दी थीं।

कुन्तेश्वर महादेव : माता कुन्ती द्वारा स्थापित कुन्तेश्वर महादेव का भव्य शिवालय जिला मुख्यालय से करीब 12 किमी. दूर फरारा ग्राम में स्थित है। यहां पर भोलनाथ बालस्वरूप में विराजीत है। भव्य विग्रह लिंग रूप में पूजा जाता है। प्रतिदिन प्रातः भस्म आरती होती है। यहां पर वैशाख माह में एक माह का बड़ा मेला लगता है।

पीपलाज शक्तिपीठ : मां पराम्बा का राजस्थान का सबसे पौराणिक मंदिर जिले की नाथद्वारा तहसील क्षेत्र के हल्दीघाटी के पास उनवास गांव में स्थित है। यहां लिखे शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का जीर्णोद्वार संवत् 916 में हुआ था। इस स्थान पर मुनि पिप्लाद ने तप किया था और उनके शिष्य भरत मुनि ने इस मंदिर का निर्माण कर मां पराम्बा की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की थी। इसी स्थान को मेवाड़ के प्रसिद्ध गवरी नृत्य की उत्पत्ति स्थल माना जाता है।

देलवाड़ा के जैन मंदिर : जिला मुख्यालय से करीब 35 किमी. राष्ट्रीय राजमार्ग आठ पर स्थित देलवाड़ा कस्बे में स्थित जैन मंदिर दर्शनीय है। प्राचीन नगरी देवकुल पाटण के नाम से इतिहास में विख्यात इस कस्बे में कई मंदिर बने हैं जिनकी वास्तुशिल्प अद्भुत है।

हल्दीघाटी : महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के मध्य हुए तुमुल युद्ध की साक्षी हल्दीघाटी जिला मुख्यालय से करीब 34

किमी दूर नाथद्वारा तहसील में है। इस दर्रे में राणा के प्राण प्यारे चेतक का बलिदान स्थल चेतक स्मारक बना हुआ है। हल्दीघाटी के पास ही अकबर की सेना का पडाव स्थल शाही बाग देखने योग्य है। देशभक्ति का जज्बा जगाने वाली हल्दीघाटी को नमन करने यहां प्रतिमाह हजारों प्र्याटक पहुंचते है जो यहां के माटी का तिलक भाल पर लगा प्रताप को याद करते हैं। चेतक स्मारक के पास चेतक मगरी पर महाराणा प्रताप राष्ट्रीय स्मारक बना हुआ है।

रक्त तलाई : महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के मध्य युद्ध का मैदान रक्त तलाई के नाम से जाना जाता है। यह जिले के खमनोर कस्बे में जो जिला मुख्यालय से करीब 30 किमी दक्षिण में है। इसी मैदान पर युद्ध में वीर गति को प्राप्त शहीदों के रक्त से यह स्थान भर गया था जिस कारण इसे रक्त तलाई कहा जाता है। 18 जून 1576 के भीषण जंग के साक्षी रक्त तलाई के मैदान में झाला मन्ना, रामशाह तंवर, हकीम खां सूर के स्मारक छतरियां भी बनी हुई हैं। यहां पर सुंदर पार्क का निर्माण किया गया है।

कुंभलगढ़ : भारतीय इतिहास में अभेद दुर्ग के नाम से विख्यात कुंभलगढ़ का किला अपनी बसावट और बनावट के लिए जाना जाता है। हाल ही में यूनेस्को ने इसे विश्व विरासत में भी सम्मिलित किया है। महाराणा कुंभा द्वारा 1458 में जैन राजा सम्प्राति के किले के भग्नावेसेस पर निर्मित यह दुर्ग जिला मुख्यालय से करीब 72 किमी दूर है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्राचीर इसे माना जाता है जो चीन की दीवार के बाद आती है। किला परिसर में बादल महल , प्रताप जन्मस्थली, बाणमाता मंदिर, मामादेव मंदिर, नीलकण्ठ महादेव, बावन जैन देवरिया देखने योग्य है। यहां पर ध्वनि प्रकाश का कार्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की ओर से प्रति वर्ष यहां तीन दिवसीय कुंभलगढ फैस्टिवल का आयोजन किया जाता है वहीं जिला प्रशासन की ओर से हैरिटेज वाक फोर कुंभलगढ़ का आयोजन भी देश-विदेश में काफी लोकप्रिय हैं ।

नौचौकी राजसंमद झील : जिला मुख्यालय पर स्थित राजसमंद झील का मुख्य सेतु नौचौकी के नाम से जाना जाता है। महाराणा राजसिंह द्वारा 1676 में निर्मित यह स्थान संगमरमर के शिल्पग्राम कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । यहां पर तीन छतरियों, चार तोरणद्वारों पर मार्बल पत्थर पर ऐसी नक्काशी की गई जो कागज कलम के फनकार के लिए भी मुमकिन नहीं है। यह मुख्य सेतु 999 फीट लम्बी एवं 99 फीट चौड़ी है। नौ-नौ इंच ऊँची नौ सीढ़ियों के बाद एक पाच बनाई गई है। 17वीं सदी के जनजीवन एवं संस्कृति की यहां खुदाई की गई हैं। यहां पर विश्व का सबसे बड़ा शिलाखण्ड काव्य राजप्रशस्ति उत्कीर्ण हैं।

अणुविभा : तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य एवं गणाधिपति तुलसी द्वारा स्थापित अणुव्रत विश्व भारती का बालोदय प्रभाग देखने योग्य है। जिला मुख्यालय पर राजसमंद झील के किनारे एक पहाड़ी पर 1982 में अणुविभा प्रकल्प प्रारम्भ किया गया। बालकों में भार, भय मुक्त शिक्षा की कल्पना को लेकर इस योजना के सूत्रधार गांधीवादी विचारक मोहनभाई जैन के निर्देशन में यह स्थान बाल शिक्षा का आदर्श केन्द्र बन गया। यहां पर नदंनवन, भूलभुलैया, गुड़ियाघर, वीर बालक कक्ष, विनित बालक कक्ष, चिदएक्रग्रता गुफा, साहित्यविथि, तुलसी दिग्दर्शन, महाप्रज्ञ कक्ष देखने योग्य है। यहां पर प्रतिमाह कई बालशिक्षा के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

152, अयोध्यापुरी, किशोर नगर,
राजसमंद-313326 (राज.)
मो. 9414176733

डॉ. अम्बेडकर का संकल्प बल

❒ उषा टेलर

डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलित वर्ग के मसीहा थे। वे दलितों व शोषितों की पीड़ा को भलीभांति समझते थे। वे चाहते थे कि दलित वर्ग को भी सामान्य वर्ग की तरह जीने का अधिकार मिलें। उन्होंने दलित हित में काम करना शुरू किया। इस क्रम में मुम्बई विधानसभा ने एक बिल पास किया, जिसके अनुसार तालाब व कुएं सार्वजनिक प्रयोग के लिए खुले कर दिए गये। कानून के अनुसार इन जलस्रोतों पर किसी जाति विशेष का अधिकार नहीं रहा। हर व्यक्ति इनका उपयोग कर सकता था।

यह निर्णय भी लिया गया कि कोलाबा जिले में स्थित महानगर पालिका के टैंक का पानी दलितों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है। कानून तो बन गया, किन्तु अमल में लाने का साहस किसी में नहीं था। सवर्णों के विरोध का भय था। तब डॉ. अम्बेडकर ने घोषणा की कि वे स्वयं कोलाबा टैंक का पानी दलितों के लिए खोलेंगे। उनकी इस घोषणा से खलबली मच गई। सवर्ण समाज में क्रोध था। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों का एक समूह बनाया और 19 मार्च 1927 को टैंक का पानी खोलने का एलान किया। निश्चित तारीख पर डॉ. अम्बेडकर कोलाबा आये। वहाँ सवर्णों की भीड़ मौजूद थी। डॉ. अम्बेडकर ने सवर्णों का गुस्सा देखा, किन्तु बिना किसी घबराहट के शांत भाव से जाकर टैंक खोल दिया। पानी की धारा बह निकली। दलितों ने प्रसन्न होकर डॉ. अम्बेडकर का जयकार लगाया और पानी पीने लगे। सवर्णों को अपना क्रोध दबाना पड़ा और डॉ. अम्बेडकर दलितों के लिए कुछ बेहतर करने का संतोष लेकर वहाँ से वापस लौट गये। दृढ़ निश्चयी के लिए राह में खून भी फूल हो जाते हैं। वस्तुतः पक्का इरादा ही वह हौंसला देता है, जो बाधाओं से पार पा लेता है।

मुश्किलें भी पीछे हट जाती है,
अगर साहस का पुलिन्दा हो।
मंजिले भी पास आ जाती है,
यदि उम्मीदें जिन्दा हो।।

-प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा. विद्यालय, रेलमगरा (राजसमंद)
मो. 8829006071

युवकों का उत्साह केवल ताप बनकर यदि न रह जाए और उसमें यदि तप भी मिल जाए तो वह बहुत निर्माणकारी सिद्ध हो सकता है। **-जैनेन्द्र** (समय, समस्या और सिद्धान्त)

संस्मरण

अध्यापक ने डण्डे खाए

❒ अक्षय सिंह

विद्यालय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के समान्तर गुरु-शिष्य का मानवगत व्यवहार भी ध्यान देने योग्य होता है। कोई व्यवहार कालान्तर में स्मरण आकर प्रसन्नता देता है तो कोई क्षोभ व वेदना। ऐसे व्यवहारों की एक सूची हमारे सेवाकाल में बन जाती है। ऐसे ही व्यवहार व स्वयं के कदाचित प्रायश्चित को शब्दबद्ध कर भेजा है हमारे लेखक व पाठक श्री अक्षय सिंह जी ने अनुभवों को सहेज कर रखने तथा औरों के हित चिन्तन भाव से इन्हें प्रभावीशैली में लिखने की कला कोई अक्षय सिंह जी से सीखें। आइये, पढ़ते हैं उनकी कथा-व्यथा और उसमें तलाशते हैं स्वयं अपना रूप।

-वरिष्ठ सम्पादक

शीर्षक पढ़कर चौंकिए मत! यह सत्य घटना है। वह व्यक्ति अध्यापक ही नहीं, बल्कि उसी विद्यालय का प्रधानाध्यापक ही था। डण्डे गुप्त रूप में नहीं खाए थे, कक्षा में पढ़ाते समय, भरी कक्षा में खाए थे! ऐसा क्यों और कैसे हुआ था? इसका विद्यार्थियों व प्रधानाध्यापक पर क्या प्रभाव पड़ा ? यह सभी इस लेख में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

सम्भवत: 1969-70 की यह बात होगी। उस समय लेखक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय नाणा (पाली) में प्रधानाध्यापक था। प्रधानाध्यापक कक्षा नवीं व दसवीं में गणित विषय पढ़ाया करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि कक्षा नवीं के दो छात्रों ने नकल से लिखित कार्य कर लिया था। उत्तर-पुस्तकें जांचने से स्पष्ट हो गया था कि उन्होंने नकल की थी। दोनों विद्यार्थियों (सम्बन्धित) को पूछने पर उन्होंने कहा कि उन्होंने नकल नहीं की थी। इस पर प्रधानाध्यापक को गुस्सा आ गया और दोनों को 'मुर्गा' बना दिया गया था। 'मुर्गे' की स्थिति में भंवरसिंह राजपूत ने दूसरे लड़के 'शेषमल महाजन' (ये दोनों नकल करने वाले विद्यार्थी) को धीरे-धीरे टक्कर मारते हुए कह रहा था, तूने ही नकल की थी, तूं हां बोल दे। उसका आभास होते ही प्रधानाध्यापक ने कुछ डण्डे भंवरसिंह की पीठ पर मार दिए। उससे कहा, ''भंवरसिंह तू राजपूत व बलवान होने का भय दिखा रहा है और झूठ में शेषमल को 'हां' भरने के लिए बाध्य कर रहा है ? इस विद्यालय में यह नहीं चलेगा।'' यह बात कुछ विद्यार्थियों को सहन नहीं हुई। वे बोल पड़े, ''नकल तो शेषमल ही कर सकता है, यह गणित में कमजोर है। भंवरसिंह गणित में होशियार है आदि यह सुनते ही दोनों नकल वाले बच्चों को मुर्गे की स्थिति से हटाया गया। दुबारा पूछे जाने पर शेषमल ने स्वीकार कर लिया था कि नकल तो उसी ने ही की थी। भंवरसिंह निर्दोष था। प्रधानाध्यापक के हृदय को बड़ी ही चोट लगी थी। वे मन ही मन पश्चाताप करने लगे थे। उन्होंने व्यर्थ में एक निर्दोष बालक को, और वह भी अपनी गलत धारणा के कारण, कड़ी सजा दे दी थी। रात्रि में चैन की नींद तक नहीं ले सके थे।

प्रधानाध्यापक के पढ़ाने का तरीका था कि वे पढ़ाई शुरू करने के पूर्व गत दिवस का कार्य जांचा करते थे। लिखित कार्य में प्रतिदिन मूल्यांकन तीन व्यक्तियों द्वारा होता था। पहला मूल्यांकन बालक स्वयं द्वारा, दूसरा बैच मानिटर द्वारा और तीसरा व अंतिम मूल्यांकन अध्यापक द्वारा। मूल्यांकन में A, B व C ग्रेड देने की व्यवस्था की। C ग्रेड पाने वाले वे विद्यार्थी होते थे जिन्होंने प्रश्न गलत किया है या हल किया ही नहीं है। C ग्रेड पाने वाले विद्यार्थियों को खड़ा करके कारण पूछा जाता था। सन्तोषजनक जवाब न मिलने पर उनके उल्टे हाथ की अंगुलियों पर डण्डे मारे जाते थे। यह लिखित कार्य की जांच शून्य कालांश में व नए प्रश्न समझाने से पूर्व की जाती थी। भंवरसिंह अधिकांश दिनों में नियमित व सही कार्य करके लाता रहा था। एक दिन उसे C ग्रेड मिला। घरेलू परिस्थिति के कारण प्रश्न हल नहीं कर सका था। उसे खड़ा करके उसका हाथ प्रधानाध्यापक (लेखक) ने अपने हाथ में पकड़ कर डण्डे मारे। लेकिन डण्डे उसके हाथ पर पड़ने के बजाय प्रधायानाध्यापक (लेखक) के हाथ पर पड़े थे। भंवरसिह भौचक्का रह गया था। कालांश समाप्त हो गया था। प्रधानाध्यापक अपने कक्ष में जाकर लम्बी-लम्बी सांसें भरने लगे थे। इससे भी पश्चाताप की अग्नि शान्त नहीं हुई थी। उन्होंने भंवरसिंह की '' स्कूल फीस'' पूरी माफ कर दी थी। उससे कुछ राहत मिली थी। कुछ दिनों बाद फिर भंवर सिंह को C ग्रेड मिला था। वह डण्डे खाने के लिए खड़ा हो गया था। इस बार भंवरसिंह सतर्क हो गया था। ज्यों ही प्रधानाध्यापक ने डन्डा उठाया और पूर्व की भांति अपने ही हाथ पर डन्डा खाने के लिए तैयार हुए भंवरसिंह ने वह डन्डा अपने हाथ से पकड़ कर अपने ही हाथ पर जबरदस्ती डन्डा खाने की कोशिश की थी। उसके चेहरे से ऐसा झलक रहा था कि वह मूक शब्दों में कह रहा हो कि वह दोषी है। प्रधानाध्यापक डन्डा नहीं खाए, उसे ही डन्डा मारे। इस दृश्य से लेखक की आंखें नम हो गई थी। वे आगे बढ़ कर अन्य बच्चों से वार्ता करने लग गए थे।

समय बीतता गया, परीक्षाएं हुईं। भंवरसिंह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर कक्षा दसवीं में आ गया था। प्रधानाध्यापक ही दसवीं कक्षा में गणित पढ़ाते थे। भंवरसिंह निरन्तर उन्नति कर रहा था। उसकी फीस यहां भी माफ कर दी गई थी। अभी भी पश्चाताप की अग्नि नहीं बुझ पाई थी। जब भी प्रधानाध्यापक भंवर सिंह की कापी देखते थे और C ग्रेड आने पर खड़ा करते थे तो डन्डा मारते समय उनका हाथ रुक जाता था। दसवीं कक्षा की परीक्षा हुई। परीक्षाफल घोषित हुआ। भंवरसिंह बहुत ही अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गया था। प्रधानाध्यापक को बहुत खुशी हुई थी।

भंवरसिंह ने हायर सैकण्डरी में प्रवेश राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिरोही में लिया था। उसने वहां से एक पत्र लेखक को लिखा ''मान्यवर अपने नाणा में विद्यालय में मेरी फीस माफ कर दी थी। मैं आपका आभारी हूं। परन्तु सिरोही में मुझे कोई जानता नहीं है, मेरी फीस कैसे माफ होगी ? यदि आप एक पत्र प्रधानाचार्य सिरोही को लिख कर मेरी फीस माफ करवा सकें तो अतिकृपा होगी।'' यह पत्र पढ़ते ही लेखक ने उसके मुताबिक पत्र लिख दिया था। नतीजा यह हुआ था कि भंवरसिंह की फीस वहां पर भी माफ हो गई थी। इससे प्रधानाध्यापक को और चैन मिला।

समय बीतता गया। लेखक का स्थानान्तरण हो गया था। इस घटना को घटे लगभग दस वर्ष बीत चुके थे। लेखक का स्थानान्तरण प्रधानाध्यापक पद पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिरोही में हुआ था। नाणा की घटना विस्मृत हो चुकी थी। जब लेखक ने सिरोही में कार्यभार सम्भाला था, उस समय वहां के अध्यापकों व परिचारकों ने सुनाया था कि वहां पड़ौसी गांव का एक अध्यापक दो-तीन बार वहां आकर गया था और आपके सिरोही आने के इन्तजार में था। और वह कह कर गया था कि वह पुन: लेखक से मिलने आएगा। लेखक इससे कुछ भी आभास नहीं कर सके थे। एक दिन सचमुच एक जवान व्यक्ति उनसे मिलने आ पहुंचा था। उसने विनम्र शब्दों में अपना नाम भंवरसिंह बताते हुए, पूर्व

परिचय दिया था। लेखक को तुरन्त नाणा (पाली) वाला भंवरसिंह याद आ गया था। वह व्यक्ति यही था। दोनों बड़े प्रेम से मिले, एक दूसरे का कुशलक्षेम पूछा। लेखक को उस मुलाकात से खुशी हुई थी। जाते-जाते भंवरसिंह ने अपने योग्य सेवा चाही थी और कहा था कि जब भी जोधपुर (लेखक का निवास स्थान) जावें उसे सूचित करने का कष्ट करें।

दो-तीन लगातार छुट्टियों का अवसर आया था। लेखक ने जोधपुर जाने की तैयारी की थी। वे सिरोही बस स्टैण्ड पर पहुंचे ही थे कि भंवरसिंह एक थैला लिए आ पहुंचा था। उस थैले में मक्के के भुट्टे, खेत की ककड़ियां व तरकारियां थीं। वह थैला लेखक को देते हुए भंवरसिंह ने निवेदन किया था कि इसे अपने घर ले जाएं और बच्चों को खिलाएं। लेखक ने वह थैला लेने से इंकार कर दिया था। लेकिन भंवरसिंह नहीं माना और आग्रह करता रहा। अंत में लेखक को वह थैला स्वीकार करना पड़ा था। उस समय लेखक की आँखों में आंसू फूट पड़े थे। उन्होंने भंवरसिंह को काफी समय तक छाती से चिपकाए रखा।

बस चल पड़ी थी। रास्ते में तरह-तरह के विचार आने लगे थे। वे सोच रहे थे, क्या मैं इस भेंट (थैले) को गुरू दक्षिणा समझूं ? क्या मैं इसका हकदार हूं ? एक निर्दोष दण्डित विद्यार्थी उस अध्यापक को क्यों और कैसे भेंट दे सकता है? क्या उसकी स्कूल फीस माफ होने से वह खुश था, और उसी के फलस्वरूप भेंट लाया था? अंग्रेजी में दो कहावतें मशहूर हैं-

1. Spare the rod and imporve the child.
2. Spare the rod and spoil the child.

इनमें से किसे उपयोगी समझूं ? क्या अध्यापक द्वारा (के) उन्हें खाने से बच्चों में सुधार आता है ?'' इस प्रकार के अनेक प्रश्न बार-बार उठ रहे थे। परन्तु भंवरसिंह की प्रगति एवं व्यवहार में सुधार देखकर लेखक को बहुत बड़ा सन्तोष मिला था। उन्हें ऐसा लग रहा था, मानो उनका बहुत बड़ा कर्ज चुकता हो गया हो। डण्डे खाने से सुधार किस में और कैसा आया था यह बात लेखक अभी तक समझ नहीं पाए हैं।

-सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
अमृतिया बेरा जाव महामंदिर
7वीं गली, पावटा सी-रोड, जोधपुर
मो. 8955526482

**वोट हमारा है अधिकार,
कभी ना करें इसे बेकार।**

विश्व पुस्तक दिवस

सच्चा मित्र होती हैं पुस्तकें

❒ प्रहलाद शर्मा

**''एक पुस्तक का अध्ययन,
एक दीप जलाना है
और उनके पुस्तकों का अध्ययन
दीपावली मनाना है।''**

सच्चा मित्र वह होता है कि जिस पर हम पूरा विश्वास कर सके, जो प्रत्येक स्थिति में हमारी सहायता के लिए उपलब्ध हो। अधिकांश मित्र स्वार्थी और अवसरवादी होते हैं, वे चाहे जब हमें अपनी सहायता एवं परामर्श बाधित कर सकते हैं, परन्तु पुस्तकों के संबंध में ऐसी बातें नहीं कही जा सकती है क्योंकि उनमें निहित ज्ञान सर्वथा उपलब्ध रहता है और वह सार्वदेशिक एवं सर्वकालीन होता है। पुस्तकें मित्र के समान होती हैं, जिन पर सदैव विश्वास किया जा सकता है और जो सदैव सहायता के लिए उपलब्ध रहती है। पुस्तकें संकट के समय हमारा मनोबल पुष्ट करती हैं और हमारा मार्गदर्शन करती है और सबसे बड़ी बात यह है कि प्रत्येक क्षण उपलब्ध रहती है। पुस्तकें कई तरीके से हमारे साथ मित्रवत् व्यवहार करती हैं। कुछ पुस्तकें हमेशा जीवित रहना सिखाती है। कुछ पुस्तकें हमें कष्ट सहन करना सिखाती है। विश्व में जितना भी ज्ञान है, सब पुस्तकों में निहित है। पुस्तकें हमारी वे मित्र हैं जो बदले में हमसे कुछ नहीं चाहती है, हमसे केवल आशा करती है कि हम उन्हें संभाल कर रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे हमारी सहायता कर सके। अच्छी पुस्तकों के साथ होने से हमें अपने मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खलती है। मानव पुस्तकों को अपना मित्र बनाकर समय-समय पर जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा है कि- ''पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।'' श्रेष्ठ विचारों का स्रोत पुस्तकें ही होती है। पुस्तकों के अध्ययन और पढ़ी हुई बातों पर मनन चिन्तन नहीं करता है, उसका कोई भविष्य नहीं होता है, जो केवल चिन्तन करता है, किन्तु पढ़ता नहीं है, वह स्थायी रूप से संकट ग्रस्त बना रहता है। पुस्तकें जीवन में परिवर्तन लाती है। पुस्तकें ही हैं जो नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदल देती हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने पुस्तकों के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए इस प्रकार कहा कि-''जो पुस्तकें हमें सोचने के लिए विवश करती हैं, वे हमारी सबसे अधिक सहायक होती हैं।''

पुस्तकें पढ़ने से आपके दिमाग में सकारात्मक बदलाव आते हैं। अच्छी पुस्तकें पढ़ने से दिमाग को ''गो टू एक्शन पावर'' यानी किसी काम को करने के लिए दिमाग में विचार की गतिविधियां सक्रिय होती है। जिससे किसी भी विषय को अधिक पॉजिटिव बना सकते हैं। बच्चों को बचपन में पंचतंत्र की कहानियां इसलिए पढ़ाई जाती है क्योंकि इससे उनमें संस्कार आते हैं। इसी प्रकार नॉवेल पढ़ने से दिमाग में न्यूरोन बढ़ते हैं जिससे याददाश्त बढ़ती है। तनाव में पढ़ने वाले लोगों को बिबलियों थैरेपी यानी किताबें पढ़ने के लिए कहा जाता है जिससे मन को संतुष्टि मिलती है और दिमाग तनाव मुक्त होता है। रात को किताबे पढ़ने से नींद अच्छी आती है साथ ही दिमाग में किताबें पढ़ने से तंत्रिका संबंधी बदलाव आता है। इस संबंध में यूरो वैज्ञानिक ग्रिगोरी बर्न्स का कहना है कि ''कहानियां हमारी जिन्दगी का आधार होती है। एक जबर्दस्त कहानी दिमाग में याददाश्त बढ़ाती है।''

प्राचीनकाल से लेकर आज तक पुस्तकों का महत्व निर्विवाद रहा है। इस संबंध में प्रायः एक प्रसंग की चर्चा होती रहती है कि एक बार एक गुरु अपने तीन शिष्यों के साथ पुस्तकों को लेकर नाव में यात्रा कर रहे थे। अचानक नाव में छेद से थोड़ा-थोड़ा पानी आने लगा तो एक-एक कर तीनों शिष्यों पानी में डूब गए लेकिन

उन्होंने पुस्तकों को नष्ट नहीं होने दिया। उनके गुरु सभी पुस्तकें लेकर सुरक्षित नदी पार कर गये। वे तीनों शिष्य पुस्तकों के महत्व से भली-भाँति परिचित थे तथा इसी कारण उन्होंने बलिदान देकर भी पुस्तकों की रक्षा की।

पुस्तकें हमको कष्ट सहन करना सिखाती है, साथ ही श्रेष्ठ पुस्तकों के साथ तो व्यक्ति बड़े से बड़ा दुःख एवं पीड़ा भी भूल जाता है। इस संबंध में भी एक प्रसंग इस प्रकार है-''महान एवं नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर को एक बार एक फोड़ा हो गया। जब वह डॉक्टर के पास गये तो डॉक्टर ने उन्हें ऑपरेशन कराने की सलाह दी। डॉक्टर ने ऑपरेशन करने से पूर्व उन्हें बेहोश करना चाहा तो रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मना कर दिया। उन्होंने डॉक्टर से कहा कि मुझे मेरी गीतांजलि दे दो। मैं गीतांजलि पढ़ना शुरू कर दूं फिर आप मेरा ऑपरेशन कर लेना, मुझे कोई कष्ट नहीं होगा। वास्तव में ऐसा ही हुआ कवि ने पुस्तक पढ़ना शुरू किया और ऑपरेशन पूरा होने तक उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई।'' यही श्रेष्ठ पुस्तकों का महत्व है कि उन्होंने बिना बेहोश हुए, बिना कष्ट सहन किए अपना ऑपरेशन करवा लिया।

इसी प्रकार हमारे श्रेष्ठ धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागत गीता, बाईबल, कुरान एवं गुरु ग्रन्थ साहिब हमें जीवन में मर्यादित एवं अनुशासन में रहना सिखाते हैं। ये ऐसे ग्रन्थ है जो प्रत्येक संकट के समय हमारा मनोबल पुष्ट करते है और साथ ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं। आधुनिकता में भटकती विचारधारा को कर्म प्रदान बनाने की शिक्षा श्रीमद्भागवत गीता में ही मिलती है। आज के इस भौतिकवादी युग में मनुष्य अपने-अपने नियत कर्मों को कर रहा है परन्तु इन कर्मों को करते हुए कार्य में असफल होने पर वह निराशा के अंधेरे में डूब जाता है और तनावग्रस्त होकर अपनी जीवनलीला को ही समाप्त करने का कदम भी उठा लेता है। ऐसे समय में गीता का अध्ययन ही उन्हें इस प्रकार के कर्म को रोकने की प्रेरणा देता है। यह ग्रन्थ सम्पूर्ण मानव जाति के लिए मूल्यवान है। मनुष्य जब कि कर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और उसे रोकने की प्रेरणा देता है। यह ग्रन्थ सम्पूर्ण मानव जाति के लिए मूल्यवान है। मनुष्य जब कि कर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और उसे यह पता नहीं चलता कि उचित कर्तव्य क्या है? तब यह ग्रन्थ ही सही मार्गदर्शन करता है। गीता ही ऐसा ग्रन्थ है जो मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाता है। गीता ही हमें सिखाती है कि हमें अपने कर्म पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गीता में दी गई शिक्षाओं को दृष्टि में रखकर अपने जीवन पथ का निर्धारण करना चाहिए, तब हमारे सामने कोई ऐसी चुनौती नहीं आयेगी जिसका कोई समाधान नहीं है। यह सभी धार्मिक ग्रन्थ सच्चे अर्थों में हमारे सच्चे मित्र है जो हमेशा आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करते रहते हैं।

महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, गोपालकृष्ण गोखले जैसे आजादी के दिवानों ने अपने विचारों को पुस्तकों के माध्यम से ही प्रचार-प्रसारित किया और भारतवासियों के मन में स्वतंत्रता के आंदोलन का बीजारोपण किया और देश को स्वतंत्र करवाया। इसी प्रकार अफ्रीका के अश्वेत नेता जो भारत रत्न विजेता थे जिनका अभी हाल ही में निधन हुआ नेल्सन मंडेला ने भी अपने 27 वर्ष के कारावास का जीवन पुस्तकों के सहारे ही व्यतीत किया था। इतना ही नहीं अनेक आजादी के दिवाने पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हुए फांसी के तख्ते पर भी खुशी-खुशी चढ़ गए। पुस्तकें हमेशा हमारे साथ मित्रवत व्यवहार करती है साथ ही अपने पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करती है।

पुस्तकों का महत्व निम्न कारणों से भी है-

- मनुष्य की बौद्धिक आवश्यकता को पुस्तकों की सहायता से ही पूरा किया जा सकता है।
- विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र होती है।
- पुस्तकें प्रकाश गृह, जो समय के विशाल समुद्र में रखी है।
- सरल एवं श्रेष्ठ पुस्तकों में रोग-पीड़ित को बड़ी शांति मिलती है, जैसे स्नेहमयी जननी की थपकियां बच्चे को नींद की गोद में सुलाती है।
- पुस्तकें अज्ञान के तिमिर से ज्ञान के ज्योतिमय प्रकाशित द्वार तक पहुँचने वाली दिव्य ज्योति है।
- उत्तम पुस्तकों का संग्रह ही वर्तमान युग का सच्चा विश्वविद्यालय है। पुस्तकें घर की रोशनी, समाज की ज्योति और कुल की आभा है।

''मैं तो नरक में भी किताबों का स्वागत करता हूँ लेकिन अगर किताबें हुई तो वो भी स्वर्ग बन जाएगा।'' लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का उक्त कथन पुस्तकों का महत्व प्रकट करने में पर्याप्त समर्थ है। पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान स्थायी एवं उपयोगी होता है। अच्छी पुस्तकों के साथ होने से हमें अपने मित्रों के साथ में रहने की कमी नहीं खटकती है। पुस्तकें सच्चे मित्र जैसी होती है साथ ही जीवन का आधार होती है। यदि पुस्तकों के बारे में कुछ इस प्रकार कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी-

पुस्तकें
घर की शोभा है
मन की सुन्दरता
और
आत्मा की आनंदानुभूति है।

-5/279, एस.एफ.एस.,
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-20
मो. 8829003862

रामचरित मानस अनुशीलन/बाल कृष्ण राव/ अनामय प्रकाशन, ई-776/7, लाल कोठी योजना, जयपुर/संस्करण 2010/ पृष्ठ सं. 192/मूल्य ₹ 300.00

समीक्ष्य पुस्तक रामचरित मानस अनुशीलन इसके विद्वान लेखक श्री बाल कृष्ण राव के दीर्घ अध्ययन-मनन से उपजा एक ऐसा ग्रन्थ है जो तुलसीकृत श्री रामचरित मानस के विविध महत्वपूर्ण पक्षों पर सांगोपांग प्रकाश डालता है। लगभग दो सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ में कुल इक्कीस अध्याय है जिनमें बीच-बीच में बड़े अध्याय को सुगम व सुग्राह्य बनाने के लिए उप अध्याय दिए गए हैं। इस प्रकार लगभग 60 अध्याय-उपअध्याय पुस्तक में हैं जो लेखक के अध्ययन की गहराई के प्रमाण है।

भारतीय मनीषा में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में जाना जाता है। व्यक्ति अपने जीवन काल में विविध रिश्तों एवं भूमिकाओं के इन विविध रूपों में वह निहित मर्यादाओं एवं अनुशासन का कैसे व कितना पालन कर पाता है, यह उसे गर्व व गरिमा अथवा इसके विपरीत निन्दा दिलाता है। भगवान राम का सम्पूर्ण जीवन इन मर्यादाओं का पालन करने वाले व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। अतः उन्हें पुरुषों में उत्तम-पुरुषोत्तम की महिमा प्रदान कर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहा जाता है। इन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवन झांकी का प्रकाश आम व्यक्ति को जिस ग्रंथ में मिलता है, उसका नाम है तुलसी विरचित श्रीरामचरित मानस। यद्यपि राम के जीवन चरित्र पर महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित श्री रामायण भी है, लेकिन मूल संस्कृत में होने के कारण वह जन-जन की जुबान पर अधिकार स्थापित नहीं कर सकी।

समीक्ष्य पुस्तक रामचरित मानस अनुशीलन में मानस के सातों काण्डों यथा बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंका काण्ड एवं उत्तरकाण्ड के कथानक का विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है। इनमें भी विश्रामवार विभाजन कर किया गया वर्णन पाठकों को रुचिपूर्वक सतत अध्ययन के लिए प्रेरित करते हैं।

श्री रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम ने प्रसंगवश अयोध्यावासियों, परिवारजनों, भक्तों एवं शरण में आए शरणागतों को नीति, धर्म, तत्वज्ञान वैराग्य, भक्ति आदि के बहुत सुन्दर उपदेश दिए हैं। इन उपदेशों में से कतिपय विशेष उपदेशों को चिन्हित कर पुस्तक में वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। लगभग दो दर्जन उपदेश कुछ इस प्रकार परोसे गए हैं-किसने उपदेश दिया / किसको उपदेश दिया / किस अवसर पर दिया / क्या उपदेश दिया / मानस का संदर्भ। मानस में वर्णित उपदेशों का इस तरह मिलना पाठकों को बहुत अच्छा लगना स्वाभाविक है। एक उदाहरण देखिए जो पुस्तक में वर्णित उपदेशों में क्रम संख्या बारह (पृ.सं. 109) पर है। यह रावण के मरने पर विभीषण द्वारा शोक करते समय का है। राम विभीषण को समझाते (उपदेश) हुए कहते हैं, 'समरांगण में वीर गति प्राप्त व्यक्ति पर शोक नहीं करना चाहिए। क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति आदरणीय होता है।' यह धर्मोपदेश मानस के लंकाकाण्ड में है।

श्री रामचरितमानस में आए विभिन्न प्रसंगों यथा धनुषभंग, अहिल्या उद्धार, मंथरा का षड़यंत्र, केवट-राम मिलन, राम-भरत मिलन, सीताहरण आदि को अन्तनिर्हित कथाओं के साथ समझाया गया है। मानस के प्रमुख संवाद भी चिन्हित कर एक अलग अध्याय (क्रमांक 10 पृ.सं. 129 से) में प्रस्तुत किए गए हैं।

श्री रामचरितमानस अवधि भाषा में पद्य विधा में रचित है। पद्य के विभिन्न उपागमों यथा दोहा, चौपाई, सोरठा, छंद आदि की वास्तविक संख्याओं की सारणी पुस्तक में दी गई है जिसके अनुसार मानस में 4605 चौपाइयां, 1238 दोहे, 75 सोरठे आदि-आदि हैं। साहित्य के विभिन्न रसों यथा शान्त, अद्भुत, वीर, वीभत्स, हास्य, करुणा, भयानक, शृंगार वात्सल्य रसों का प्रयोग श्रीरामचरितमानस में हुआ है।

श्रीरामचरितमानस में राम का मर्यादापूर्ण अलौकिक चरित्र केन्द्र बिन्दु है। भाषा और शैली इस काव्य का शरीर है। इसके माध्यम से उनके चरित्र में माधुर्य एवं सौन्दर्य प्रस्फुटित हुआ है। मानस में तुलसी बाब ने दोहों, चौपाइयों, छंदों के माध्यम से रामकथा का अमृतपान हमें करवाया है। इनको विश्लेषण व अनुशीलन समीक्ष्य पुस्तक में दृष्टिगोचर होता है।

समीक्ष्य पुस्तक में श्रीरामचरितमानस में आए कतिपय गूढ़ प्रसंगों के खोजी समाधान प्रस्तुत किए गए हैं। इनमें कुछ इस प्रकार हैं-1. सीता किसकी पुत्री थीं? 2. सीता को अशोक वाटिका में क्यों रखा गया? 3. रावण दशानन क्यों हैं? 4. कोई कैकेयी नाम क्यों नहीं रखता है? 5. राम को 14 वर्ष का ही वनवास क्यों? 6. विवाह के समय सीताजी ने रामजी के चरण क्यों नहीं छुए?

पुस्तक में श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भागवत तथा श्रीराम एवं श्री कृष्ण में साम्यता का भी विवेचन किया गया और भी बहुतेरे गूढ़ प्रसंग एवं बातें समीक्ष्य पुस्तक में है जो उसे पठनीय एवं संग्रहणीय बनाते हैं।

प्रकाशन एवं मुद्रण की दृष्टि से पुस्तक उत्तम है। गत्ते की जिल्द व उस पर अरण्य की पृष्ठभूमि में गोस्वामी तुलसीदास जी का लेखन मुद्रा में भावपूर्ण फोटो, टेक्स्ट पेपर एवं मुद्रण वांछित गुणवत्ता लिए है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पुस्तकालयों तथा श्रीराम, रामायण एवं रामचरितमानस में रुचि रखने वाले महानुभावों के लिए पुस्तक उपयोगी व संग्रहणीय सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है।

-ओमप्रकाश सारस्वत

वरिष्ठ संपादक (शिविरा) **मो. 94140600368**

शहीद की माँ से पूछना/बद्री लाल 'दिव्य'/ वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर/संस्करण 2012/ पृष्ठ सं. 104/मूल्य ₹ 150.00

पूर्ण सचित्र, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के लेखक बद्रीलाल दिव्य कोटा अंचल के ख्याति प्राप्त रचनाकार है। 'शहीद की माँ से पूछना' कृति में कवि ने देशभक्ति की अनेकों कविताएं अंकित की है। लेकिन देशभक्ति धार्मिक प्रार्थना की तरह नहीं अपितु संवेदनाओं में माँ का हाहाकार करना जीवन भी है। जिसके सपूत ने देश की खातिर अपने अंगों का उत्सर्ग किया है।

बद्रीलाल दिव्य पेशे से अध्यापक है। अध्यापक का लक्ष्य ही समाज को सद्मार्ग दिखाना होता है। एक शिक्षक की मनोभूमि में वर्तमान की दीन-हीन, दया और बेरोजगार पीढ़ी

तथा भारत का भविष्य तथा तमाम उदात्त भावनाएं काव्य रूप धर कर शनैः शनैः सम्मुख आती है।

उठो! जागो सोओ मत।
जीवन व्यर्थ खोओ मत।।
लो संकल्प कुछ करने का।
मातृ-भूमि पर मरने का।।
नव पुष्टि का निर्माण करो,
दुष्टों के तुम प्राण हरो।
राग द्वेष ईर्ष्या दूर भगाओ,
भू पर कांटे बोओ मत,
उठो! जागो सोओ मत।

आज भारत आजाद है। सर्वजन की कल्याण की भावना के साथ देश आजाद हुआ था। परन्तु ऐसा कभी नहीं हुआ, गरीब और गरीब और अमीर और अमीर होते गए। गांवों और शहरों में भेदभाव पनपता गया। समाज में प्रतिरोध उत्पन्न हो गया। दिव्य की रचनाओं में यही असंतोष है तथा समरसता का संदेश है।

मैं राष्ट्र निर्माता हूं।
बच्चे का भाग्य विधाता हूं।
मैं ज्ञानी हूं, स्वाभिमानी हूं, महादानी हूं।
मैं बच्चों का व्यक्तित्व बनाता हूं।
चरित्र का निर्माता हूं।
मुझमें अदम्य शक्ति है।
सूर-तुलसी सी भक्ति है।
मैं ही अपने अथक परिश्रम से,
बच्चों को गांधी, सुभाष,
गार्गी, झांसी, किरण बेदी बनाता हूं।

'शहीद की माँ से पूछना' काव्य संग्रह में कवि ने राष्ट्र की अवमानना पर संकल्प लिया है कि 'मैं चुप नहीं बैठूंगा।' एक सच्चे शिक्षक की भांति शिथिलता में एकता का संदेश दूंगा। बिना किसी लाग-लपेट कर छिपाव-दुराव के सीधी-सादी भाषा में सहज रूप से अभिव्यक्त करवाने की कला बद्रीलाल दिव्य के पास मौजूद है।

लोकतंत्र ने जनता का जागरण परम आवश्यक है। प्रथम कविता देश को नमन के साथ पुस्तक प्रारम्भ होती है।

शत-शत नमन, माँ शारदे।
भव सागर से मुझे तार दे।।

इस संग्रह में केवल व्यवस्था, शासन और न्यावत का दृश्य-दुर्दशा का ही अंकन नहीं है, अपितु वर्तमान सामाजिक जीवन में उतर आई आधुनिकता के नाम पर नग्नता और दुष्प्रवृत्तियों पर भी चित्रण 'बौना आदमी' में निहित है। 'मेरी कलम' कविता में स्वतंत्रता से समझौता नहीं करने का संदेश दिया है। कवि प्रकृति प्रेमी है उसका कुचल चितेरा है। नदी और राहगीर, मैं योगी हूं, आत्मविश्वास, मेरा गांव, चम्बल की महिमा, चांद और कुमेदिनी कविताओं में सार्थक अभिव्यक्ति है।

बद्रीलाल दिव्य की कविताओं में दर्द भी है, फर्ज भी है और समाज का कर्ज भी है।

-पृथ्वीराज रतनू
एफसीआई गोदाम, इंदिरा कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9414469200

अपने दीपक स्वयं बनो/करुणा श्री/ दीपक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 930-31, गजकृपा कॉम्पलेक्स, गोवर्धननाथ जी की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-03/संस्करण 2013/ पृष्ठ सं. 108/मूल्य ₹ 225.00

समीक्ष्य पुस्तक 'अपने दीपक स्वयं बनो' का शीर्षक ही अपील करने वाला है। दरअसल यह महात्मा बुद्ध का उपदेश है जो उन्होंने अपने प्रधान शिष्य आनन्द को दिया था। बुद्ध ने कहा था,'अप्प दीपो भव' अर्थात अपने दीपक आप स्वयं बनो। हम सुधरें तो जग सुधरेगा की अवधारणा भारतीय दर्शन में देखने को मिलती है। पुस्तक 'अपने दीपक स्वयं बनो' में वे शिक्षाप्रद कहानियां सम्मिलित की गयी हैं जिनमें उत्तम शिक्षा छिपी है और जो इंसानियत का पाठ पढ़ाने वाली है। इन कहानियों की संख्या चौबीस है।

यद्यपि संग्रह में शुमार सभी कहानियाँ कथा व कथ्य की दृष्टि से खूबसूरत है तथापित कुछेक दृष्टान्त लें तो जीवन का अंश नामक कहानी में यह बतलाया गया है कि कैसे अच्छा वातावरण जीवन में आदर्श परिवर्तन लाता है। एक हरिजन बालक अपने श्रम के बल पर किसार परिवार में ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेता है। साहसी मृगया कहानी में जाति और धर्म से ऊपर उठकर एक ऐसी घटना का उल्लेचा हुआ है जो इंसानियत की जय करती है। इसमें एक ऐसी बच्ची है जो युद्ध के समय परिवार वालों से बिछुड़ जाती है और उसे एक मुसलिम परिवार की महिला ले जाती है जो बाद में परिवार की निधि सिद्ध होती है।

कीचड़ में खिला कमल कहानी में दोस्ती का अनोखा उदाहरण पेश हुआ है। कहानियों में माँ के लिए, ईमानदारी का फल, भावना, संगठन में शक्ति, भारत का दिन, बुढिया की सीख, फिर सुबह होगी, नेकी का फल, परिवर्तन, कर्म का महत्व तथा अपने दीपक स्वयं बनो विशेष पठनीय हैं।

आज के ई.मीडिया के दौर में जब टीवी सबके सिर चढ़कर बोल रहा है, अपने दीपक स्वयं बनो जैसी कृतियाँ निश्चय ही उत्तम संस्कारों की स्थापना करने में सहायक होंगी। साहित्य को समाज का आईना इसीलिए कहा जाता है कि उसमें बच्चे अपने घर, परिवार, समाज और देश-प्रदेश की छवि देखकर वैसा होने का प्रयास कर सकते हैं। इस दृष्टि से समीक्ष्य पुस्तक सर्वथा खरी उतरती है। पुस्तक में लेखिका ने सरल एवं सहज बोधगम्य भाषा में छोटे-छोटे वाक्यों में अपनी बात कही है। पढ़ते समय एक दृश्य पाठक के मस्तिष्क में उभरता है और यही प्रभावी लेखन की विशेषता होती है। प्रत्येक कहानी की समाप्ति के पश्चात शिक्षा के रूप में अमृत वचन लिखा गया है जो सोने में सुहागे की तरह लगता है।

पुस्तक का मुद्रण सुन्दर व एक आध को छोड़ त्रुटिमुक्त है। कागज उत्तम है। कवरपेज मजबूत व आकर्षक है। समग्र प्रस्तुति मनमोहक है। पुस्तकालयों एवं संदर्भ की दृष्टि से मूल्य भी अधिक नहीं कहा जा सकता मगर बच्चों के लिए अधिक है। पॉकेट संस्करण कम मूल्य के निकाल कर बच्चों तक पुस्तक की पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए। संक्षेप में कहें तो पुस्तक के 108 पृष्ठ एक तरह से माला के 108 मनियें हैं जिनमें नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों की खुशबू फैली है।

-मदनलाल पुरोहित, प्र.अ.
रामावि, फतेहपुर, संगरिया (हनुमानगढ़)
मो. 9460688160

भारतीय समाज में महान परिवर्तन होने वाले हैं। देश में नवजीवन हिलोरें ले रहा है। भारत की अवरुद्ध जीवनशक्ति अब फिर वेगवती हो चली है। भारत का नया मानव अपने सपने सार्थक करने को निकल पड़ा है। इस नवजीवन-प्रवाह को रोकने का प्रयत्न निरर्थक है। इसे रोकने का प्रयत्न सफल नहीं हो सकता। इस तरह सामाजिक शक्ति नष्ट करने से व्यक्तियों तथा समूहों को रोकना है। सामाजिक शक्ति की दिशा निर्धारित करनी है, उसका नियन्त्रण करना है।

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

गुब्बारा दिलाएगा मोटापे से मुक्ति

लंदन। वो दिन दूर नहीं, जब वजन घटाने के लिए न तो जिम में घंटों पसीना बहाना पड़ेगा, न ही पसंदीदा पकवानों से दूरी बनानी होगी। ब्रिटिश वैज्ञानिक एक गैस्ट्रिक गुब्बारा बनाने में कामयाब रहे हैं, जो भूख नियंत्रित करके मोटापे से मुक्ति दिलाने में कारगर साबित होगा।

'डेली मेल' के मुताबिक गैस्ट्रिक गुब्बारे को एक कैप्सूल के जरिए शरीर में प्रवेश कराया जाता है। पेट में पहुंचकर कैप्सूल धुल जाता है और गुब्बारा फूलकर बाहर निकल आता है। यह पेट का बड़ा हिस्सा घेरे रहता है, जिससे मस्तिष्क को पेट भरा होना का अहसास होता है। वह व्यक्ति को कम खाने का संदेश देता है। इससे धीरे-धीरे उसके वजन में कमी आने लगती है।

-हिन्दुस्तान 1.3.2014

हार्ट अटैक आने के बाद भी सुरक्षित रहेगा दिल

अमेरिकी चिकित्सकों ने एक ऐसी तकनीक खोज निकाली है, जिसके हार्ट अटैक के बाद भी दिल को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचेगा। इस तकनीक में रसायन लगे छोटे-छोटे कणों (माइक्रोपार्टिकल) का इस्तेमाल किया जाता है। दिल का दौरा पड़ने के 24 घंटे के अंदर इन कणों को इंजेक्शन से शरीर में पहुंचाना होता है।

नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागों के शोधकर्ताओं के मुताबिक दिल के दौरे के समय भयंकर तनाव उत्पन्न होता है। इसे कम करने के लिए शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र बड़ी संख्या में सफेद रक्त कणिकाओं का उत्सर्जन करता है। यह कणिकाएं खून का प्रवाह ठीक करती है, लेकिन साथ ही इनसे कई हानिकारक कोशिकाएं भी तैयार होती हैं। ये कोशिकाएं दिल के उत्तकों को और कमजोर बना देती हैं। ऐसी स्थिति से बचाने में ही रसायन लगे यह कण फायदेमंद होंगे। यह माइक्रोपॉर्टिकल तैयार करने के लिए इस पर टांकों को गलाने वाला पोली एसिड लगाया गया। इससे इन पर ऋणात्मक चार्ज आता है। वहीं हानिकारक कोशिकाओं पर धनात्मक चार्ज होता है। दोनों मिलने पर एक-दूसरे को निष्क्रिय करते हैं। **-हिन्दुस्तान 19.2.14**

जल्द आ रही है हवा से चलने वाली कार!

दिल थाम कर बैठें। अब तक आपने पेट्रोल, डीजल औरसीएनजी कसे चलने वाली कारें देखी हैं। अब आप हवा से चलने वाली कार को भी देख सकेंगे। जी हों, यह बिल्कुल सच है। फ्रांस की कार निर्माता कंपनी पियोग्योट लाने जा रही है दुनिया की पहली हवा से चलने वाली कार। यह हाइब्रिड एयर इंजन प्रणाली का उपयोग होगा, जो पेट्रोल को संघानित हवा से मिलाएगा। कंपनी ने कहा हे कि शहरों में इस कार से पेट्रोल खर्च 80 फीसदी तक घट जाएगा। कंपनी ने एक बयान जारी कर कहा कि वायु शक्ति का उपयोग सिर्फ शहरों में चलाई जाने वाली कारों में होगा और 43 एमपीएच से कम पर यह खुद सक्रिय हो जाएगा। यह कार या तो पेट्रोल पर या हवा पर या दोनों के मिश्रण पर चल सकेगी। बयान में कहा गया कि 2020 तक यह कार प्रति गैलन पर 117 मील चल सकेगी।

तबीयत बिगड़ते ही डॉक्टर हाजिर

अचानक तबीयत बिगड़ने पर डॉक्टर को फोन करके बुलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने उच्च तकनीक से लैस ऐसी पट्टी बनाने का दावा किया है, जो मरीज के दिल की धड़कन, शरीर के तापमान, सांस की गति और ब्लड शुगर के स्तन में होने वाले बदलावों पर नजर रखने में सक्षम होगी। जैसे ही उसे कुछ भी अंतर महसूस होगा, मोबाइल पर मैसेज भेजकर डॉक्टर को इत्तला कर देगी।

'डेली मेल' के मुताबिक नई पट्टी अति संवेदशील सेंसरों से लैस है। यह वाई-फाई के जरिए हर दो मिनट बाद डॉक्टर के मोबाइल और कंप्यूटर पर मरीज की तबियत के बारे में सूचना भेजती है। हालत बिगड़ने पर यह फोरन मरीज के पास पहुंचने का अलर्ट भी देती है। इससे मरीज के पास तुरंत डॉक्टरी मदद पहुंच पाती है।

अखबर के अनुसार निर्माताओं ने इस पट्टी को 'सेनसियम विटल्स पैच' नाम दिया है। यह आम आदमी की पहुंच में होगी, क्योंकि इसकी कीमत 75 पाउंड (लगभग 3,500 रुपये) रखी गई है। निर्माताओं के मुताबिक अमेरिका में 'सेनसियम विटल्स पैच' के परीक्षण के सकारात्मक नतीजे मिले हैं। अब ब्रिटेन के दस अस्पतालों में इसे आजमाने की तैयारी है। दूसरे चरण में सफलता मिलने के बाद पट्टी के चिकित्सकीय इस्तेमाल के लिए मंजूरी लेने की कोशिश की जाएगी।

हालांकि विशेषज्ञ 'सेनसियम विटल्स पेच' के प्रयोग को लेकर चिंतित है। उनका कहना है कि यह तकनीक दूर से ही मरीजों की देखभाल को बढ़ावा दे सकती है, जो कतई अच्छा नहीं है। मरीज को हमेशा किसी के साथ की जरूरत होती है। उसे कैसा महसूस हो रहा है, यह लगातार पूछते रहना जरूरी है। **-हिन्दुस्तान 3.3.14**

केवल 15 सेकंड में भरेगा गोली का जख्म

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने ऐसी सुई तैयार की है, जिससे गोली का बड़े से बड़ा जख्म बस 15 सेकेंड में भर जायेगा। इस सुई का इस्तेमाल जल्द ही अमेरिका सेना में किया जा सकता है। बाद में इसे अस्पतालों में भी इस्तेमाल के लिए तैयार किया जाएगा। इस सुई का नाम एक्सस्टेट है। इसमें तरल पदार्थ सोखने वाले दर्जनों छोटे-छोटे स्पंज भरे होते हैं। इन्हें गोली से बने घाव में सुई के जरिए डाला जाता है। रक्त के संपर्क में आते ही इसका आकार बढ़ जात है और ये खून बहने का रास्ता रोक देते हैं। वहीं स्पंज पर रक्त को जल्द जमाने वाले पदार्थ होते हैं, जिससे रक्त जम जाने से रक्तस्त्रावन रूप जाता है। इससे कई सैनिकों की जान बचाई जा सकेगी।

सुई बनाने वाली कंपनी रेवमेडएक्स के मुताबिक इंजेक्शन लगाने के बाद घाव भरने की प्रक्रिया काफी तेज होती है। जब तक आप पट्टी बांधने जाते हैं, तब तक रक्तस्राव रूप चुका होता है। वहीं यह स्पंज दबाव भी बनाते हैं, इसलिए घाव को दबाने की भी जरूरत नहीं होती है।

-हिन्दुस्तान 16.2.2014

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

दौसा

रा.उ.प्रा.वि., सायपुर पं.स. महवा में श्रीमती कमलेश देवी मीना द्वारा 70,000 रुपये की लागत से माँ सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया गया तथा मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करवाकर छात्रों को प्रसादी वितरण की।

नागौर

रा.उ.मा.वि., रिड़ को श्री पूरणमल मर्दा से 5 सैट लोहे के टेबल-स्टूल लागत 5,000 रुपये, श्री गंगा प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद लढ्ढा से पाँच सैट लोहे के टेबल स्टूल लागत 5,000 रुपये, श्री राजकुमार पहाड़िया से 10 सैट लोहे के टेबल स्टूल लागत 10,000 रुपये, श्री राधेश्याम जी ओम प्रकाश दाधीच से पाँच सैट लागत 5,000 रुपये, श्री बृजवल्लभ, श्री वल्लभ, श्री सूरजमल, भागीरथ व्यास से एक वाटर कूलर मय टंकी व फिटिंग चार्ज लागत 38,000 रुपये, छः सैट लोहे की टेबल-स्टूल लागत 6000 रुपये, स्टेज चबूतरे की फर्श के लिए मार्बल चौकियां लागत 4,000 रुपये। **रा.मा.वि., लाडपुरा** में श्री नेमीचन्द जांगिड़ द्वारा 3,41,000 रुपये की लागत से एक हॉल 20 फुट × 20 फुट मय बरामदा का निर्माण करवाया गया एवं एक कम्प्यूटर मय प्रिंटर लागत 25,000 रुपये का विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., डाबरियानी कलां** में श्री सुखाराम कमेड़िया (शा.शि.) द्वारा 80,000 रुपये की लागत से मुख्य प्रवेश द्वार मय फाटक का निर्माण करवाया गया।

पाली

रा.बा.उ.मा.वि., निमाज को मै. डोनियर इन्डस्ट्रीज लिमिटेड मुम्बई द्वारा विद्यालय को विद्यालय की बैण्ड पार्टी हेतु उपकरण तथा 21 छात्राओं हेतु बैण्ड पार्टी हेतु यूनिफार्म कुल लागत 28,000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., खेड़ा देवगढ़** में श्री रावत राम सीखी द्वारा 30,000 रुपये की लागत से प्याऊ का निर्माण करवाया गया। श्री शेशाराम सीखी से विद्यालय में रंग-रोगन हेतु 70,000 रुपये विद्यालय में खर्च की। **रा.उ.प्रा.वि. नं. 3, पम्प हाउस के पास सोजत नगर** को श्री मदन लाल किंजा से दो छत पंखे लागत 2,500 रुपये, श्री मदन लाल पंवार से कम्प्यूटर प्रिण्टर लागत 4,500 रुपये, आर.ओ.एस.बी.आई. शुद्धजल हेतु लागत 17,000 रुपये, नगर पालिका सोजत से वृक्षारोपण हेतु तारबन्दी लागत 22,000 रुपये जन सहयोग से शिक्षण सामग्री विद्यार्थी हेतु 7,500 रुपये, शकुन्तला मेहता से 20 स्वेटर लागत 2000 रुपये। **रा.बा.उ.प्रा.वि., पावा** को श्री लकमाराम दौलानी सुथार द्वारा 250 ट्रोली मिट्टी डालकर विद्यालय मैदान को समतल करवाया गया। लागत 80,000 रुपये, श्री भंवर लाल केशरीमल जी जैन द्वारा 40,000 रुपये की लागत से पानी का टंका मय हैडपम्प बनाकर दिया। श्री मांगीलाल गलाणी मेघवाल से एक डी.वी.डी. प्लेयर लागत 3000 रुपये, श्री खीमाराम मेघवाल से दो छत पंखे लागत 2000 रुपये। **रा.मा.वि., मोकमपुरा, तह. बाली** को श्रीमती कन्नु कंवर से लोहे की बैंच व डेस्क कक्षा 10 को प्रदान की गई लागत 20,000 रुपये। श्री विक्रम भाई पटेल द्वारा विद्यालय में टीन शेड के रंगमंच का निर्माण करवाया गया लागत 25,000 रुपये, श्री केशाजी तोलाजी मालवीय रानी द्वारा 1,25,000 रुपये की लागत से मुख्य प्रवेश द्वार मय फाटक का नव निर्माण करवाया गया। श्री घीसूलाल चौधरी (एडवोकेट) द्वारा कक्षा 6 से 9 तक के विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर (टेबल व स्टूल) लागत 50,000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., छोडा तह. देसूरी** को श्री भीख सिंह राजपुरोहित से 5,000 रुपये, पोमाराम जी मेघवाल से 3,500 रुपये, श्री ओटा राम मेघवाल से 3,500 रुपये अर्थात तीन भामाशाहों कुल 12,000 रुपये प्राप्त कर एक माइक सैट (आहुजा कम्पनी) विद्यालय को सप्रेम भेंट।

बाड़मेर

रा.मा.वि., आसाड़ी तह. गडरारोड़ को श्री हरिसिंह भाटी से एक एम्पलीफायर आहुजा 60 W, एक स्पीकर (बाल्टी), एक स्पीकर कालम 3' दो माइक आहूजा, एक माइक स्टैण्ड, यू.एस.बी. मेमौरी कार्ड 2 जी.बी. एक, लागत 12,000 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि., बादनूं को श्री भंवरलाल घिंटाला (पूर्व सरपंच) से 11 प्लास्टिक कुर्सियाँ लागत-5,500 रुपये, श्री परताराम सुथार से 11 छत पंखे लागत 11,000 रुपये, श्री रामलाल घिंटाला सरपंच प्रतिनिधि से 4 छत पंखे लागत 4000 रुपये श्री मनोहर लाल सुथार से छात्रों के लिए कॉपी, पैन, लागत 1000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., कालू** को हजारीराम सारस्वत से प्रिंटर, श्री शान्तिनाथ जोशी (जीव विज्ञान व्याख्याता) से 5 पंखे, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर से 2 पंखे प्राप्त हुए। **रा. श्री गोपालदास बजाज मा. वि., कोचरों का चौक** को श्री विजय कुमार गोलछा व्यवसायी द्वारा छः कुर्सियाँ एवं 2 पंखे (उषा) लागत 6655 रुपये, श्री आनन्द कुमार व्यास (से.नि.व.अ.) से शाला विकास हेतु 2,100 रुपये नकद, श्री भागीरथ मारू (से.नि.शा.शि.) से 2,100 रुपये नकद। **माध्य. विद्यालय एवं उ.प्रा. विद्यालय** स्टाफ द्वारा 5600 रु. लागत मूल्य का बड़ा परदा लगाया गया। **रा.मा.वि., मुक्ता प्रसाद नगर** को शाला स्टाफ सदस्य श्रीमती विमलेश शर्मा (व.अ.) श्री रविन्द्र सिंह (व.अ.), सुश्री भावना जोशी (व.अ.) द्वारा इस शाला को स्टील के बर्तन, थालियाँ सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., मोरखाना तह. नोरवा** को श्री दीपक पटावरी गोहारी से 7 छत पंखे लागत 7735 रुपये, श्री नवीन सुराणा बेंगलोर से एक वाटर कूलर लागत 25000 रुपये प्राप्त हुए।

प्रतिध्वनि

ज्ञान का माहात्म्य

वर्ष 2011 के प्रारम्भ में जब हम शिविरा के लिए किसी मोटो वाक्य की तलाश कर रहे थे, तब सम्पादक मण्डल के सतत मानसिक व्यायाम के उपरान्त जो वाक्य निकलकर आया, वह था, –न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते (गीता 4/38)। इस श्रुति वाक्य एवं उसकी शिविरा में ताजपोशी से शिविरा के प्रबुद्ध लेखक–पाठक बहुत हर्षित हुए थे। मुझे स्मरण है कि श्री चतरसिंह जी मेहता ने तो इस चयन व शिविरा में उसकी प्रस्तुति पर अपनी प्रतिक्रिया और आशीर्वाद स्वरूप न केवल लम्बी दूरभाष वार्ता ही की थी अपितु इसी विषय–शीर्षक पर एक बहुत सुन्दर आलेख भिजवाने की कृपा भी की । (देखिये शिविरा, मई–जून 2012 पृ.सं. 9 से 12) मैं बहुत विनम्रता व कृतज्ञता के साथ निवेदन कर रहा हूँ कि शिविरा के स्वाध्याय विशेषांक की कल्पना मेहताजी के इस आलेख से ही मिली थी जो न केवल साकार ही हुई वरन् शिविरा के लिए अतिशय यशकारी भी सिद्ध हुई । आज चतरसिंह जी हमारे मध्य नहीं है लेकिन 'विचार व विचारक कभी मरते नहीं' की अवधारणा के अनुसार वे चिर जिन्दा हैं। मैं उनकी स्मृति को नमन करता हूँ। बहरहाल बात ज्ञान की महिमा की करते हैं।

श्रीमद्भगवतगीता में ज्ञान और पदार्थ की तुलना करते हुए कहा गया है कि द्रवमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञानमय यज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ है क्योंकि यावन्मात्र सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञज्ज्ञानयज्ञ: परन्तप। सर्वं कर्मा खिलंपार्थज्ञाने परिसमाप्यते (गीता 4/33)। इसमें भी भारतीय चिन्तन धारा का एक ओर पहलू सामने आता है जो जड़–चेतन को गरिमा प्रदान करने वाला है। द्रव और ज्ञान दोनों के आगे यज्ञ लगाया है–द्रवमय यज्ञ और ज्ञानमय यज्ञ। द्रव और ज्ञान को यज्ञ से जोड़ने का गूढ़ अर्थ उन्हें महिमा प्रदान करता है। ज्ञान यज्ञ तो जचता है लेकिन द्रव यज्ञ...। यज्ञ का आशय पवित्रता व प्रामाणिकता तथा साधना व आराधना से है। इस प्रकार पदार्थ के साथ यज्ञ लगाने से उसकी पवित्रता एवं उसके प्रति हमारे आदर व आभार भाव में और वृद्धि हो जाती है। यज्ञ के अलावा एक और शब्द है–प्रसाद। उदर पूर्ति के लिए हम जो भी ग्रहण करते हैं, उसे प्रसाद, प्रभु का प्रसाद कह कर सम्मान प्रकट करते हैं। यही बात ज्ञान के साथ है।

जिन्होंने भी ज्ञान को गले लगाया है, ज्ञान के प्रति नतमस्तक हुए हैं, ज्ञान को स्वीकार–अंगीकार किया है, ज्ञान ने उन्हें गरिमा एवं महिमा प्रदान की है। ज्ञान न उम्र देखता है और न पद और आर्थिक व सामाजिक हैसियत। बस ज्ञान के प्रति निर्विकार रूप से समर्पित होने की बात है। ज्ञान ने ऐसे–ऐसे दृष्टान्त पैदा किए हैं, जिन्हें सुनकर सहज ही में विश्वास नहीं होता। ज्ञान के महत्व का एक ऐसा ही विरल उदाहरण पश्चिमी जर्मनी के सर वर्नर हाइजन बर्ग का है। वर्नर 19 वर्ष की अवस्था में एक विद्यालय में चौकीदारी का काम करते थे। अपने नौकरी सम्बन्धी कार्य से जब और जितनी फुर्सत मिलती, वर्नर पुस्तकें पढ़ने में व्यस्त रहते, पढ़ने का शौक जो था। इस दौरान उन्हें महान दर्शन शास्त्री प्लेटो की प्रसिद्ध पुस्तक टायमियस पढ़ने को मिल गई। इस पुस्तक में प्राचीन यूनानी दर्शन के बहुत ही विरल और प्रामाणिक सिद्धान्त दिए हुए थे। इस पुस्तक को पढ़ते–पढ़ते हाइजनबर्ग की भौतिकी में दिलचस्पी बढ़ी और उन्होंने इस क्षेत्र में कुछ विशेष करने का निश्चय किया। 'जहाँ चाह वहाँ राह' वाली बातहै। उन्हें पढ़ने के लिए विभिन्न विद्वानों की उल्लेखनीय पुस्तकें मिलने लगीं। निरन्तर स्वाध्याय जारी रहा। प्राप्त ज्ञान में अपना विवेक व अनुसंधान मिलाकर उन्होंने भौतिक शास्त्र की कई किताबें लिखीं।

पुस्तकें पढ़कर (ज्ञान ग्रहण) पुस्तकें लिखने (ज्ञान प्रसार) से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी। लोग उनसे सम्पर्क करने आने लगे और ज्ञान के बल पर महज 23 वर्ष की आयु में वे विश्व प्रसिद्ध प्रोफेसर मैक्स प्लांक के सहायक नियुक्त हो गए। यहाँ भी उनका रोल इतना अद्भुत रहा कि एक ही वर्ष में उन्हें कोपेन हेगन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक का पद मिल गया। पाँच वर्ष पहले एक स्कूल में सन्तरी की ड्यूटी करने वाला साधारण व्यक्ति अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त असाधारण विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र जैसे गरिष्ठ विषय का व्याख्याता बन गया। इसे कहते हैं ज्ञान की ताकत। लेकिन इसके लिए ज्ञान को मान प्रदान करना और स्वयं को खपाना जरूरी होता है। खैर ज्ञान की महिमा के अगले पड़ाव पर चलते हैं। चौबीस वर्ष में प्राध्यापक लगने वाले वर्नर हाइजन बर्ग उसके दो साल बाद 26 वर्ष की उम्र में लीपजिंग में प्रोफेसर बन गए। ज्ञान दर ज्ञान की यह यात्रा रुकने वाली नहीं थी। अतन्त: ज्ञान की महिमा का चरम आया । सारा विश्व उनकी ओर निहारने लगा। ज्ञान को गले लगाने वालों को एक दिन विश्व गले लगाता ही है। एक दशक के भौतिक विज्ञान के अध्ययन व अनुसंधान पर उन्हें 1932 नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के समय उनकी आयु केवल 32 वर्ष थी। विश्व में नोबल जैसे सर्वोच्च सम्मान हासिल करने के लिए यह आयु काफी छोटी है। और कदाचित सबसे कम आयु में नोबल प्राप्त करने वालों में सरवर्नर हाइजन बर्ग सबसे छोटे रहे हो। इसे कहते हैं ज्ञान की ताकत जो न पद देखता है और न उम्र। एक विद्यालय के सन्तरी का नोबल पुरस्कार पाना ज्ञान बल का सर्वोत्तम उदाहरण है।

ज्ञान की महिमा बताने के लिए कभी कहीं पढ़ी एक कविता के बोल याद आ रहे हैं जो यहां प्रस्तुत है–

जीवन पथ जटिल है ये/कालचक्र कठिन है ये/पग–पग पे भेदभाव है/ रक्त–रंजित पांव है/ जन्म से किसी के सर वंश की छांव है/ झूठ के रथ पे सवार डाकुओं का गाँव है/ किसी के पास है छल – कपट किसी को रूप का वरदान है/ ये सोच के मत बैठ जा कि ये विधि का विधान है।/ बज रहा मृदंग है/ ये कहता अंग–अंग है/ कि प्राण अभी शेष है/कि मान अभी शेष है/उठाले ज्ञान का धनुष/ एक कण भी और कुछ माँग मत भगवान से/ ज्ञान की कलम पे लगा दे तू विजय तिलक/काल के कपाल पे लिख दे तू ये गुलाल से/कि रोक सकता है कोई तो रोक के दिखा मुझे/हक छीनता आया है जो अब छीन के बता मुझे/ज्ञान के मंच पर सब एक समान है/ विधि के विधान पलट दे..../वो ब्रह्मास्त्र ज्ञानहै/तो आज से ये ठानले/ये बात गाँठ बाँध ले/कि कर्म के कुरुक्षेत्र में/ना रूप काम आता है ना झूठ काम आता है/ ना जाति काम आती है/ ना बाप का नाम काम आता है/ सिर्फ और सिर्फ / ज्ञान ही / आपको आपका हक दिलाता है!

–ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/अप्रैल 2014 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक विकास एस. भाले, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर–334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : विकास एस. भाले

शिविरा, अप्रैल–2014

चित्र समाचार

विशेष सेवा शिविर राष्ट्रीय सेवा योजना +2 स्तर

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

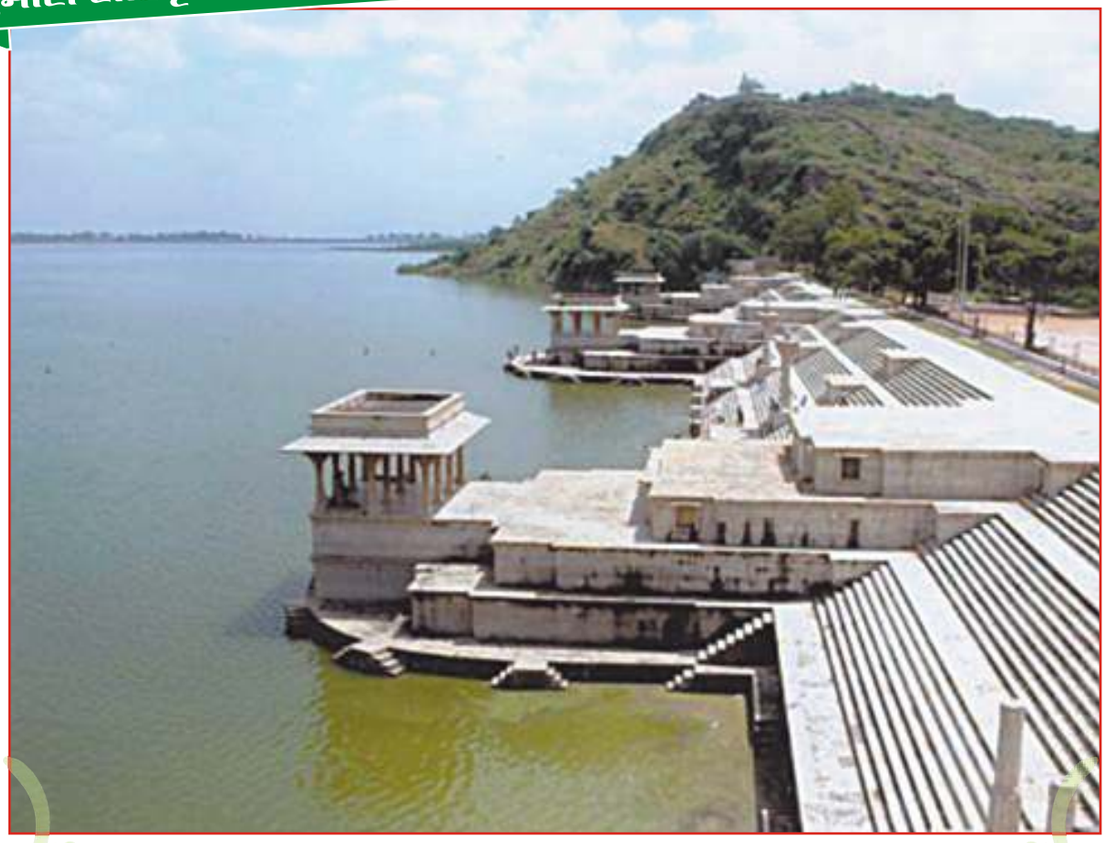

राजसमन्द झील

जिला मुख्यालय पर स्थित राजसमंद झील का मुख्य सेतु नौचौकी के नाम से जाना जाता है। महाराणा राजसिंह द्वारा 1676 में निर्मित यह स्थान संगमरमर के शिल्पग्राम कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां पर तीन छतरियों, चार तोरणद्वारों पर मार्बल पत्थर पर ऐसी नक्काशी की गई जो कागज कलम के फनकार के लिए भी मुमकिन नहीं है। यह मुख्य सेतु 999 फीट लम्बी एवं 99 फीट चौड़ी है। नौ-नौ इंच ऊँची नौ सीढ़ियों के बाद एक पाच बनाई गई है। 17वीं सदी के जनजीवन एवं संस्कृति की यहां खुदाई की गई है। यहां पर विश्व का सबसे बड़ा शिलाखण्ड काव्य राजप्रशस्ति उत्कीर्ण है।

सौजन्य : **दिनेश श्रीमाली,** अध्यापक, 152, अयोध्यापुरी, किशोर नगर, राजसमंद-313326 मो. 9414176733